Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री ॥

॥ हितशिक्षानो रास ॥

श्रावक रूषन दासजी विरचित.

॥ तेनी ॥

द्वितीयावृत्तिने समस्त श्रावकजनोने

अत्यंत उपयोगी जाणीने.

श्रावक भीमसिंह माणकें.

श्रीमुंबापुरीमां.

निर्णयसागरनामक मुद्रायंत्रमां मुद्रित करावी छे.

संवत् १९५२. सन १८९५.

आ ग्रंथने फरी छापवानो हक्क छपावनारें.

पोतानें स्वाधीन राख्यो छे.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ॐ नमः सिद्धम् ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रावक ऋषभदासजीविरचित हित शिक्षानो रास प्रारंभः ॥

कासमीर मुखमंडणी, भगवति ब्रह्मसुताय ॥ तुं
ा तुं भारती, तुं कविजननी माय ॥ १ ॥ तुं स
ा तुं शारदा, तुं ब्रह्माणी सार ॥ विदुषा माता
ही, तुझ गुणनो नहिं पार ॥२॥ हंसगामिनी तुं
वाघेश्वरी तुं होय ॥ देवि कुमारी तुं सही, तुझ
अवर न कोय ॥३॥ भाषा तुं ब्रह्मचारिणी, तुं
दे वाणी ॥ हंसवाहिनी तुं सही, गुण सघलानी
॥ ४ ॥ ब्रह्मवादिनी तुं सही, तुं माता मति
। तुं रमजे मुख माहरे, चिंत्युं काज करेह ॥५॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

। चिंत्युं काज करेशुं आज, तुझ नामें नीत

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सरियां काज ॥ तुझ नामें बुद्धि पामुं सार, ज्ञान
विना जीवित धिक्कार ॥ १ ॥ ते दारिद्री जगमां भ
ला, ज्ञान सहित दीसे गुणनिला ॥ अर्थ सहित ने
शास्त्र रहित, ते नर नावे म्हारे चित्त ॥२॥ ज्ञानी
कापडी आगल कर्यो, मूरख म्होटो भूषणभर्यो ॥
बहु आभरणें शोभे नहिं, ज्ञान भलो तो शोभे त
हीं ॥ ३ ॥ ज्ञानी नर सघले पूजाय, नरपति निज
नगरेंज मनाय ॥ ज्ञानी भलो नर जोहु कुरूप,
कोण जुवे कोयलनुं रूप ॥ ४ ॥ कोयल रूप स्वर म
धुरो जेह, तपस्वीरूप क्षमाज कहेह ॥ पतिव्रता ना
रीनुं रूप, कुरूपने विद्याज सुरूप ॥ ५ ॥ अधिकुं
रूप ते विद्या कही, गुप्त धन ते विद्या सही ॥ यश
सुखनी देनारी एह, वाटें बांधव सरिखी जेह ॥६॥
विद्या राजभवनें पूजाय, विद्याहीन अज पशुआ
गाय ॥ लक्ष्मी पण जुगतो शोभती, जो उपर बेठी
सरस्वती ॥ ७ ॥ नाणा उपर अक्षर नहिं, ते नाणुं
नवि चाले कहिं ॥ जिहां अक्षर तिहां महत्त्व ते बहु,
उत्तम अंगने पूजे सहु ॥ ८ ॥ तिण कारण अधिकी
सरस्वती, जेहथी गणधर हुआ यती ॥ आचारिज
[redacted] उवज्झाय, पंडित पद ते तुझथी थाय ॥ ९ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुगति तणी पदवी पण होय, ज्ञान समुं नहिं दूजूं कोय ॥ जेहथी सकल भेद भल लहे, स्वर्ग नरगनी वातो कहे ॥ १० ॥ कहे पृथिवी सायरनां मान, नदी कूंगर ने नगर निधान ॥ जीव अजीवना भांखे भेद, भांखे विवरी त्रण्ये वेद ॥ ११ ॥ जाणे पुण्य पापनी वात, साधु धर्म श्रावक अवदात ॥ भव्य अभव्य ज्ञानी उलखे, मूरख अणसमजु सहु भखे ॥ १२ ॥ तेणें ज्ञान अधिक कहेवाय, लहे शारद तणे पसाय ॥ वेद पुराण पिंगल तो थयुं, प्रथम नाम शारदनुं ग्रह्युं ॥१३॥ कवित काव्य ने गाथामांहि, भाषा विण नवि चाले क्यांहि ॥ आगम चरित्त रास ने भास, सचराच र जग ताहारो वास ॥१४॥ तुं पुत्री ब्रो ब्रह्मा तणी, ताहारी शोभा दीसे घणी ॥ सखरूं रूप सुकोमल अंग, तुं माता मुझ राखे रंग ॥१५॥ गुण ताहारा नवि लाधे पार, तुं करजे कविजननी सार ॥ आज हुउं हैडे उल्लास, नीपाउं हित शिक्षारास ॥ १६ ॥

॥ ढाल ॥

॥ कान्ह वजाडे वांसली ॥ ए देशी ॥

॥ राग आशावरी तथा सिंधूडो ॥

॥ रास रचुं रंगें करी, मांहे भाव भलेरा ॥ नीति

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शास्त्रना बोलडा, सिद्धांतज केरा ॥ १ ॥ चरित्रभेद कहुं भला, मांहे लौकिक बोलो ॥ सुणतां पंडित पणुं वधे, नर टले निटोलो ॥ २ ॥ वैदक शास्त्रमांहि सही, कविघटना केती ॥ ज्योतिष भेद कहेशुं सही, विधि श्रावक जेती ॥३॥ साधुपंथ कहुं सही, वली स्वपन विचारो ॥ विधियें विनति सांभलो, गुण वाधे सारो ॥ ४ ॥ विधि जाणे जाग्या तणी, नव पद किम गणियें ॥ नोकरवाली किसि कही, ते विधि पण सुणियें ॥ ५ ॥ केम पडिक्कमणुं कीजियें, पच्चकाण सुणीजें ॥ केम शंकाशल्य टालियें, केम वस्त्र धरीजें ॥ ६ ॥ किम जिनमंदिर जूहारियें, किम वंदन कीजें ॥ पूजाविधि सुणजो सहु, विधि भोजन सुणीजें ॥७॥ दान केही परें दीजीयें, केम वणज करीजें ॥ सभामांहे केम बेसीयें, जल किणिविध पीजें ॥८॥ दौरकर्म केही परें करे, सुण विधि अंघोलो ॥ शरम केही पेरें कीजियें, सुण विधि अबोलो ॥९॥ पुरुषें केही विध बोलवुं, किम भोग भजेवो ॥ सेवकनी विधि सांभलो, साहेब पण केहवो ॥ १० ॥ केही परें मारग हींमीयें, शुभ करणी केही ॥ गर्भ तणा भेदज सुणी, जीव चेतो तेही ॥ ११ ॥ वाणीही दंभ भेद

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज कहुं, बोल बीजा सुणजे ॥ श्रावक हितने कार णें, गुण पांत्रीश गुणजे ॥१२॥ सर्व गाथा ॥ ३३ ॥

॥ ढाल ॥

बे कर जोडी ताम रे,ब्रह्मा वीनवे ॥ ए देशी ॥

॥ श्रावक गुण पांत्रीशो रे, व्यवहार शुद्ध सही ॥ शिष्टाचार प्रशंसतो ए ॥१॥ कुलाचार एक धर्मो रे, अने अन्य गोत्रमां ॥ विवाह काज करे सही ए॥२॥ चोथो गुण अंग धार रे, पापथकी बीये ॥ देशाचार विधि आदरे ए ॥ ३ ॥ अवर्णवाद म बोल रे, अछतो ने छतो ॥ निश्चें राजादिक तणो ए ॥४॥ जो इ ज्ञलो पाडोश रे, गुप्तस्थानकें रहे ॥ बहु बारे घर वरजीयें ए ॥५॥ करिजें उत्तम संग रे, ए गुण आ ठमो ॥ मात पिता गुरु मानवा ए ॥६॥ उपद्रव के रां गाम रे, श्रावक परिहरे ॥ निंदनीय कारण तजे ए ॥७॥ आयपतने अनुसार रे, श्रावक व्यय करे ॥ वेष धरे चित्त जोइ करी ए ॥८॥ आठे बुद्धिनो जा ण रे, ए गुण चउदमो ॥ धर्मकथा नित्य सांज्ञले ए ॥९॥ ज्ञोजन करे सहि त्याज्य रे, पुरुष अजीरणें ॥ ए गुण जाणो शोलमो ए ॥ १० ॥ कालें ज्ञोजन ज्ञाव रे, शाता जोइ करी ॥ लोलपणे जाजुं नहिं ए

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ११ ॥ धर्म अर्थ ने कामो रे, त्रण वर्ग साधतो ॥ एक एक प्रति नवि हणे ए ॥ १२ ॥ अतिथि साधु जेह रे, दीन क्षीण प्रति वली ॥ उचित साचवे निर्मलुं ए ॥ १३ ॥ अनभिनिवेशी एह रे, परप्रभाव तणो ॥ प्रणाम नहिं वली जेहने ए ॥ १४ ॥ आदर करे अत्यंत रे, देखी गुणवंता ॥ पक्षपाति होय तेहनो ए ॥ १५ ॥ हींमे नहिंज अकाले रे, वरजे ते देशडो ॥ गमन करे नहिं त्यां वली ए ॥ १६ ॥ वलि पोतानो चिंती रे,कार्यारंभ करे ॥ ज्ञानवृद्धने पूजीयें ए ॥ १७ ॥ पच्चवीशमो गुण जोय रे, बंध स्त्रियादिक ॥ डंमे करे गुणवंतनो ए ॥१८॥ दीरघदृष्टि होय रे, आगलथी वली ॥ सर्व कामें आलोचतो ए ॥१९॥ कृत्याकृत्य विशेष रे, श्रावक जाणतो ॥ कीधो गुण नवि विसरे ए ॥ २० ॥ विनयादिक गुण जेह रे, कुललज्जा धरे ॥ देखी दीन दया धरे ए ॥ २१ ॥ सौम्याकार मुख सौम्य रे, कोमल वचनशुं ॥ पर उपकारी परगडो ए ॥२२॥ काम क्रोध मद लोभ रे, आनंद मानशुं ॥ अंतरंग वैरी तजे ए ॥ २३ ॥ ऊंते इंद्रिय पांच रे, ए गुण पांत्रीश ॥ सामान्य पणे में आणिया ए ॥ २४ ॥ गुण समकित विशेष रे, व्रत बा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रे वली ॥ आगमथी सुणि आणजो ए ॥ २५ ॥ सघ ला गुण संपूर रे, आणंदादिक ॥ सरखा ते नर जाणवा ए ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥ ५९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नर जे कडवां तुंबडां, गुणें करीने मीठ ॥ ते माणस केम विसरे, जेह तणा गुण दीठ ॥ १ ॥ ते अजाणयां माणसां, रूपें जे राचंत ॥ दीवा ज्योति पतंग जिम, पंख सहित दाजंत ॥ २ ॥ सखी सुगुण गुण माणसां, फरी न दीजें पूंठ ॥ जो धाइ मलीयें नहिं, तो बेठाथी ऊठ ॥३॥ वाला तुंहिं वरां सियो, गुण ढांक्या धूलेण ॥ जो गुण आणत पांदडे, तो न खणंत मूलेण ॥ ४ ॥ तेणें गुण अंगें आदरो, जांख्या जे पांत्रीश ॥ श्रावकधर्म योग्यज थइ, आ राधो निशि दिस ॥ ५ ॥ सर्वगाथा ॥ ६४ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ शुरू श्रावकनां लक्षण एह, किम दिनकरणी कहियें तेह ॥ किणि परें जागे पश्चिम राति, सुणजो पुरुष तजी परतांत ॥ १ ॥ श्रीश्रावकना विधिमां लह्युं, रत्नशेखर सूरीश्वर कह्युं ॥ निशासमय कार्यादिक जेह, मधुर स्वरेंज जगाडे तेह ॥ २ ॥ पण गाढे नर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बोले नहिं, खोंखारो पण वरज्यो सहि ॥ हुंकारो ने शब्द अत्यंत, ते न करे जे उत्तम जंत ॥ ३ ॥ कार ण सोय सुणो नर नारी, जागे रांधणी ने पाणिहारी ॥ व्यापारी पंथी कर्षणी, तस्कर चाले चोरी जणी ॥ ४ ॥ तिण कारण अणबोल्यो रही, पश्चिम रातें जागे सही ॥ अघोर निद्रायें नवि जागतो, दोय जवें ते दोहिलो थतो ॥५॥ धर्म अर्थ ने त्रीजो काम, नवि आराधे नरनां नाम ॥ ज्ञान ध्यान करजो वली जाप, जिम टले जन्म मरण संताप ॥ ६ ॥ ७० ॥

॥ श्लोक ॥

जन्मदुःखं जरादुःखं, मृत्युदुःखं पुनः पुनः ॥ सं सारसागरे दुःख,तस्माज्जागृत जागृत ॥ १ ॥ माता नास्ति पिता नास्ति,नास्ति भ्राता सहोदरः ॥ अर्थो नास्ति गृहं नास्ति, तस्माज्जागृत जागृत ॥ २ ॥ आ शा हि लोकान् बध्नाति, कर्मणा बहुचिंतया ॥ आयुः क्षयं न जानाति, तस्माज्जागृत जागृत ॥ ३ ॥ कामः क्रोधस्तथा लोभो, देहे तिष्ठंति तस्कराः ॥ ज्ञानखड्ग प्र हारेण, तस्माज्जागृत जागृत ॥४॥ सर्व गाथा ॥ ७४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राति गमाई सोवतें, दिवस गमाया खाय ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हीरा जेसो मनुष्य नव, कवडी बदले जाय ॥ १ ॥ काम क्रोध तृष्णा घणी, कंधल जाजो आहार ॥ मान घणुं निद्रा बहु, दुर्गति जावण हार ॥ २ ॥ निद्रा आलस परहरी, करजे तत्त्वविचार ॥ शुभध्यानें मन राखजे, श्रावक तुझ आचार ॥३॥ सर्वगाथा ॥७७॥

॥ ढाल ॥ ए छिंगी क्यां राखी ॥ ए देशी ॥

॥ इस्युं विचारीने उठीजें, निजनाकें मन दीजें ॥ वहेती होये ते गमनो पग, प्रथम भूमि ठवीजें हो ॥ १ ॥ भविका, शीख देउं तुम सारी ॥ ए आंकणी ॥ पवित्र ठामें उभो रहे बेसे, पूरव उत्तर सामो ॥ नमस्कार जपे मंत्रादिक, मूकी घरनां कामो हो ॥ २ ॥ भवि० ॥ निजमन ठाम राखवा गुणतो, नंदावर्त्त नवकारो ॥ कमलबंध शंखावर्त्त कहियें, अंगुलि अग्र अपारो हो ॥३॥ भवि०॥ स० ॥ ७० ॥

॥ दोहा ॥

॥ सार वचन श्रवणें सुणि, पहेरी अंबर सार ॥ ऋषभ कहे नित्य समरियें, आदिमंत्र नवकार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग प्रभाती ॥

॥ पंच परमेष्ठी नवकार जप जीवडा, जाप सम पुण्य नहिं अवर कोई ॥ ध्यान नवकार मन निश्चल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राखतां, तेहने मुक्तिनो माग होई ॥ तेहनो पंथ न हिं अवर कोइ ॥ पंच० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ आ दि अनादि नित्य सिद्धनुं समरवुं, जपत आयरिय उवझाय सारो ॥ सकल मुनि समरतां पुण्य पहोंचे बहु, जीव सुखीयो सदा होय ताहारो ॥ मान तुं बोल ए पुरुष महारो ॥ पंच० ॥ २ ॥ जपत अरि हंत जे हाथ माला विना, तेहने पुण्य ते सबल होई ॥ शंखमाला ग्रही जाप जिननो करे, सहस गुणुं फल तास जोइ ॥ कांय आलस करो पुरुष कोइ ॥ पंच०॥ ३ ॥ वलीअ विद्रुम ने रक्त रतांजली, क रिय माला कोइ हाथ जाले ॥ सहस गुणुं फल ते हने त्यां हुवे, फटिक रत्नें दस सहस आले ॥ जश घणो तेहनो जगमांहे चाले ॥ पंच० ॥ ४ ॥ माला मोती तणी लाख नवकार फल, चंदनमाला फल कोडी देही ॥ दश कोडी नवकार फल हेममाला कही, कमलबंधें कोडाकोडि लेही ॥ वात धरजे मन मांहि एही ॥ पंच० ॥ ५ ॥ नोकरवाली जे गुणें रु द्राक्षनी, असंख्य नोकार फल तेह आपे ॥ अनंत नोकार फल तेह नर पामता, पत्रजीवानी जे हाथ थापे ॥ पापनां पफल ते त्यां न व्यापे ॥ पंच० ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ६ ॥ पूरुंज फल तस होय जिनवर कहे, हाथ लेतां जिके सूत्रमाला ॥ मुक्ति नगरी तणो तेह राजा सही, प्रथम पामे रुद्धि रमणी बाला ॥ तेहनें पुर गज कोडि काला ॥ पंच० ॥ ७ ॥ आप अंगुष्ठ उ पर लेइ नित्य गुणे, जेह मुक्ति तणो पुरुष अर्थी ॥ तर्जनी एह उपचार पण उपरें, मध्यमा आपती धन धन धरथी ॥ तेह नवि नीकले आप घरथी ॥ पंच० ॥ ॥ ८ ॥ जेह अनामिका उपर लेई गुणे, तेहने घर नित्य शांति थाय ॥ कहीय कनिष्ठिका आकर्षण उ परें, वस्त गणनार साहामीज ध्याय ॥ शत्रु आवी नमे तेहना पाय ॥ पंच० ॥९॥ नर जिकोन कहे पातक तेह दहे, सागर सात दुःख सोय जाय ॥ आखुं जे पद गणे पंचास सागर जणे, दुःखने पाप ते दूर थाय ॥ दिवस थोडामांहे मुक्ति जाय ॥ पंच० ॥ १० ॥ पांचशें सागर पाप दुःख सहि गयुं, श्रीनवकार मुख पूर्ण जांख्यो ॥ अडशठ अक्षर पद नवे उच्चरे, मुक्त तरुफलरस तीणें चाख्यो ॥ जीव चिहुं गति तेणें जमत राख्यो ॥ पंच० ॥ ११ ॥ नवकरवालियें जेह नव पद जपे, तेहथी अधिकफल आनुपूर्वी ॥ त पह ७ मास संवत्सर कर्म दहे, तेटलुं कर्म खपे क

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हत कवी ॥ एह जिन शासनें वात कहेवी ॥ पंच० ॥ ॥ १२ ॥ पाटला उपर जेह नव पद जपे, आनुपूर्वी थकी अधिक जाणो ॥ अरिहंत बार गुण आठ तिम सिद्धना, गुणह छत्रीश आचारज वखाणो, गुण पचवीश उवझाय आणो, गुण सत्त्यावीश मुनि ना प्रमाणो, एटले एक शो आठ आणो ॥ भेद म णिका लही माल ताणो ॥ पंच० ॥ १३ ॥ नवकर वाली आ दग्ध माटी तणी, लाकडुं हाड ने जेह पाणो ॥ अल्प फल आपशे तेह माला गुणी, गुणत मूरख तजे तेह जाणो ॥ तेणें मानी अरिहंत आणो ॥ पंच० ॥ १४ ॥ अंगुलि अग्रने मेरु उल्लंघतां, शू न्यचित्तें फल अलप आपे ॥ शब्दथी मौन भलुं मौ नथी मन भलुं, जाप करतो भवदोर कापे ॥ ऋषभ कहे जीवने मुक्ति थापे ॥ पंच० ॥ १५ ॥ ए६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जाप जपंतो थाकतो, ध्यान धरे तेणी वार ॥ ध्यान थको थाको जदा, जपे जाप नवकार ॥ १ ॥ बेहु थकी थाको जदा, स्तोत्र गुणे तिण वार ॥ पूजा कोडी समुं वली, भांख्युं पुण्य अपार ॥ २ ॥ स्तोत्र कोडि सम जप कह्यो, जाप कोडि सम ध्यान ॥ ध्या

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नकोडि सम लय कह्यो, लहे नर केवल ज्ञान ॥३॥
जरत दुउं एम केवली, आठ पाट पण एम ॥ मरुदे
वा केवल लही, मुक्ति पहोंची केम ॥ ४ ॥ १०० ॥

॥ गाथा ॥

आसंबरो सेयंबरो वा,बुद्धो अहवा अन्नो वा ॥ सम
जाव जावि अप्पा, लहइ मुक्को न संदेहो ॥ १ ॥
कौरव हणे पांमव थुणे, राग द्वेष नहिं त्यांह ॥ दम
दंत मुनि सम जावना, जो ऋषि मंमलमांहे ॥
॥ २ ॥ क्रोध हणो उपशम धरी, मृदुयें मानज
दोष ॥ सरलपणें माया हणो, लोज करी संतोष
॥ ३ ॥ महीपति चक्री सुर हरि, सबल जोग सुर
सार ॥ पण समतारस सुख तणा, कोइ न पामे पार
॥४॥ मत्सर मूकी जिन जपे, धरे ध्यान एक ठाय ॥
जो मति आवे निर्मली, तो जीव मुक्तें जाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ मुक्ति तणा जे अर्थी होय, नवपद लय लगा
वे सोय ॥ पढें पुरुष पडिक्कमणुं करे, जोडी हाथ
व्रत अंगें धरे ॥ १ ॥ हाथ हथेली जिमणी जेह,
नर परजातें जोतो तेह ॥ मावो कर ते नारी जोय,
जाग्य तणी परीक्षा पण होय ॥ २ ॥ अणबोल्यो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चीवर नर धरे, मल मूत्र उत्तर दिसि करे ॥ रातें द
क्षिण सामो रही, शरीर शंका टाले सही ॥ ३ ॥
जस्म ठाण गोशाला जहिं, ठंमिल मातरुं न करे त
हिं ॥ राफो मल मूतरनां ठाम, तरुवर अग्नि जल
आराम ॥ ४ ॥ नदी मारग वरजे समशान, वरजे
स्त्रीलोचन जो शान ॥ पुरुष वडेरा नजरें नहिं, जाए प
ब्बर कुंगर जहिं ॥५॥ उतावलो नर त्यां नवि होय,
गुह्य ठाम माटीयें लोय ॥ जलें हाथ ते पहेलो धो
य, पछें देह पखाले सोय ॥ ६ ॥ थंमिल वेगलो प्रां
यें जाय, जली भूमि नहिं जीवह ठाय ॥ विवेकवि
लासमांहे कह्यो विचार, मौनें वस्त्र धरीज निहार ॥
॥ ७ ॥ वमी रहित नवि बेसे गाय, थंमिल जावुं
तेणें ठाय ॥ उंघनिर्युक्तिमांहे पण कह्युं, आगममांहे
मुनिवरने कह्युं ॥ ८ ॥ नीचां घर वसति बहु ज्यांह,
थंमिल मुनि नवि जाशे त्यांह ॥ जिहां उपधान उ
द्दाह नवि थाय, साधु थंमिलें त्यांकणे जाय ॥ ए॥
विषम भूमिका तृण ज्यां बहु, ते थानक नर टालो
सहु ॥ ठ ऋतु मही वर्ण पलटाय, तेणे थानकें थं
मिल नवि जाय ॥ १० ॥ जघन्यथकी अंगुल महि
चार, अचित्त हुइ जाणे निर्धार ॥ घर वाडी देउल ने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बिह्व, घोर रहित ते थानक जह्व ॥ ११ ॥ अति वे गला त्रसादिक जीव, बीज हरि त्यां नहिं जस दी व ॥ थंम्भिल जइ वोसिरावे सही, उपर रज घालेवी कही ॥ १२ ॥ संमूर्छिम मानव तिहां उपजे, चउद ठाम जाणे ते तजे ॥ अढी द्वीपमांहे ते होय, पन्नवणा पहिले पद जोय ॥ १३ ॥ अंतरमुहूर्त्त ते हनुं आय, अशुचि ठाम उपजतां जाय ॥ तेणें का रणें नर जयणा करो, जेम त्यां जइने नवि अवत रो ॥ १४ ॥ पढें बेसीयें शीतल ठाम, निजदेहज शातानें काम ॥ शरीरतणी जे रक्षा करे, तेर वानां नर ते परिहरे ॥ १५ ॥ आंसू जूख तरषने वाय, ढींक बगासां ने शंकाय ॥ वमन वीर्य श्वास ने श्रम, म रोकिश निद्रा खांसीनुं कर्म ॥१६॥ टाले नवि नी रोगी सार, चेते बोल मिले जब चार ॥ शुक्र ढींक मल मूत्र सम काल, तुज आयुखुं त्रूटयुंज निहाल ॥ १७ ॥ गाज न गाजे श्रवणें यदा, वीज न वाजे आखें तदा ॥ मूत्रधार खेंची न रहाय, त्यारें पूरुं थ युं तुझ आय ॥ १८ ॥ तव चेते नर समजी मर्म, वेलो थइ कांइ करजे धर्म ॥ सर्व बोल हैयामां धरे, ऋ षज कहे आलस परिहरे ॥ १९ ॥ सर्व गाथा ॥१४३॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ दोहा ॥

॥ मरणसमय चेत्यां नहिं, न कस्यो ऊंचो हाथ ॥ आराधना अणसण विना, चाल्यो जीव अनाथ ॥१॥ जिहां बे पोर जगामणुं, तिहां जीव संबल लेह ॥ जिहां चोराशी लख्ख भ्रमण, तिहां नर विलंब करेह ॥ २ ॥ जावजीव धन मेलियुं, कोइ न आवे साथ ॥ धन मूकीने चालियो, भूमि पड्या बेहु हाथ ॥ ३ ॥ पुहवी नित्य नवेरडी, पुरष पुराणा थाय ॥ वारें लऊ अप्पणे, नाटक नाची जाय ॥ ४ ॥ पुहवी रंग विरंगिणी, कदि नवि पूगी आश ॥ केता राय रमाडि या, केता गया निराश ॥ ५ ॥ सर्व गाथा ॥ १२ए ॥

॥ सोरठा दोहा ॥

॥ चाल्यो जाये साथ, को केने पडखे नहिं ॥ वा वरि लेजो हाथ, वारे वहेते आपणे ॥१॥ गइ सवा र वहेय, वार सबली आवे नहिं ॥ हियडा हाथ घसी स, बेठो वड कलियो थइ ॥ २ ॥ जब लगें रोग जरा नहिं, जब लगें इंद्रि परम्म ॥ दशवैकालिकमांहे कह्युं, तब लगें कीजें धर्म्म ॥ ३ ॥ जे दीजें कर अ प्पणे, ते लऊ परलोय ॥ दीजंतां धन संपजे, कूउ व हंतो जोय ॥ ४ ॥ वारे लऊ अप्पणे, वाहे जडफड

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हड्ड॥ बलि हरिचंदह रावणो, जोबन हुवे अवड्ड ॥ ५ ॥ हुंते मूरख चेत धन, म धरिश ढानुं रेक ॥ सोवन कोडी सतोरणी, रावण मूकी लंक ॥ ६ ॥ यौवन कवण न ठेतखुं, भूखें कवण न खड्ड ॥ लोजी कवण न वाहियो, कालें कवण न दड्ड ॥७ ॥१३६॥

॥ ढाल ॥ एणी पेरें राज्य करंत रे ॥ ए देशी ॥

॥ कालें सहुको दड्ड रे, तिणें नर चेतजे ॥ अंत समय वली अति घणुं ए ॥ १ ॥ कही शिखामण सार रे, मनमां धारजे ॥ निज देरासर जूहारजे ए ॥ २ ॥ पढें पुरुष सुण वात रे, जिनमंदिर जइ यें ॥ निसहि त्रण तिहां कहियें ए ॥३॥ मनह व चन जे आप रे, कायायें करी ॥ संसार काम निषेध जे ए ॥ ४ ॥ मुझ देहरानुं काम रे,करवुं ते सही ॥ अवर काज कल्पे नहिं ए ॥५॥ निसहि मध्य त्रण ठाम रे, मन वचनें करी ॥ देवल काम निषेधतो ए ॥६॥ करुं जिनप्रतिमा काज रे, पूजुं पूजावुं ॥ त्रि विध ध्यान निश्चल धरुं ए ॥ ७ ॥ पूजी निसही त्र ण्य रे, कहेतो स्तुति करे, पूजाऽव्य निषेधतो ए ॥ ८ ॥ एम जिन जुहारो आप रे, आपें मूकतो, फल नाणुं मूके सही ए ॥ ए ॥ आशातना उल्ल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ष्टी रे, टाले चउराशी ॥ जघन्यथकी दश टालियें ए ॥ १० ॥ पन्नही मुख तंबोल रे, जल नवि थूंकवुं ॥ मैथुन तिहां कणे वरजवुं ए ॥११॥ लहूडी नीति निषेध रे, वडी वेगें थकी ॥ नोजन सोवण जूवटूं ए ॥१२॥ आशातना एम टाली रे,चेइवंदन करे ॥ शाठ हाथ अलगो रही ए ॥१३॥ जघन्यथकी नव हाथ रे, अलग रही करी॥चैत्यवंदन करजे सही ए ॥१४॥

॥ दोहा ॥

॥ जिन पूजंतां पामियो, मुक्ति पुरीनो वास ॥ नागकेतु निर्मल थयो, पूगी मननी आश ॥ १ ॥ जिन जुहारि गुरु वंदतो, करतो कांइ पच्चरकाण ॥ गुरु सामो बेसी करी, नव रस सुणे वखाण ॥ २ ॥ करे वखाणज नव नवां, रागें कथन कलाय ॥ गाहा गाथा दूहडो,सुणतां पंम्कित थाय ॥३॥ श्लोक ॥ मुंम्के मुंम्के मतिर्भिन्ना, कूपे कूपे नवं पयः ॥ देशे देशे नवाचाराः, नवा वाणी मुखे मुखे ॥ ४ ॥ अक्षर मंत्र विना नहिं, धन विण महीय न होय ॥ मूल नहिं उंषध विना, डुर्लन आम्ना सोय ॥ ५ ॥ शास्त्रनाव पंम्कित लहे, न लहे मूढ अजाण ॥ चंद्रकांत अमृत जरे, न जरे बीजा पाषाण ॥ ६ ॥ नमरो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाणे रस विरस, जे सेवे वनराय ॥ गुण शुं जाणे बापडो, शूकां लक्कड खाय ॥ ७ ॥ सकल भेद पंक्ति त लहे,नव रस करे वखाण ॥ आगम चरित्र दोहा कहे, करवुं सकल प्रमाण ॥७॥ (सूत्रवृत्ति भाष्यज प्रमुख,पंचांगी परमाण ॥) सकल शास्त्र सुणवुं सही, आगम चरित्र सुसार ॥ एक गाथायें बूझियो, देखो क्षुल्लक कुमार ॥ ए ॥ हलुकर्मी समजे सही, करतो पातक रोध ॥ देवगिरि जग शिव वसे, वहुथी लहे प्र तिबोध ॥१०॥ जे पत्थर सरिखा नरा, ते नवि बूझे क्यांही ॥ मानी मूरख आगलें, धर्म न कहेवो प्राहि ॥ ११ ॥ अंधेकुं क्या आरसी, बहिरेकूं क्या बात ॥ जाण समजावे अजाणकुं, सामो होय संताप ॥१२॥ पापीने प्रतिबोधतां, पत पोतानी जाय ॥ टपलो सरा णे चढावतां, आरीसो नवि थाय ॥१३॥ (नंदीषेण मति निर्मलो, शोनी मन न सोहाय) रक्त दुष्ट मूर ख नरा, पूर्व व्युद्ग्रहियो जास ॥ धर्मयोगि चारे नहिं, कथा न कहेवी तास ॥१४॥ सर्व गाथा ॥१६४॥

॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ तेहने नवि देवो उपदेश, राग धरे गुण नहिं लवलेश ॥ सुभट एक परण्यो स्त्री दोय, सुरंगी अने कु

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गी जोय ॥ १ ॥ लागो राग कुरंगी साथ, सुरंगीशुं नवि करतो वात ॥ रात दिवस कुरंगीसंग, रमे पुरुष पो ताने रंग ॥२॥ एक दिवस कटकें गयो राय, साथें सुज्ञ टने लेइ जाय ॥ बारे वरसें परगट थाय, सेवक ज इने वधामणी खाय ॥ ३ ॥ नारी कुरंगी अतिहिं उ द्वंठ, खाधुं धन बहु मेली लंठ ॥ जोजननो तव करयो विचार, शुं रांधुं आव्यो जरतार ॥ ४ ॥ बुद्धि केलवी नरने कहे, नारी सुरंगी अलगी रहे ॥ वधामणी खाउं तिहां जई, तुऊ घर नर आवे ठे सहि ॥ ५ ॥ गयो पुरुष सुरंगी पास, बोल्यो त्यां मनने उल्लास ॥ वधामणी आव्यो जरतार, सामग्री कीजें शणगार ॥ ६ ॥ कहे सुरंगी धन्य अवतार, मुऊ जरतारें कीधी सार ॥ दीये वधामणी रांधे अन्न, नर उपर ठे निरतुं मन्न ॥ ७ ॥ सुज्ञट वही आव्यो तेणे वार, मानेती ज्यां कुरंगी नार ॥ सूती गोदडुं उंढी करी, बोले सामी जिम कूतरी ॥ ८ ॥ तुमसे वक आव्यो जे अहिं, मुऊने वलगो मूके नहिं ॥ शी लवती हुं तारी नारि, ठेली काढ्यो में घर बारि ॥ ए ॥ तुमें उतारयो मुऊशुं प्रेम, वधामणी प र मोकली केम ॥ हवे जाउं तुमें तेहने घरे, प

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रीक्षा लीधी में बहु परें ॥ १० ॥ चाल्यो पुरुष सुरं
गी जणी, मनमां चिंता कीधी घणी ॥ सुलक्षणी हु
हवाणी आज, जेहमां शील सत्य गुण लाज ॥११॥
एम चिंतवतो नर संचरे, जगति सुरंगी बहु परें करे
॥ लाडु खाजां बहु पकान्न, घणां शाकशुं पिरश्यां
धान ॥ १२ ॥ ढोले वींजणो राखे मन्न, पण नरने
नवि जावे अन्न ॥ कहे पुरुष त्यां जश्ने आव, कांइ
क कुरंगी हाथनुं लाव ॥ १३ ॥ सुरंगी जाये कुरंगी
घरे, मांमी मात कहे बहु परें ॥ पीरश्युं अन्न नवि
जावे किस्युं, तुम उपर मन तेहनुं वस्युं ॥ १४ ॥
कांश्क तुम घरनुं द्यो शाक, जगति तुमारी माने
लाख ॥ कपट कुरंगी त्यारें करे, वस्त्र राख लेइ
चूले धरे ॥ १५ ॥ आटो मरि पुट लींबु तणो,
बीजो संच कर्यो तिहां घणो ॥ कोडि वाटका मांहे
धरे, आपे ताम लेइ संचरे ॥ १६ ॥ आवी मू
क्यो सोवन थाल, मारे सरडका न जूए निहाल
॥ घणुं प्रशंसे बापडीना हाथ, कशी कहुं केलवणी
वात ॥ १७ ॥ एहवा रागना पुरुष जे होय, अ
वगुण गुण करी माने सोय ॥ तेहने धर्म न कहेवो
वली, रुषज सुणंतां मति निर्मली ॥ १८ ॥ १७२ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ढाल ॥ महीडुं वलोवे हो गोपी ॥ ए देशी ॥
॥ राग गोडी ॥ सुरसुंदरीकी चाल ॥

॥ मति निर्मल हो थाय, सुणो दुष्ट तणी कथाय ॥ क णबी जीरण हो जे हो, करे नली पटेली तेहो॥१॥ तेह ने अजीरण हो ठेली, ते उपर करेज पटेली ॥ कालें जीरण हो जाणुं,आव्युं दैव तणुं तस आणुं॥२॥नाख्यो भूमियें हो रूइ, सुत पूछे ठे साहामुं जुइ ॥ कोण दुःख तुमने हो तातो, ते भांखोजी अमने वातो ॥ ३ ॥ तुला तुमारी हो कीजें, कहोतो दान विप्रने दीजें ॥ दीजें गवरी हो दुःख हरणी, उतारे नदी वैतरणी ॥ ४ ॥ आपुं शय्या हो तलाई, पोढी सरगें सुख नर जाइ ॥ तव ते बोल्यो हो तातो, जीव सुपरें तो सहि जातो ॥ ५ ॥ अर्थ एटलो हो मुऊ सारो, पटेल अजीरणने जइ मारो ॥ सुत कहे शुं ए हो कामो, अंतें लीयो रामनो नामो ॥ ६ ॥ आपे जी रण हो उत्रो, नहीं मुऊ कुलनां तुमो पुत्रो ॥ न करो एतुं जो काजो, जीव सुखें जाये किम आजो ॥७॥ तात ते जूरे हो अपारो, सुत बोल्यो तेणी वारो ॥ एहनी करशुं हो घातो, तव बोल्यो वेगें तातो ॥८॥ केम हणेशो हो पुत्रो, प्रगट मारतां जाय घरसूत्रो ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मरे तुमारो हो बापो,लेइ खेतर जाजो आपो ॥ए॥ ए मुऊ करशे हो घायो,तुमो जालजो एहने धायो॥ लेजो पाबुं हो वयरो, मनमां न आणशो कांइ म हेरो ॥ १० ॥ पुत्रें दीधो हो बोलो, दुष्ट पापी मुउं निटोलो ॥ नवि त्यांहे रूवे हो कोयो, मूक्यो खेतर मां जइ सोयो ॥११॥ एक थांने हो अटकाव्यो, अ जीरण कणबी तिहां आव्यो ॥ दीठो पटेल हो ज्यारें, देखी वैर सांजखुं त्यारें ॥ १२ ॥ आघुं पाबुं हो जोइ, घाव करे न देखे कोई ॥ पड्यो भूमि हो मोसो, धाया पुत्र चारे धरी घोसो ॥ १३ ॥ झाली बांध्यो हो बंधे, लेई चाल्यो राउल संधे ॥ एणें मार्यो हो तातो, तव बोल्यो वलतो नाथो ॥ १४ ॥ आ व्यो तुमारे हो साथें, मारतां न वढे को तुम साथें ॥ झाली निकल्या हो चारे, तात वचनें तेहने मारे ॥१५॥ एहवो ते दुष्ट हो निरखो, पटेल जीरण कणबी सरखो ॥ धर्मकथा एहने नवि कहियें, रुषज कहे ए साचूं लहियें ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥ १९८ ॥

॥ चोपाईनी देशी ॥

॥लहियें मूढ नवि कहियें कथाय,विप्र एक काशीयें जाय ॥ घणो काल तिहां नाख्यो सहि, घर आव्यो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पठी गरढो धइ ॥ १ ॥ पाणी ग्रहण करे तव बंन्न, घर आणी नवयौवन रंन्न ॥ रूपवती ने चंचल घणुं, मन रंजे नरतारह तणुं ॥ २ ॥ कपट केलवे त्यां बां नणी, तिम तिम आनंद पामे धणी ॥ मूढ न जाणे स्त्रीनी वात, पीये नीर जेतुं स्त्री पात ॥ ३ ॥ २०१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जे शूरा जे पंमिता, जे होय बहु गंन्नीर ॥ नारी सबे नचाविया, जे होय बावन वीर ॥ १ ॥ स्त्री प्रायें सब वंकडी, मत को करो विश्वास ॥ माथे घट चडावी करी, पठे दीये गले पास ॥ २ ॥ जिस कारण शिर कट्टीयें, धरणी ढले जब देह ॥ रुधिर पिये ततक्षण महि, धिग धिग त्रिया सनेह ॥ ३ ॥ नारी मदन तलावडी, बूडो सब संसार ॥ काढण हारो को नहिं, बूड्यां बूंब न वार ॥४॥ वाघणी वग डामांहेली, जबहिं मिले तब खाय ॥ नारी वाघण वशें पड्यो, वसतियें फाडी खाय ॥ ५ ॥ कूड कपट नी कोथली, स्त्री होय नितुरी जाति ॥ देखी न शके रूअडुं, करे पियारी तांति ॥ ६ ॥ नारीदेह दीवो करयो, पुरुष पतंगी होय ॥ जग सघलो खूंची रह्यो, निकले विरलो कोय ॥ ७ ॥ नारी नहिं रे बापडा,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाणो विषनी वेलि ॥ जो सुख वंछे देहने, तो तस संगति मेल ॥ ८ ॥ भींतर विषनी वेलडी, बाहिर अमृत उदार॥ गुंजाफल सम जाणवा, स्त्रीना भाव विकार ॥९॥ जस घर महिला मंत्रणुं, दुर्जन केरी शीख॥सज्जन साथें रूषणुं,ए त्रणे मागे भीख॥१०॥

॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ मागे भीख ते आगल घणुं, माने कहेण जे असती तणुं ॥ बांभण मूढ भण्यो नहिं किस्युं,नारी वचन हियडामां वस्युं ॥१॥ एक दिवस परदेशी राय, यज्ञ मंकाव्यो तेणें ठाय ॥ बांभणने संभाख्यो तहिं, सुभट तेडवा आव्यो सहि ॥ २ ॥ बांभणने कहे चालो स्वामी, हरखें सहु तुमारे नामी ॥ काशीखंड ना वासी तुमो, तुमने तेडी जाशुं अमो ॥ ३॥ पंडे पूछी घरनी नार,तव सुंदरी बोली तिणि वार ॥ महारे तुमशुं घणो सनेह, तुम विण मुझ क्षण न रहे देह ॥ ४ ॥ सर्व गाथा ॥२१५॥

॥ दोहा ॥

॥ रक्तपणुं रयणां तणुं, ते पण कबहिक जाय ॥ तुमशुं बांधी प्रीतडी, पाछी किमहिं न थाय ॥ १ ॥ दीठे सज्जन आपणे, मन रलियायत थाय ॥ दिवसें

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विकसे कमल जिम, मन पंजरे न माय ॥ २ ॥ सा रुं फूल सेवंतरुं, जोमि पडयुं करमाय ॥ ते न कहि जें मानवी, जे प्रीति करीनें जाय ॥ ३ ॥ सखि हे तें केम विसरे, जे मनमांहे पइठ ॥ हियडाथी जो उतरे, तो सुपनांतर दीठ ॥ ४ ॥ स्वामि तुम चालो सही, मुजनें लीजें साथ ॥ दिवस दोहेलो करी निर्ग मुं, पण नवि जाये रात ॥ ५ ॥ बांजण कहे रे बा पडी, लावीश जाजुं धन्न ॥ सुख जर रहेशुं बेउ ज णां, पठे जिम ताहरुं मन्न ॥ ६ ॥ नारी कहे तुमें चालतां, कोण होय मुज सहाय ॥ बांजण कहे तुम सांजलो, गोविंद करे चिंताय ॥७॥ इस्युं कहीने संच ख्यो, घर रहि चंचल नार ॥ नव यौवनवय चालियो, केइ परें मन रहे ठार ॥८॥ स्त्री विण अंकुश नईत रुं, मंत्रि विहूणुं राज ॥ ए बहुकाल रहे नहिं, रुषन्न कहे न रहाज ॥ ए ॥ न रही शीलें बांजणी, करे गोविंदशुं जोग ॥ मनमें चिंते बेहु जणां, जलो मि ल्यो संयोग ॥ १० ॥ रूडां माणस कारणें, जो जग वैरी होय॥जमर न ठंमे केतकी, जो शिर कप्पे को य ॥ ११ ॥ विषहर वाडीने विषम घर, पंचाइण र खंति॥जो जम बेसे बारणे, रत्ता तोहु मिलंत ॥१२॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रंगें रातां बेहु मिले, गोराणी ने गात्र ॥ एणें अवसरें जरतारनी, हुइ आववा वात ॥ १३ ॥ नारी कहे नीशालीया, आपण बेहुनो रंग ॥ आव्यो पापी लोक रो, रंगमां करशे जंग ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥२२ए॥

॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ रंग मांहे करशे ते जंग, हुं नवि मूकुं ताहारो संग ॥ जो तुं कहेण अमारुं करे, तो सहु काम तु मारुं सरे ॥ १ ॥ बे मृतक तुमें लावो खरा, घर बाली जाशुं बे परां ॥ सुणी वचन उठ्यो गोविंद, बे मृतक ते लाव्यो रंद ॥ २ ॥ घरमांथी धन लीधुं सहु, पछें आवास सलगाड्युं बहु ॥ जणां दोय गयां नीकली, लोक कहे मूआं ए बली ॥ ३ ॥ पश्चात्ताप करे बहु परें, पछे बांजणो आव्यो घरे ॥ बली मुइ दीठी जब नार, रुदन करे सबलुं तेणें ठार ॥ ४ ॥ पछें गयो मृतकनें पास, हाथ फेरवे मन उल्लास ॥ कूटे रुदन करे कलकले, बापडी नारी निशालीयो बले ॥ ५ ॥ हवे कोइ तेहवो करुं उपाय, जिम ए बेहुने सद्गति थाय ॥ गयो हाड लेइ गंगा जणी, तिहां नारी दीठो निज धणी ॥ ६ ॥ निशालीयो जइ लाग्यो पाय, तुंतो स्वामी मात पिताय ॥ आ तुम

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नारी ने हुं गोविंद, तीरथ कीजें अति आनंद ॥७॥ नारी विनति कीधी घणी, पूरव कथा जांखो आप णी ॥ बांजण कहे जारे पापिणी, कोनी नारी ने कुण तुझ धणी ॥ ८ ॥ नारीने निशाल्लीयो इहां क्यांहि, बल्ली मुआं जे मुझ घरमांहि ॥ तुमो ढोव्यं तर मानव नहिं, शुं ढलवा मुझ अव्यां अहिं ॥९॥ घणां वचन गोविंदें कह्यां, मूरख बांजणे नवि सद्द ह्यां ॥ रुषज कहे एहवा नर जेह, धर्म योग्य नवि दीसे तेह ॥ १० ॥ सर्व गाथा ॥ २३९ ॥

॥ ढाल ॥ जड मोह्यो रे वीरवचन ॥

॥ रसें रे ॥ ए देशी ॥

राग आशावरी ॥ सिंधूडो ॥ तेहने धर्म न क हियें जाणजो रे, पूर्वव्युद्ग्रहियो रे जेह ॥ एक नर पतिनो बेटो आंधलो रे, जोलव्यो मंत्रियें तेह ॥१॥ तेहने धर्म न कहियें जाणजो रे ॥ ए आंकणी ॥ रूष ण पहेरे दिन दिन नवनवां रे ॥ जातें सबलो दातार ॥ जाचक जन रे आवी गुण स्तवे रे, देतां न लागे हो वार ॥ ते० ॥ २ ॥ नृपने आवी मंत्री तिहां ए म कहे रे, सांजलो महोटा हो राय ॥ दान सबल देतो तुम दीकरो रे, जंगार खाल्ली रे थाय ॥ते०॥३॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजा जांखे रे बुद्धि करो इसी रे, जिम सुत नवि रे डुहवाय ॥ याचक जन रे रहे तिहां मागता रे, जं मार जिम थिर थाय ॥ ते० ॥ ४ ॥ मंत्री आव्यो कुमर कने वली रे, बोल्यो विनय करेह ॥ आजरण आगलनां पहेरावियें रे, जो नवि दियो कुण तेह ॥ते० ॥ ५ ॥ लेवा कारण मलशे जाचका रे, तुमने जोल वे तेह ॥ भूषण लोहनां शुं राय पहेरियां रे, उता री नाखियें एह ॥ ते० ॥ ६ ॥ कुमर कहे सुण मंत्री माहरा रे,तुं दे पूर्व आजरण ॥ जेको मुजने जांखे ए लोहनां रे, मारुं तेहने लहे मरण ॥ ते० ॥ ७ ॥ त व परधान हो भूषण पहेरावियां रे, साव लोढानां जाण ॥ कुमर ते खेले बेठो बारणे रे, उलट अधि को ते आण ॥ ते० ॥ ८ ॥ एणें अवसरें सेवक त्यां आविया रे, जाचक नामे रे शीश ॥ आ श्यां आजरण पहेर्यां लोहनां रे,चढी नृप सबली ते रीश ॥ ते० ॥ ए ॥ मस्तकें मार्यो दंड ते लोहनो रे,फा ड्युं ताम ललाड ॥ महारां भूषण जांखे लोहनां रे, मलिया मूरख गाढ ॥ ते० ॥ १० ॥ एणे अव सर त्यां बीजा गोठिया रे, आव्या कुमरने गेह ॥ कां तुमें पहेर्यां आजरण लोहनां रे, कहेतां कूट्या

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेह ॥ते० ॥११॥ कुमर न माने केण तिहां कोइ तणुं रे, कहेतां वढवा रे धाय ॥ रुषन कहे जे कुबुद्धिने मळ्यो रे, सु पुरुष कुपुरुष थाय ॥ ते० ॥ १२ ॥३५१॥

॥ दोहा ॥

॥ वांका जमला पाधरा, सहे पराजव जूरि ॥ सिंहणी वांकी सरसमां, नाखीजें अति दूर ॥१॥ रे रे परवत बापडा, वांसह वास म देस ॥ आप घसा वे पर दहे, निगुणा काहु करेस ॥ २ ॥ मन मेलां मुख ऊजला, ते नर मुह म दीठ॥ पोत विहूणें लूग डे, आले गमे मजीठ ॥३॥ कुबुद्धि कडुउं लींबडो, मलियो आंबा साथ ॥ अंब धरे रंग लिंबनो, कोइ न झाले हाथ ॥ ४ ॥ कुमर मळ्यो कुबुद्धि तणे, पेठो कुमतज जरम ॥ सहुने जूठा जाणतो, मंत्री साचो परम ॥५॥ एम नर कुमतें घेरियो, पूर्वव्यु द्ग्रहियो जेह ॥ तेहने धर्म कहेवो नहिं, समझे पण नहिं तेह ॥ ६ ॥ सर्व गाथा ॥ ३५७ ॥

॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ लहे उपदेश तणा हजार, कहेतां नवि बूझेज लगार॥ ब्रह्मदत्त नवि पाम्यो पार, उदाइ रायनो मा रणहार ॥ १ ॥ चपल कान गज केरो जोय, राज

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लक्ष्मी ते एहवी होय ॥ अण भंजे करमें लींपाय ॥ पढें जीव अधोगति जाय ॥ २ ॥ रावण लखमण नी परें जोय, नवे नंद तेम हूरे होय ॥ जरासंध परमुख बहु थया, अणभंजी ते नरगें गया ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक अछतुं धन वंछता, लोहखरो जिम चोर॥ आ नव वेदन पामियो, परनवें दुःख अघोर ॥ १॥ एक दुःखी अणनोगवे, राजगृही नीखार॥ चांप्यो पछर पाडतां, पाम्यो नरक असार ॥ २ ॥ एक छतुं धन छंमतां, मुगति तणा नजनार ॥ जंबुस्वामि तणी पेरें, ते नर पामे पार ॥ ३ ॥ कुपुरुष सुपुरुषने मि ल्यो, निजमति आणे ठाम॥ छंम्युं देखी छंमतो, सु खियो प्रनवो स्वामि ॥४॥ मणि माणक मोती नर्यां, शालिनद्र घर सार॥ शिर ठाकुर जाणी करी, मूक्यो निज परिवार ॥ ५ ॥ शालिनद्र सुंदर सुखी, ताप खम्यो नवि जाय ॥ इस्ये इस्युं तप आदर्युं, नवि ठलखती माय ॥ ६ ॥ सर्वगाथा ॥ २६६ ॥

॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ जे सुपुरुष जग उत्तम होय, थोडे वचनें बूझे सोय ॥ जिम जगमांहि सनतकुमार, सुरवचनें

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लिये संयम नार ॥ १ ॥ महापापी नर हुंता जेह, धर्म प्रनावें बूऊया तेह ॥ सुसमाने दृष्टांतें जोय, पुत्र चिलाती धर्मी होय ॥ २ ॥ फल्युं फूल्युं तात घरसार, ते बंम्यो ढंढणा कुमार ॥ नूख तरश खमतो मन रली, बठे मासें हुवो केवली ॥ ३ ॥ हित उप देश महिमा जाणियो, इंद्रपणुं पाम्यो वाणियो ॥ कुंमल किरिट तणो धरनार, अलंकारनो न लहुं पार ॥ ४ ॥ हित उपदेश कह्याथी सहु, कार्त्तिक शेठ सुख पाम्यो बहु ॥ सुधर्म इंद्र हुउ ते सार, जेह नी रुद्धि तणो नहिं पार ॥ ५ ॥ इंद्र समी रिद्धि कहि जेह, नरत चक्रवर्त्ती पाम्यो तेह॥ मानव लोक नो स्वामी कह्यो, हित उपदेश कथाथी थयो ॥ ६ ॥ धर्मदेशना सुणतो जदा, संदेह अज्ञान टले नर तदा ॥ कर्में दृढ व्यसन मूकतो, मारग सूधो जाणे बतो ॥ ७ ॥ टले कषाय विनय पण नजे, संगति सार कुसंगति तजे ॥ समजे श्रावक मुनिवर धर्म, ते सुख पामे परगट परम ॥ ८ ॥ कुमारपाल थावच्चो सुणो, गुण हूउ परदेशी घणो ॥ श्वेतंबिका नगरीनो नाथ, हणी जीव न धोतो हाथ ॥ ए ॥ चित्र सारथि मंत्री जेह, सावत्थीयें आव्यो तेह ॥ केशी गणधर तिहां

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कणे मिल्यो, समकित लहि मिथ्यात्वी टल्यो॥१०॥ कहे चित्र तुमो गुरु सुणो, तुमने लाज होशे अति घणो ॥ श्वेतांबिकायें तुमें आवजो, परदेशीने प्रति बोधजो ॥ ११ ॥ केशी गणधर आव्या सही, चित्र सज्ञा थयो गहगही ॥ घोडा रमाडवानो मन थयो, नृपनें पूर्वे लेई गयो ॥ १२ ॥ केशीने दीठा जेटले, परदेशी बोल्यो तेटले ॥ गर्व धरिने गुरुने कहे, किस्युं मूढ वनमांहि रहे ॥ १३ ॥ कष्ट करे ठे फो गट यति, माता महारी श्राविका हती ॥ नास्तिक हूतो महारो बाप, नवि सद्दहतो पुण्यने पाप ॥ १४ ॥ में बेहूने मरतां कह्युं, कहेजो जावि जे तुम लह्युं ॥ कहेवा नहिं आव्यां ते दोय, जीव कुग ति नवि सरगह होय ॥ १५ ॥ आण्या चोर घणा में ग्रही, तिल तिल कटका कीधा सही ॥ जीव होय तो दीसे नहिं, एह वात साची नहिं कही ॥ १६ ॥ पुरुष जीवतो तोल्यो सही, मुआ पछी तोल्यो में ग्रही ॥ जारे हलुवो नहिं ते तंत, कहे जति तो किहां ठे जंत ॥ १७ ॥ घडुआमांहि नर घाल्यो ग्रही, मुख बीज्युं तेहनुं में सही ॥ तेह मुउने कीडा पड्या, जीव शोधंतां मुऊ नवि जड्या ॥ १८ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घडुए काणां सहि नवि थाय, कीटक जीवमांहें केम जाय ॥ मानव जीव ते किहां नीकळ्यो, नथी जीव संदेह मुझ टळ्यो ॥ १ए ॥ गुरु कहे सांजल नूपति सार, तुझ नारीशुं कस्यो व्यनिचार ॥ तें झाल्यो कहे मूको मुने, कहे महेर आवे कांइ तुने ॥ २० ॥ कहे राजा तस ढोडुं नाहिं, बोलवा लगे न पडखुं नहिं ॥ पूरो करुं नवि धोउं हाथ, एम नांखे परदेशी नाथ ॥ २१ ॥ नवि बूटे ते तुझ वश पड्यो, तिम नारक ते करमें नड्यो ॥ नरगमांहि थी बूटे नहिं, जे तुझ कहेवा आवे आहिं ॥ २२ ॥ केसर चंदन लेई करी, नलां धोतियां अंगें धरी ॥ जाये जिन पूजेवा जिस्ये, महत्तर पुरुष बोलावे तिस्ये ॥ २३ ॥ जेम तेथी नर नाठो जाय, तिम देवा को प्रगट न थाय ॥ जोयण पंचसय गंध उबले, केम माता तुझ आवी मले ॥ २४ ॥ अरणीमांहे अग्नि ढे सही, कटका करतां दीसे नहिं ॥ तिम कायामांहे जीव ढे बतो, रूप रहित ते नवि दीसतो ॥ २५ ॥ लेइ वायरे दहडो नस्यो, वली पढें ते गालो कस्यो ॥ तोलंतां ते सरखो नार, काया जीवनो एह विचार ॥ २६ ॥ नरने गढवामांहि उ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तार, शंख वजावे तेणें गार ॥ मुख बूखुं ने शब्द सु णाय, छिद्र न दीसे तेणें गाय ॥ २७ ॥ रूपी शब्द न दीगो जाय,वाजंतो सुणियें तिणें गाय ॥ जेह आतमा अछे अरूप, केम निकलतां दीसे रूप ॥२८॥ ते माटें तुं निश्चय जाण,छतो आतमा छे निरवाण ॥ ज्ञानी गु रुने वचनें वली, हुउं जैन मिथ्यामति टली ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मोढे माग्युं जे दिये, नापे राख्यो शरण ॥ पूछया उत्तर जे कहे, ए जग विरला त्रण ॥ १ ॥ बुद्धि शरीरें उपजे, दीधी केती होय ॥ जलमध्यें क छप वसे, तरी न जाणे सोय ॥ २ ॥ २९७ ॥

॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ बुद्धि लब्धि केशी ऋषि तणी, निरता उत्तर दे नृप जणी ॥ समझावीने श्रावक कीध, वली तेहने सुरपदवी दीध ॥ १ ॥ तेणें पुरुष त्रण जुवनें वडो, अमारी तणो वजडाव्यो पडो ॥ जेणें नरें ए कुजीवने परम्म, समजाव्यो साचो जिनधर्म ॥ २ ॥ समकित धर्मनो जे दातार, न करी शके पाछो प्रतिकार ॥ कोडि गुणो उपकार हजार, पाछो वाली न शके नि रधार ॥ ३ ॥ परदेशी करे भक्ति उदार, धन धन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केशी तुम अवतार ॥ माहामिथ्यात्वी पापें नस्यो, स
मजावीने श्रावक कस्यो ॥४॥ परदेशी संवरी थयो
जिस्ये, सूरिकंता लंपट थइ तिस्ये ॥ सुतने कहे मा
री ले राज, सुत बोल्यो नहिं महारुं काज ॥ ५ ॥
एक दिवसें पोषधव्रत धरे, वाहाणे पारणुं राजा क
रे ॥ सूरिकंता लंपट नार, विष नेल्युं नरने तिणें
ठार ॥ ६ ॥ धर्मतणो नृप समजे मर्म, कहे ए मुऊ
पोतानां कर्म ॥ तजी क्रोधने अणसण करे, सुरियान
देव हुउ ते शिरें ॥ ७ ॥ सूरिकंता तो सरपें रुशी,
जइ नरकमांहि ततक्षण वसी ॥ रुषन कहे नृप सुर
गति थाय, तेतो शास्त्र तणो महिमाय ॥ ८ ॥ मूर
ख धर्मकथा नवि कहे, कालनाव खेतर नवि लहे ॥
द्रव्य तणा नवि समऊे नाव, जिम अणसमजू बो
ले शाव ॥ ए ॥ उत्सर्ग पंथ न जाणे रति, जे अप
वाद न समजे यति ॥ उंगो अधिको मुखथी नखे,
शुद्ध उपदेश देई नवि शके ॥१०॥ गुरु कहे शिष्य
सांनलजे सोय, मूरख केम जतनावंत होय ॥ अगी
तारथ पासें रही आल, किस्युं चलावे गछ वृद्ध बा
ल ॥ ११ ॥ तथा सूत्रमांहे नांख्युं एह, प्रायछित
पाखें प्रायछित देह ॥ प्रायछित अतिमात्रायें दिये,तो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आशातन महोटी लिये ॥१२॥ आशातन करतां मि थ्यात, आशातना करे समकित घात ॥ आशातना करतां अपार, तव वाधे दीरघ संसार ॥१३॥ एहवा अगीतारथने दोष,नेष्टायें रह्या पातक पोष ॥ गीता रथ गछ मूढने देह,एहवा दोष तेहने लागेह ॥१४॥ अबहुश्रुत तपस्वी हुवे जेह, पंथ अजाणे विचरे ते ह ॥ ते अपराधना सहि बंध करे, करतो नवि जा णे नवि तरे ॥ १५ ॥ अल्प आगमनो जाण नहु तरे, कलेश लहे जो बहु तप करे ॥ सुंदर बुद्धि जा णी करे सोय, परमार्थें सखरुं नवि होय ॥ १६ ॥ श्रुतनुं रहस्य न लहे संसार, चाले केवल सूत्र अनु सार ॥ श्रुत उद्यम तस हाथे नवि जडे, तप अज्ञान विषे सहु पडे ॥ १७ ॥ पंखी पंथ देखाडे रेख, पण पंथनो नवि लह्यो विशेष ॥ ते पंथी नवि थाये सु खी, तिम मुनि एकले सूत्रें दुःखी ॥ १८ ॥ ३१५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सूत्रभेद समजे नहिं, चरित्र तणो नहिं जाण ॥ अवसर सज्ञा न उलखे, ते शुं करे वखाण ॥ १ ॥ योग्य अयोग्य जाणे नहिं, जिम तिम दिये उपदेश ॥ पंखिणी सुघरीनी परें, पामे तेह कलेश ॥ २ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्लोक ॥

॥ द्वौ हस्तौ द्वौ तु पादौ च, दृश्यते पुरुषाकृतिः॥ शीतकालहरं मूढ, गृहं किं न करोषि नो ॥ १ ॥ सूचीमुखी दुराचारि, रंके पंडितवादिनि ॥ असमर्थो गृहारंभे, सामर्थो गृहभंजने ॥ २ ॥ उपदेशो न दातव्यो, यादृशे तादृशे नरे ॥ पश्य वानर मूर्खेण, सुगृही निगृही कृता ॥ ३ ॥ रे जिह्वे कटु कस्मेहे, मधुरं किं न भाषसे ॥ मधुरं वद कल्याणि, लोकोयं मधुरप्रियः ॥ ४ ॥ सर्वगाथा ॥ ३२१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रिय बोली जाणे नहिं, मांमी न लिये वखाण ॥ मूकी पण जाणे नहिं, ताणे खाटल वाण ॥ ॥ १ ॥ बेसी पण जाणे नहिं, कुण साहामुं नवि जोत ॥ लाजे धूजे नवि लहे, राखे मुख मुहपत्ति ॥२॥ मुखें बांधि ते मुहपत्ति, हेठें पाठो धारि॥ अति हेठि दाढी थई, जोतर गले निवारि ॥३॥ एक कानें धज सम कही, खंभे पडेडी गाम ॥ केडें खोशी कोयली, नावे पुण्यने काम ॥ ४ ॥ इस्यो पुरुष आगल थइ,न करे मूढ वखाण ॥ पंडित नर दे देशना, बोले सत्य सुजाण ॥५ ॥ सर्वगाथा ॥ ३२६ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ सत्यवादी गुरु जगमां सार, कालिकाचारिय धन अवतार ॥ दत्तराय तुरंग मणि धणी, सत्य बो ल्युं जीवित अवगुणी ॥ १ ॥ यथास्थित परगट न वि जणे, बोध लाजने ते नर हणे ॥ जन्म जरा म रण उदधि, गयो सोय मरि जीव निबंधी ॥ २ ॥ उत्सूत्र बोलतो हुंतो जंत, बांधे चिकणां कर्म अनं त ॥ संसार वधारे चिहुं गति फरे, जे नर माया मिरषा करे ॥३॥ धर्मविषे माया नवि होय, कपट कला म म करजो कोय ॥ सदोष पररंजवा म बोल, प्रगट वचन अणलज्जें खोल ॥ ४ ॥ धर्ममांहि नर जोजो कथी, जवका उकोडा तिहां नथी ॥ कपट वंचना ढल रहि श्रेय, सुर नरने सरिखुंज कहेय ॥५॥ सहुने सरिखुं जांखे जेह, मुगतिपंथनो तारु तेह ॥ सजामांहि नर बोले जिस्युं, एकांत ठामें जांखे तिस्युं ॥ ६ ॥ लोक देखतां जेहवुं करे, एकांतिक तेहवुं आदरे ॥ सोवत जागत सरिखुं ध्यान, करे वखाण तस साचुं ज्ञान ॥ ७ ॥ हितशिक्षा ए रुषजें कही, धर्मकथा सांजलवी सही ॥ शक्ति होय तेहवुं आद रे, कस्या विना जग को नवि तरे ॥ ८ ॥ ३३४ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ढाल ॥ कायावाडी कारमी ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञान लह्युं अति निर्मलुं, न करे जे किरिया॥ ते संसारें पड्या रह्या, नवि दीसे सरिया ॥ १ ॥ ज्ञान लह्युं अति निर्मलुं ॥ ए आंकणी ॥ जोगतणी वा तें वली, कांइ स्वाद न आवे ॥ जाणे तरी पण नवि तरे, ते तो उंमो जावे ॥२॥ज्ञा०॥ ज्ञान किस्युं चारि त्र विना, किरिया करे तो वारु ॥ शुकलपक्षी तेहने कहुं, नवि आतम तारु ॥ ३ ॥ ज्ञा० ॥ समकित दृष्टि जावें वली, मिथ्यादृष्टि होय ॥ पण किरिया वा दी नरा, सिद्धि पामे सोय ॥ ४ ॥ ज्ञा० ॥ ज्ञानी तप किरिया करे, कर्मक्षय बहु गाले ॥ अज्ञानी तप बहु करे, अल्प पुण्य ते आले ॥ ५ ॥ ज्ञा० ॥ ता मल पूरणनी परें, घणुं कष्टज एहनुं ॥ इंद्रतणी प दवी लही, फल अलपज तेहनुं ॥ ६ ॥ ज्ञा० ॥ ज्ञा नी सद्दहणा विना, तप किरिया करतो ॥ अंगारमर्द कनी पेरें, संसारमां फरतो ॥ ७ ॥ ज्ञा० ॥ ज्ञान स मकित चारित्र जला, त्रणे मोक्षज होय ॥ जेम सं योगी रोटली, वली थाती जोय ॥ ८ ॥ ज्ञा० ॥ गुरुवाणी सुणी आदरे, ए त्रणे प्रकार ॥ श्रावक पूछे वांदतां, कहुं तेह प्रकार ॥ ए ॥ ज्ञा० ॥ इच्छकारी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुहराइ कहे, गइ सुख नरें राति ॥ तप संयमनी जा तरा, निर्वहो सुख नर जाति ॥१०॥ झा० ॥ शास्त्र मांहे कह्युं इस्युं, गुरु साहामा जाई ॥ नमस्कार करी पूछतां, जीव हलुउं थाई ॥ ११ ॥ झा० ॥ वांदतां विधिशुं साधुने, होय निर्मल आप॥चिरका लनुं संच्युं वली, शिथिल होवे पाप ॥ १२ ॥ झा० ॥ विशेष वंदन कहुं तुऊ हवे, सुणि धरजे विवेक ॥ इ छकारि नगवन् पसाउं करी, कहे गाथा एक ॥१३॥ झा०॥आलावो॥ "फासुएणं एसणिज्जेणं असणं पाणं खाइमं साइमेणं वस्त्र पडिग्गह कंबल पाय पुछणेणपाडि हारि पीढ फलग सिज्जा संथारएणं उंसह नेसज्जेणं नयवं अणुग्गहो कायवो ॥ " एवुं निमंत्रणुं नि त्य करे, वली नोतरुं देय ॥ रुषन दिये हित शी खडी, समजे जेह सुणेय ॥ १४ ॥ झा० ॥ ३४७ ॥

॥ ढाल ॥ जिम सहकारें कोयल टहुके ॥ ए देशी ॥

॥ निश्चल मन करि सुणवा आवे, नावें नेद न ला ते पावे, मूरख पणुं तस नीकले ए ॥ १ ॥ चउ टामांहेथी जारें आवे, कण एक बेसे जिहां मन नावे, वस्त्र पडें उतारियें ए ॥ २ ॥ घरणी जमणी शाखा पूजे, दरिऊपणुं जिम नरनुं धूजे, पूजी उंबरो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रेमशुं ए ॥ ३ ॥ जमणो पग घरमांहे मूके, उंबरो चांपे त्यां नवि थूंके, वदन पखाले प्रेमशुं ए ॥ ४ ॥

॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ मौनवंतने निश्चल वली, सज्ञा करे तर्जनि आंगुली ॥ पेढी दंत घसे नरराय, जिम बत्रीशे बलिया थाय ॥ १ ॥ पढें पुरुष ते दातण करे, कणज जी ल कणयरनुं सिरे ॥ वडलो खेर बीयो मालती, निं बे रोग रहे नहिं रति ॥ २ ॥ वांकुं गांठ नहिं ज्यां वली, जाडुं अस्युंज टची आंगुली ॥ द्वादश अंगुल दीरघ नाष, अनामिकाने टचि विच राख ॥ ३ ॥ जिमणे पासेंथी नर करे, पोलुं शूकुं दुर्गंध परिहरे ॥ व्यतिपातने आदित्य वार, ग्रहणसमय नहिं दातण सार ॥ ४ ॥ आठम नोम ने चतुर्दशी, पडवे दातण म करिश घसी ॥ अमास पूनम ने संक्रांति, दंत न घसवा तव एकांत ॥ ५ ॥ करे कोगला त्यारें बार, उंलि तणो कांइ नहिंज विचार ॥ कनक रजत तरु उंलें करे, वांकी कांटाली परिहरे ॥६॥ अंगुल दश नी ते राखतो, दातण करि आगल नाखतो ॥ पढे नाकमां नामे नीर, गजनी परें तस होय शरीर ॥७॥ मुख सुगंध ने नावे पली, इंद्रिय निर्मल तेहनां वली॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वर रूडो ने नहिं लीलरी, ए विधि श्रावक जूजे करी ॥ ८ ॥ सोजो स्वर बेठो नें सास, तृषावंत अ जीरण खास ॥ शिर हियडुं लोचन मुखपाक, दुःखें कान नहिं दातण नांख ॥ ए ॥ शूके मुखने तरडे होठ, दांत दुःखता दुःख जस मोट ॥ स्वरनो नंग थतो होय जिस्ये, तेल कोगला नांख्यां तिस्ये ॥१०॥ जीव रहितने निरवद्य गाम, दातण फासु कीजें ताम ॥ आदि कोगलो करतां जोय, गले बिंदु जल जोजन होय ॥ ११ ॥ जाण्या वृक्षनुं दातण करे, अति सुं हालुं हाथे धरे ॥ जली जूमि तणुं आदरी, प्रगमावे रस चावी करी ॥ १२ ॥ उजुं रहे तो सुखनुं हेतु, प डें पडे तो आहार संकेत ॥ एम दातणनो सुणी विचार, मल काढे नर तेणी वार ॥ १३ ॥ रोग ताव ने त्रीजी जरा, तेहने दातण नहिं शुजकरा ॥ जे पच्चरकाणी निर्मल बुद्धि, तेहने दातण पाखें शुद्धि ॥ १४ ॥ विष्णुजक्तिचंद्रोदय सार, तिहां दातणनो कह्यो विचार ॥ पडवे षष्ठी दशमी जोय, नवमी सं क्रांति नवि होय ॥ १५ ॥ तिम वली श्राद्ध अने उपवास, त्यारें वाखुं दातण तास ॥ शास्त्रवचन न वि माने गणे, घसे दांत साते कुल हणे ॥ १६ ॥ पूरव

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उत्तर पश्चिम जणी, शास्तरमांहे त्रण दिशि सुणी ॥ बेसी पुरुषने दातण करे, जीव जंतु पहेलुं मन धरे ॥ १७ ॥ एम जांख्यो दातणनो नेद, सुणो पुरुष क री उंघ निषेध ॥ ऋषज कवि कहे हित शिक्षाय, उंघे तेहनो अक्षर जाय ॥ १८ ॥ आंखें अंजन सु रमा तणुं, करतां निर्मल लोचन घणुं ॥ थाको जो जन उजागरो करी, ज्वरनो धणी मूके परहरी ॥ ॥ १ए ॥ मस्तक दाढी उंले नित्य, पूर्वदिशे त्यां धारे चित्त ॥ बे हाथे माथुं नवि खणे, खरड्यो हाथ न दे शिर तणे ॥ २० ॥ आरीसो नित्य जोजो जाण, मांगलिक महोटुं एधाण ॥ पूरव सामो रहिने जोय, मेल जख्यो म म निरखो सोय ॥ २१ ॥ निशा सम य नर जोवे कोय, आयु हीण होये नर सोय ॥ दातण करतां पण म म जोय, वदन पखाली निर खो सोय ॥२२॥ आरीसो जोतां जो कहिं, धड उ पर शिर दीसे नहिं ॥ पखवाडे तस मरणज होय, उत्तम नर चेते सहु कोय ॥ २३ ॥ अंबु तेल अने तर वार, तिहां मुख म जुउ नर ने नारि ॥ रुधिर मातरा मांहि नवि जोय, क्रोधीने आय घटतुं होय ॥२४॥ आरीसो शरशव दहिं घीय, बीलां फरसे पु

For Private and Personal Use Only

रुष सदीह ॥ गोरोचंद फलने माल, रूषत्नो देखे शुत्र वृद्ध बाल ॥ २५ ॥ सर्वगाथा ॥ ३७७ ॥

॥ ढाल ॥ कान वजाडे वांसली ॥ ए देशी ॥

॥ थइ हुशियार श्रमज करे, तन हलवुं थाय ॥ समरथ कार्य तणे विषे, दुःख खमी शकाय ॥ १ ॥ अग्नि वृद्धि होये घणी, वली जरा न आवे ॥ त्नोज न तास पचे सही, जे सबलुं खावे ॥ २ ॥ थूलपणुं तेहनुं टले, थिर होये मंसो ॥ वैरी तस चंपे नहिं, हुशीयारी हंसो ॥ ३ ॥ जे बलवंत रूडुं जमे, श्रम तेहने वारु ॥ वसंत शीयाले घणुं त्नलो, उद्यमें बल सारु ॥ ४ ॥ तेलें मर्दन नित्य कह्युं, जेणें जरा न आवे ॥ वायुविशेषें ते समे, थाक उतरी जावे ॥ ५ ॥ दृष्टि तेज वाधे घणुं, पुष्टो पण थाय ॥ मस्तक कानें चोलतो, विशेषथी वलि पाय ॥६॥ अन्नें गात्र रहे सहि, अन्नमांहि शुत्र रोटी ॥ आठ गुणुं बल अन्नथी, हुवे काया महोटी ॥७॥ आठ गुणुं बल रोटीथी, जे पीता दूधो ॥ आठ गुणुं पाके सही, एम घृतें सूधो ॥८॥ आठ गुणुं बल घीयथी, जे चोले तेलो ॥ रूप रंग वाधे सही, वृद्ध नाना ठेलो ॥ ए ॥ रोगीने मर्दन नहिं, बीजाने सारो ॥ पूर्व दिशि अंघोलतो,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दीपे काम अपारो ॥१०॥ अग्नि बल दीपे सहि, तेज कांति वधारे ॥ खरज थाक मेल उंघडी, तस नासे त्यारें ॥११॥ परसेवो बलगज टले, धन पाणी गाढुं ॥ सोय अंघोल करे सही, जे न करे टाढुं ॥ १२ ॥ गलाथकी हेवुं धूवे, वली ऊने नीरें ॥ निरतिवाई शिर धुवे, सुख होय शरीरें ॥ १३ ॥ बीज छठ आठम दिनें, दशमी नवि नाये ॥ तेरश चउदश पूनमें, अमासें नवि नाये ॥ १४ ॥ आदित्यें नावे नहिं, नर होवे तापो ॥ सोमें कांति थापे सही, मंगल मृत थापो ॥ १५ ॥ बुद्धें धन पामे सही, गुरु दरिद्री थाय ॥ शुक्रें दोजागी सही, शनि सिद्धिज थाय ॥ १६ ॥ नागा चिंतातुरा नरा, जइ आव्यो गाम ॥ वस्तु साथें जोजन करे, नाहण नहिं तस ठाम ॥ १७ ॥ अलंकार पहेरे नहिं, करे मंगल कामो ॥ सजनने वलावी वले, नाहण न करे तामो ॥ १८ ॥ तेलें नावुं जे कह्युं, तिहां जांखि नायो ॥ अंघोल नित्य करवी सही, तिहां न कही नायो ॥ १९ ॥ तेल न चोले नर वली, दिन होय जो पडवो ॥ तीरथ जूमि न चोलियें, वाख्या नर सरवो ॥ २० ॥ व्यतिपात दृष्टि नाहिं, वैधृत संक्रांतें ॥ तेल न चोले

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तिहां वली, वास्या एकांतें ॥ २१ ॥ नाहण तणा ने दज कह्या, नरहितने काज ॥ तेहनुं नाहण कह्युं खरुं, जीव राखे दाहाज ॥ २२ ॥ तडके बेसी अं घोलियें, जिहां जीव न होय ॥ पूंजी पात्र लिये सही, पहेलुं दृष्टि जोय ॥ २३ ॥ पडनालें बाजोठ विषे, बे सी अंघोले ॥ जीव जंतु जोई करी, जल तडके ढोले ॥ २४ ॥ जयणा विना नर नवि तरे, पुण्य करणी करतां ॥ जीव तणी रक्षा करे, ते दीसे तरता ॥ २५ ॥ ए अंघोल ने दज कह्या, करजो जीवरक्षा ॥ रुषन दास रंगें करी, भांखे हितशिक्षा ॥ २६ ॥ ४०३ ॥

॥ ढाल ॥ छठी भावना मन धरो ॥ए देशी ॥

॥ शिख देउं सुपुरुष नरा, जिनपूजा आदरजो रे ॥ वरजो रे ॥ उत्तर मुख चीवर नरा ए ॥ १ ॥ उत्तर मुखें पूजा कही, पूरवें वलि विशेषो रे ॥ देखो रे ॥ वामभाग देरासरु ए ॥ २ ॥ दोढ पा णि उंचुं सही, प्रतिमा पश्चिम सामी रे ॥ दक्षिण रे ॥ सनमुख होये ते खरुं ए ॥ ३ ॥ एम जिन पूजा कीजियें, चरण जानु कर चरचो रे ॥ अरचो रे ॥ जिन दक्षिणनो जे खंभो ए ॥ ४ ॥ मस्तकति लक करो सहि, तिलक भलुं कर भालें रे ॥ गालें रे ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिम नवि लागे बिंदुउं रे ॥ ५ ॥ कंठें हृदें उर पू
जियें, नवे तिलकनुं मानो रे ॥ गानो रे ॥ करतां पूजे
ते तरे ए ॥ ६ ॥ चंदन विण पूजा नहिं, वासपूजा
परजातें रे ॥ बहु जांतें रे ॥ मध्यान्हें पूजा कही
ए ॥ ७ ॥ दीप धूप संध्यासमय, दक्षिण अंगें दीवो
रे ॥ जीवो रे ॥ वाम जागें धूपज करो ए ॥ ८ ॥
फल सुंदर निवेदशुं, जिनआगल ते ढोए रे ॥ खोए
रे ॥ पातक अग्रपूजा करी ए ॥ ए ॥ दक्षिण अंग
बेसी करी, चेइवंदन पण कीजें रे ॥ जाविजें
रे ॥ त्रण अवस्था त्रण वारो ए ॥ १० ॥ त्रण्य
अवस्था जावजे, जिन छद्मअवस्था ज्यारें रे ॥ त्यारें
रे ॥ जन्म राजनी दीक्षा जली ए ॥११॥ प्रतिमा प
रिकरमां लिख्या, कलशा सुर आकारो रे ॥ धारो
रे ॥ जिनमस्तकें सुर गिरि जई ए ॥ १२ ॥ सुगंध
नीर लेई करी, कीजें देव पखालो रे ॥ बालो रे॥ ताम
अवस्था जावियें रे ॥ १३ ॥ कुसुमदाम सुर शिर
धरे, पुष्पें करी पूजीजें रे ॥ धारीजें रे ॥ ताम अव
स्था राजनी ए ॥ १४ ॥ मुख मस्तक केशज विना,
दीक्षा अवस्था एहु रे॥ जेहु रे॥ श्रमण हुवा जिणवर
वली ए ॥ १५ ॥ केवल अवस्था जावियें, प्रातिहार

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज वलि आगो रे ॥ वाटो रे ॥ चिंतवतां शुभ ते लहे ए ॥१६॥ दिव्यनादी निरखी करी, भावो भावना एहो रे ॥ जेहो रे ॥ सुखशाता अंगें लहो रे ॥ १७ ॥ सि द्ध अवस्था भावजे, पर्यंक आसन देखी रे ॥ पेखी रे ॥ काउस्सग्ग मुद्रा जिन तणी ए ॥ १८ ॥ भावो चेइ वंदन करतां, एह अवस्था सारो रे ॥ पारो रे ॥ भ वनो एम पामो सही ए ॥ १९ ॥ त्रण अवस्था ए कही, एणी पेरें पूजा कीजें रे ॥ तजीजें रे ॥ दोष स कल जाणी करी ए ॥ २० ॥ पुष्प पड्युं पाये अड्युं, मस्तकें चढियुं जेहो रे ॥ तेहो रे ॥ परिहरी कुव स्त्रें धस्युं ए ॥ २१ ॥ नाभिथकी हेठुं नहिं, मलिन लोकें फरस्युं रे ॥ फरस्युं रे ॥ अलगुं कीडे जे भख्युं ए ॥ २२ ॥ कुसुम पत्र नवि खंभियें, फल नवि खंभो कोयो रे ॥ जोजो रे ॥ पूजा राग तुमने वली ए ॥ ॥२३॥ खंभ्युं संध्युं धोतियुं, मेलुं मूक सछेदो रे ॥ छेदो रे ॥ पूजाविधि समजी करी ए ॥ २४ ॥ पद्मास न पूरी करी, जिननी पूजा कीजें रे ॥ धरीजें रे ॥ नेत्र नासिका उपरें ए ॥ २५ ॥ मौन करी मूखें बां धियें, आठपडो मुख कोशो रे ॥ रोषो रे ॥ रागतजी पूजा करो ए ॥ २६ ॥ एकवीश भेद पूजा तणा, स

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्तर भेद पण लहियें रे ॥ कहियें रे ॥ आठ पंच त्र
ण विधि भला ए ॥ २७ ॥ ए जिन पूजा विधि क
ह्यो, भावें जीव जब कीजें रे ॥ दहीजें रे ॥ पातक
रुपज कहे सही ए ॥ २८ ॥ सर्वगाथा ॥ ४३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जिनपूजा जस घर नहिं, नहिं पात्रें जिहां
दान ॥ ते केम पामे बापडो, विद्या रूप निधान ॥ १ ॥
तिलक नहिं केशर तणां, घृत दीवो नहिं ज्यांहि ॥
तास जनम लेखे नहिं, ते घर नहिं घरमांहि ॥२॥
शिख देउं तुम शुभ परें, जिनपूजा द्यो दान ॥ दानें
जिनपदवी सही, चक्री देव विमान ॥ ३ ॥ एक
दान तसु पंच भेद, विवरी कहुं विचार ॥ अभय सु
पात्र कीर्त्ति लही, उचित अनुकंपा सार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ सुरसुंदरी कहे शिर नामी ॥ ए देशी ॥

॥ राग मालवी गोडी ॥ अनुकंपा महोटुं दान, गज
आणी हैडे शान ॥ शशलो उगार्यो सार, धन्य धन्य
तुं मेघकुमार ॥ १ ॥ श्रेणिक तणो सुत होय, शुभ
संयम लेतो सोय ॥ पाम्यो अनुत्तर जेह विमान, प
सखुं अनुकंपा दान ॥ २ ॥ धन्य बाहुबली अव
तारो, उचितदान तणो दातारो ॥ हुउं भरतेसर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नर सार, दसारण नऊ लहे नव पार ॥३॥ हुउं संप्रति राजा जेह, प्रासाद वधामणी देह ॥ बाहडदे परमुख जोय, उचित दानें सुखीया होय ॥ ४ ॥ करो कीरति दाननी मोजो, सहु जंपे विक्रम नोजो ॥ जस कीरति जगमां रामो, सहु पगें पगें जंपे नामो ॥ ५ ॥ त्रण दान कह्यां वली एहो, सुख नोग तणे ते देहो ॥ चक्रवर्त्ती तणा नोग सारो, पामे प्रेमदा चउसठ हजारो ॥ ६ ॥ पात्रदान तणो देनारो, श्रेयांस तणे संनारो ॥ दान देती चंदनबालो, कीधां कर्म विकट विसरालो ॥७॥ शालिनऊ धन्नो धनसारो, नयसारें लह्यो नव पारो ॥ मूलदेव कयवन्नो जेह, धन्य तुं जंगमदाता तेह ॥ ८ ॥ जग महोटुं पात्रें दान, तुं थाजे तिहां सावधान ॥ पांच नूषणने आदरजे, आणंद हियामांहि धरजे ॥ ए ॥ आणी हर्ष तणां वली आंसु, अन्न पाणी दिये मुनिने फासू ॥ रोमांचित धरिय उल्लासो, मुखें मधुर वचननो वासो ॥ ॥ १० ॥ दान देतो घणुं अनुमोदे, तेहनुं दारिऊ मालुं घोदे ॥ नव तेणें मुगति जाय, केई त्रीजे नवें सिऊ थाय ॥ ११ ॥ पंथनो चाल्यो मुनि आयो, दान देतां नर तुं फाव्यो ॥ नगति कीधी गिलाणज

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केरी, तेणें टाली चिहुं गति फेरी ॥ १२ ॥ सिद्धांत तणो जाणनारो,प्रतिलाभी पामो भव पारो ॥ लोचकीधो मुनिवर माथे,प्रतिलाभी पुण्य ल्यो साथें ॥१३॥ महोटुं पारणा केरुं दानो,घरे होय अखूट निधानो॥ उत्तर वारणे दान तुं देजे,धननो लाहो एम लेजे ॥ ॥ १४ ॥ गुरु आवे उभो थाजे, गुरुनी साहामो पण जाजे ॥ दान देइ वोलावा जाय, तेहने पुण्य घणेरुं थाय ॥ १५ ॥ मूके बेसणुं करी परणामो, वली पूछे गुरुने कामो ॥ पछें भगति करीजें भलेरी, आशा पहोंचाडे मन केरी ॥ १६ ॥ नारकी सुर तिर्यंचमांहे, कांइ दान न देवुं प्राहे ॥ उत्तम भव मानव सारो, दान पाखें धिग् अवतारो ॥ १७ ॥ दान पाखें लहे दारिद्रो,होय अपजश ने बहु छिद्रो॥दुर्भागी दास ते थाय, घणुं परहाथे कूटाय ॥ १८ ॥ दीन दुःखियो रांको रोगी,परपराभव सहे ते योगी॥तेणे नर उत्तम चेतो, रखे रहेतो थोडुं देतो ॥ १९ ॥ न गयो धन लेई कोई, रावण ऋद्धि चाल्यो खोई॥ नवे नंदनें मुम्मण शेठ, करपी गयां नीचा नेठ ॥२०॥ जुवो करपीनी ए एंधाणी, सागरें सागर लीधो ताणी ॥ कपिला दासी मति मूंझाणी, थइ करपी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नर पटराणी ॥ २१ ॥ एम करपी चरित्र अनेको, सुणी पंमित धरियें विवेको ॥ उत्तमकुल लखमी पामी, रूप नूषणधारी हुउ स्वामी ॥ २२ ॥ नलां वस्त्र विचारी उंमो, दान पाखें दीसे नूंमो ॥ नवि शोन्ने ते निर्न्नागो, मद वारि विना जिम नागो ॥ २३ ॥ नाक लोचन विण मुख जेहवुं, करपीनुं दरिसण ते हवुं ॥ सुणी शास्त्र धरो नर शानो, दीयो पात्र मुनिनें दानो ॥२४॥ वली पांचमुं दान प्रकारयुं, नेम नाथें तेह अन्यास्युं ॥ ठंमी नोगने संयम लीधो, अनयदान पशुनें दीधो ॥ २५ ॥ मुनि मेतारज वलि जेह, पंखी कारण ठंमे देह ॥ मेघरथ महोटो माहा धीर, जेणें ठेद्युं आप शरीर ॥२६॥ धनसंगम साधु गुणवंत, नवि डुहवे परनो जंत ॥ नवि बोले पीले कापे, षट्कायने नवि संतापे ॥ २७ ॥ एम सूधो श्रावक जेह, घणुं ठेदन न करे तेह ॥ पीलण पीसण परजाल, न करे जीवनो प्रतिपाल ॥ २८ ॥ अनयदाननो दाता तेह, जीवने जगारे जेह ॥ एम पांचे दान में नास्यां, पुण्यवंत श्रावक अन्यास्यां ॥ ॥२९॥ कहे रुषन्न कवि हितशिक्षा, देजो साधु पु

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रुषने जिह्वा ॥ उचित सहुकोनुं साचववुं, अण दीधे नवि वावरवुं ॥ ३० ॥ सर्वगाथा ॥ ४६५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अवसर जोइ जोजन तणो, अतिथि पहोतो बार ॥ अण दीधे आपें जिम्यो, गयो ते बहु जव हार ॥ १ ॥ सखि ए बावन अक्षरा, जाण्यो इका वन कंत ॥ एक दद्दो बाहिर गयो, ते ऊखंत ऊखंत ॥ २ ॥ गज्ज विघोर तटक्क करी, कज्जल सम मुह वन्न ॥ एणी पेरें बप्पिहायकुं, जलो ते जलहर दिन्न ॥ ३ ॥ थोडुं दान सोहामणुं, जे दीजें हरषेण ॥ पछी कालविलंबडे, शुं कीजें सहसेण ॥४॥ दान संवत्सरी जिन दिये, मिले पुरुष करी आश ॥ जिन वरसे तिहां मेघ परें, कोइ न जाय निराश ॥५॥ तुंगिया नगरी श्रावक जला, अजंग डुवार कहाय ॥ उत्तम मध्यम सहु दिये,देतां नवि शंकाय ॥६॥ रायपसेणी केशी ऋषि, वार्यो परदेशी राय ॥ पहेलुं रमणिक थइ करी, पछें अरमणिक म थाय ॥ ७ ॥

॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ रमणिक पुरुष थायो सहु कोय, देई जमतां पुण्य सबलुं होय ॥ विवेक जलो हैयामां धरे, सकल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जीवनी चिंता करे ॥ १ ॥ श्रीदेव गुरु ठाकुरने नमे, ते न्हूख्यां पोतें नवि जमे ॥ मात पिता बालक गर्भिणी, ते न्हूख्यां न· जमे नर गुणी ॥२॥ रोगी सज्ञान गरढो बाल, ते न्हूख्यां नवि जमे कृपाल ॥ मानव ढोरनी चिंता करे, ग्रहण समय जोजन परिहरे ॥३॥ जमे पुरुष लागे जब न्हूख, ते नरने कहिं ना वे दुःख ॥ पहेला पहोरमांहे नवि जमे, बीजा पहोरने नवि निर्गमे ॥४॥ पहेला पहोरमांहे जे खाय, रसनी वृद्धि ते नरने थाय ॥ बीजो पहोर वटावा दे जोय, तो निश्चें बलनो क्षय होय ॥५॥ तरस्यो जिमे तो गोलो थाय, टाढुं जिमे तो होये वाय ॥ लघुशं कायें पाणी पिये, जगंदर रोग ते अंगें लिये ॥ ६ ॥ अजीर्णमांहे जोजन जेह, विष समान नर कहियें तेह ॥ वली परोढियो संध्याकाल, रातें जमे ते मूरख बाल ॥ ७ ॥ हाथ उपर लेई नवि खाय, हाथ न दीजें झाबे पाय ॥ तावड अगासुं ने अंधकार, झाड हेठें नहिं निरधार ॥ ८ ॥ नवि टाले तर्जनी आंगुली, मुख पग हाथ धूए नर वली ॥ न जमे नागो मेले चीवरें, लखमीवास न हिं ते घरे ॥९॥ जमे पुरुष थाली कर धरे, पहेलुं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वस्त्र न बांधे शिरें ॥ एक वस्त्रें न करे आहार, अप वित्र पणे जोजन नहिं सार ॥ १० ॥ लोलुपवे हो पग खासडां, तज अपलक्षण त्रण ए वडां ॥ केवल जूमि नहिं खाटले, पूर्व दिशि बेसे पाटले ॥११॥ उ त्तर साहामो आसण जले,पग नवि दीजें नर पाटले ॥ मेलो जूंको जांग्यो थाल, न जमे नर जे बुद्धि विशाल ॥१२॥ अत्यंत काकिण ने कूतरा,इण नजरें न जमे शुन्न नरा ॥ रुतुवंतीयें फरस्युं जेह, उत्तम आहार करे नहिं तेह ॥१३॥ पंखी श्वान ने त्रीजी गाय, तेहनुं सूंघ्युं नर नवि खाय ॥ जूख नजरें पापी पाडियुं, ते जोजन उत्तम छांमियुं (बीजी वार राध्युं ते नहिं) ॥ १४ ॥ जिमतां शब्द करे नहिं एक, गणे नोकार तो सबल विवेक ॥ समे ठामे बेठे सुख घणुं, कगमगतुं छंमो बेसणुं ॥ १५ ॥ अणबोल्यो ते जोजन करे, जक्ष सघलुं गंधी मुखें धरे ॥ कोनी दृष्टि न लागे वीर, जोजन आदें न पीये नीर ॥ १६ ॥ अग्नि मंद होये तुम तणी, मध्यें पीजें अमृत जणी ॥ छेडे विष स माणुं जाण, प्रधानपुरुष तणी ए वाणि ॥ १७ ॥ प्रथम वस्तु गली चीकणी, मध्यें खाटुं खारुं गुण जणी ॥ छेडे तीखां कडवां सार, एणी पेरे कीजें उ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्तम आहार ॥ १८ ॥ शूल रोग जेहने वली होय, विदल आहार करे नहिं सोय ॥ कुष्टि न जूवे मांसज जणी, घृत ढंमे जे ज्वरनो धणी ॥ १९ ॥ पुरुष घणुं नवि पीजें नीर, विषमुं आसन ढंमे वीर ॥ वडी लहुडी शंका परिहरो, दिवसें सूवुं ते म म करो ॥ २० ॥ रातें जागवुं एह कुयोग, ए षट् बोलें होये रोग ॥ गरणां चारे निद्राशुं तजे, जल तडको ने जोग नवि जजे ॥ ॥ २१ ॥ वर्षारतें नर खारुं खाय, शरद रतें घट पाणी पाय ॥ दूध जलुं हेमंत रतुमांहिं, तेहने रोग न थाये प्राहिं ॥ २२ ॥ शिशिर रतें कटु खाटुं खाय, वसंत रतें घृत जिमे नरराय ॥ ग्रीषम रतें गलियुं ते सार, रूप कांति बल वधे अपार ॥ २३ ॥ अति ऊनुं ते बलने हरे, अति टाढुं ते वायुने करे ॥ खाटुं खारुं तेज अवगणे, अति कामी जीवितने हणे ॥ ॥ २४ ॥ हेमंत रतें नर सेवे काम, शिशिरें तडको ते अभिराम ॥ वसंत रतें नर सेवे वन्न, ग्रीषम रतें जल पीये सुख तन्न ॥ २५ ॥ वर्षारतें घर सेवे शुद्ध, शरद रतें गवरीनुं दूध ॥ आषाढ मास श्रावण जव होय, तव पंथी म म चालो कोय ॥ २६ ॥ जादरवो ने आशो मास, तव पाणीनो करे अभ्यास ॥ कार्त्ति

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क मागशिर मासें जोय, मले दूध पीयो सहु कोय ॥२७॥ पोष मास माघ महिनो जिसें, जासक जिम वुं जांख्युं तसे ॥ फागुण चैत्रें क्रीडा करे, वैशाख जे ठमां निद्रा शिरें ॥ २८ ॥ ग्रीष्मरतें हरडे ते सार, सरखे गोले होय गुणकार ॥ वर्षारतें सैंधव मेलियें, शरद कालें साकर जेलियें ॥ २९ ॥ हेमंतरतें हरडे ने सूंठ, पछर जांजे मारे मूठ ॥ शिशिर रतें पीपरी शुं खाय, तेहने रोग कदिये न थाय ॥ ३० ॥ वसंत मांहे मध साथें कही, सकल रोग क्षय करती लही ॥ हरडेना गुण बहु कहेवाय, नहिं जननी तसु हर डे माय ॥ ३१ ॥ अतिसार नर जेहने होय, नवुं धान्य नर ठंमे सोय ॥ नेत्ररोगीयो मैथुन तजे, तुरत व्याहीनुं दूध नवि जजे ॥ ३२ ॥ उत्सुक पंथी एकदा जमे, निरवद्य आहार अचित्त मन गमे ॥ एवडुं न वि सचवाये जोय, नोकारसी तो कीजें दोय ॥ ३३ ॥ वालु करी करवुं पच्चखाण, चार आहार ठंमे नर जाण ॥ नवि चाले तो पाणी पिये, त्रण आहार ते मुख नवि दिये ॥३४॥ कांइक नित्य करे पच्चखाण, चउदे नियम संजारे जाण ॥ अनंतकाय अजक्ष्य नवि जमे, अनंत मरण करी ने जमे ॥ ३५ ॥ जाजूं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बोले जाजूं खाय, ते मानव सहि दोहिलो थाय ॥ चिंतायें जोजन नवि करे, अमृतनुं विष होये शिरें ॥ ३६ ॥ वमन करी जोजन नवि करे, मावे हाथे जमवुं परिहरे ॥ उंची थाली लेई नवि जमे, नबलुं आसन कोहोने गमे ॥३७॥ दक्षिण चार विदिशि परिहरे, पग उपरें पग नर नवि धरे ॥ जमतां बच बच नर नवि करे, वांकी जूमि पहेली परिहरे ॥३८॥ हाले नमे तो शुं बेसणुं, उठिंगतां मूरख होये घणुं ॥ मात स्त्रियादिकें रांध्युं जेह, प्रायें पुरुषें जमवुं तेह ॥ ३९ ॥ जिण पात्रें पापी करे आहार, सुपुरुष तिहां न जिमे निर्धार ॥ मूको ऋतुवंतीनो थाल, ऊनुं पात्र तजो ततकाल ॥ ४० ॥ अणजाणे पात्रे नवि खाय, चाटे सूंघे घोडो गाय ॥ पंखीयादिकेंजे बोट्यां होय, तिणें पात्र म म जिमशो कोय ॥४१॥ जमणी नासिका वहेतां जिमे, अति खारुं जोजन नि गमे ॥ अति खाटुं इंद्रियने हणे, अति ऊनुं बलहा नी जणे ॥४२॥ घणुं शाक नर नवि आदरे, शाक विना जोजन नवि करे ॥ घृत घणुं जिमे दूध ने कूर, जूनो जमतां वाधे नूर ॥ ४३ ॥ ओडे नहिं वाहन परिहरे, थोडी एक वेला श्रम नवि करे ॥ साधु परें

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जोजन आदरे, खोट वखाण तेहनुं नवि करे ॥ ४४ ॥ एक चलु लेई कोगलो, उतारे घटमांहि निर्मलो ॥ बाकी कोगला नाखे सही, पशु परें जल पीवुं नहीं ॥ ४५ ॥ पीतां पाणी रहे वली जेह, भूमि उपर लेइ नाखे तेह ॥ जल जाजुं नवि पीजें वीर, मोढे बोक न दीजें धीर ॥ ४६ ॥ जोजन करीने कहे नो कार, चैत्यवंदन ते जगमां सार ॥ जीनो हाथ बीजा हाथशुं, न घसे पाय अने मोहशुं ॥४७॥ फेरे हाथ ढीचण पर धरे, जोजन करी आलस परिहरे ॥ वडी नीति तजे तिणि वार, नवि बेसे उघाडे बार ॥ ४८॥ सनान शीद करे गुणवंतो, मावे पासें सूवे जागतो ॥ के सो मगलां जरवां ठेठ, जमी बेसतां वाधे पेट ॥ ४९॥ चित्तो सूतो बलखो थाय, मावे पासें वाधे आय ॥ शास्त्रेंथी जोजनविधि लही, रुषजें तुम हितशिक्षा कही ॥ ५० ॥ सर्वगाथा ॥ ५२३ ॥

॥ ढाल ॥ सांसो कीधो शामलिया ॥ ए देशी॥

॥ राग गोडी॥एणी परें आरोगीने उठयो, खावां फोफल पान ॥ अति बलवंत होये तंबोलें, वाले देहनो वान ॥ १ ॥ सबल सवीर्यने पित्तकर होये, शमे कफ ने वाय ॥ स्वर वाधे ने अगनी दीपे,मुख

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुंदर गंधाय ॥ २ ॥ मेल टले मुखनो नर निश्चें, पान संयोगें खाय ॥ सूतो उठी जे नर सेवे, देह कसुंबो थाय ॥ ३ ॥ जिम्या पढी खावां वली निश्चें, थाको पुरुष पण खाय ॥ वमन करीने वलि वावरे, सकल दोष तस जाय ॥ ४ ॥ वाग्युं होय ते पान परिहरे, आंख दूखती जास ॥ पान तजो मदिरा पान कीधे, विष खाधुं नहिं तास ॥ ५ ॥ चूनो काथो ने सोपारी, केसर कपूर लविंग ॥ चिनिकबाब पान एलची, खातां दीपे अंग ॥ ६ ॥ इत्यादिक सं योगें खाय, तस घर लखमी वास ॥ सुंदर महिला मंदिर महोटां, करे पुरुष बहु आश ॥ ७ ॥ अणी पाननी ते नवि खावी, सबल विरोधज थाय ॥ मध्यें लक्ष्मी हीणी कहीजें,बींट घटाडे आय ॥८॥ रात्रें मुखें तंबोल न राखे, तिलक अने सार फूल ॥ स्त्रीनी सेज तजे नर जेता, ते पंम्ति लहे मूल ॥ ए ॥ स्त्रीसं गें बल जाये नरनुं, तिलक घटाडे आय ॥ फूलें सर्प तणो संग होये, पानें प्रज्ञा जाय ॥ १० ॥ स मजे ते सुख पामे बहुलुं, वडो विवेक जगमांहि ॥ विवेक तेहज धर्म कहीजें, विवेक विना श्रेय क्यांहिं ॥ ११ ॥ आखां पान न खावां कहियें, शिरा काढ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वी साव ॥ रुषजदास हितशिक्षा जांखे, कहे तं बोलह जाव ॥ १२ ॥ सर्व गाथा ॥ ५३४ ॥

॥ ढाल ॥ पाट कुसुमजिन पूज्य परूपे ॥ ए देशी॥

॥ क्षौर तणा हवे जाव जणीजें, चोथे नहिं निर धार ॥ छठ आठम ने चउदश टालो, अमास नहिं दिन सार ॥ हो जविका, कीजें आप विवेको॥ए आंक णी ॥ १ ॥ त्रण्य वार तजे नर निश्चें, मंगल शनि रवि जेह ॥ संध्या रातें नख उतरावे, मूरख जगमां हिं तेह ॥ हो ज० ॥ २ ॥ विद्या आरंज उद्यव जारे, क्षौर तजे नर त्यारें ॥ यात्रा रणें परवें परिहरजे, पंमि त पुरुषा वारे ॥ हो ज० ॥ ३ ॥ पोताने हाथे नवि चूं टे, नवि वीणे वलि आप ॥ आप लूगडुं नवि मांजी जें, होय दारिद्रनो व्याप ॥ हो ज० ॥४॥ स्नान ते क रवुं एते गमे, जोग जज्यो जस विमन ॥ चिताधूम ने नख उतरावे, जेहनें जूंठुं स्वपन्न ॥ हो ज० ॥ ५ ॥ वृद्ध सेवालें ढांक्युं पाणी, त्यां नर नवि अंघोलो ॥ दोहिलो पेशी मेले नीरें, नर नाये ते जोलो ॥ हो ज० ॥ ६ ॥ टाढे नीरें अंघोली पुरुषा, न जिमे जनुं अन्न ॥ उने जलें टाढुं अन्न ठंमे, एम सुख पामे त न्न ॥ हो ज० ॥ ७॥ स्नान करी जस तन गंधाये, अने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जस दंत घसाये ॥ ठाया देहनी दीसे माठी, त्रीजे दिनें मृत थाय ॥ हो ज० ॥ ८ ॥ पग हश्युं पहेलुं शूकाये, तेने जिननुं शरण ॥ चेत पुरुष षट दिनमां आयु, एणें नेदें तुऊ मरण ॥ हो ज० ॥ ए ॥ हित शिक्षा कारण तुज कहेतो, कविजन रुषन दास ॥ वस्त्र वार जोइने पहेरे, जिम पहोंचे तुज आश ॥ ॥ हो ज० ॥ १० ॥ सर्व गाथा ॥ ५४४ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ आशा पहोंचे आप अपार, पहेरो वस्त्र जदा बुधवार ॥ गुरु शुकर चोथो आदित्त, वस्त्र उजलां पहेरो मित्त ॥ १ ॥ हस्त धनिष्ठा चित्रा स्वाति, तव चीवर पहेरो एकांत ॥ अश्विनी अनुराधा ने पुष्य, वस्त्र वावरो रेवति पुष्य ॥२॥ रेवती पुनर्वसु रोहिणी, वली विशाखा दिये रुऊि घणी ॥ आगल नांखी उत्तरा त्रण, वस्त्र वावरो उजले वर्ण ॥ ३ ॥ मंगल दिन रातां वावरे, पुनर्वसु ने पुष्य परिहरे ॥ उत्तरा त्रण्य अने रोहिणी, रातां वस्त्र न पहेरे गुणी ॥ ४ ॥ कनक प्रवालुं रातां वस्त्र, पहेरे धनिष्ठा जास पवित्र ॥ अश्विनी रेवती हस्तादिक पंच, वावरजे म करे खलखंच ॥ ५ ॥ विवाह ठाकुर आपे जदा, मुहूर्त्त

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वार न जोवुं तदा ॥ जूनुं मलिन फाटुं लूगडूं, त जीयें रूंमियुं जिहां थीगडुं ॥ ६ ॥ करे तेह लख मीनो नाश, होय अलछी घर तेहने दास ॥ न गमे नर नारी गुणवती, तेहनी दोलत नहीं दीपती ॥ ७ ॥ मूरख छे ते सांधे पाघडी, तेहने आपद आवे अडी ॥ म म सांधे कहियें फालियुं, जो तुनें वाहा लुं मालियुं ॥८॥ ए में जांख्यो वस्त्रविचार, सुण्यो सोय जे नहीं दातार ॥ कांइक काज गुरु कीजियें, थोडुंक मुनिवरनें दीजीयें ॥ ए ॥ मन डुर्बल तो एक मुहप त्ति,तेणें ताहरी होय शुज गति ॥ ए शीखामण दी धी रंक, वडा पुरुषनो श्यो छे अंक ॥ १० ॥ रख कं बल दीधा अतिसार, सोवन लख तस मूल अपार ॥ विविध वस्त्र तणा दातार, देई सफल करे अवतार ॥ ११ ॥ द्विज जुजंगम आगें हुउं, वस्त्रदाननो दाता जुउं ॥ शुजगतिनो जजनारो थयो, तेणें उपदेश में तुमने कह्यो ॥ १२ ॥ वस्त्रविचार में विवरी कह्यो, जे पण कांही शास्त्रमांहें लह्यो ॥ रुषजदास हितशिका कहे, पंमित ते साचुं सद्दहे ॥१३॥ सर्व गाथा ॥५५७॥ ॥ ढाल ॥ दिन दिन समरुं श्री महावीर ॥ ए देशी ॥ ॥ त्रिपदी ॥ पुरुष सद्दहे जे शास्त्र विचारो, पगवाह

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णहि धरजे सारो, त्रूटो नहिंज लगारो ॥ हो पुरषा, त्रूटो० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ त्रूटी चांच ने नहिं वाधरडी, खरा गया उंदरडा करडी, तलां गयां तस तरडी ॥ हो पु० ॥ तलां० ॥ २ ॥ पग अटके पहेरतां मूल, अबिर पेरें उमाडे धूल, पग विंधाये मूल ॥ हो पु० ॥ पग० ॥ ३ ॥ दरिद्र पुरुष तणी एंधाणी, तज सुपुरुष तुं हित जाणी, करे पग तणी ते हाणी ॥ चो पु० ॥ करे० ॥ ४ ॥ अजा चरम तणी ते जाली, पग परमाणे अतिहि सुंआली, परिहर जेह धाराली ॥ हो पु० ॥ परि० ॥ ५ ॥ जीवघात जेणें करी थाये, मोजा सोय म पहेरिश पाये, कर जंतु रक्षाय ॥ हो पु० ॥ कर० ॥ ६ ॥ जलि वारण हो धरो सदाई, तिण पगने वली रोग न थाई, लोचननें हित दाई ॥ हो पु० ॥ लोच० ॥ ७ ॥ (नीर अन्नने त्रीजां फल) वाणही वस्त्रने त्रीजां फूल, परनां फरस्यां न रहे मूल, म धरिश पुरुष अमूल ॥ हो पु० ॥ म ध० ॥ ॥ ८ ॥ ए हितशिक्षा रुषभें भांखी, समज्या पुरुष श्रमण रह्या राखी, मूरख रह्या नर बाकी ॥ हो पु० मूर० ॥ ए ॥ सर्व गाथा ॥ ५६६ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ मूरखपणुं सहि तेहनुं टले, जे पंडितने पासें मले ॥ आगमवेदी जेद ते कहे, नीति शास्त्रनो मर म ते लहे ॥ १ ॥ नीति शास्त्रें बोल्युं पवित्र, पुरुष धरे शिर उपर छत्र ॥ जल तडको नवि लागे वाय, शोजा तणुं वली कारण थाय ॥ २ ॥ पुरुषें दंम धरे वो हाथ, जाणुं मित्र मल्यो संघात ॥ श्रम कामें जय वारे तेह, हींमंता सुख आपे देह ॥ ३ ॥ वांको दंम न आवे काम, पहोलो परिहरवो तेणें गाम ॥ शल्यो खंम दह्यो शुं कीजियें, हाथे दंम ते नवि ली जियें ॥ ४ ॥ एक गंठी लाठी ते सार, करे बे गंठी वे ढ अपार ॥ लाज त्रिगंठी आपे अति, चार गंठी श रणे राखती ॥ ५ ॥ पंच गंठी लाठी जय हरे, षटगंठी जय उजो करे ॥ जे लाठीने गंठी सात, ग्रहतां रोग रहित दिन जात ॥ ६ ॥ आठ गंठी लाठी धन देह, नव गंठीथी जस वाधेह ॥ दश गंठीथी सीझे काज, एकादश गंठीयें राज ॥ ७ ॥ अंगुल चार धुरि मूकी करी, कापि लीये लाठी वन फरी ॥ आंगुल आठ उ पर वृद्धिवती, वनशूकी लाठी गुणवती ॥८॥ अस्यो दंम करमांहे धरे, राजा राजजवनें संचरे ॥ मंत्रीशर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मांरुवियें जाय, धन मेल्यानो करे उपाय ॥ ए ॥ वाणिक पुत्र वखारें जई, वणज करे पोतानो सही ॥ केता हाटें करे व्यापार, व्यवहार शुद्धिथी ऋद्धि अपार ॥ १० ॥ सर्वगाथा ॥ ५७६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ऋद्धि घणी तस मंदिरें, न करे अकर अन्याय ॥
राजजवनें बेसी करी, ऋद्धि मेले राजाय ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ ते गिरुआ जाई ते गिरुआ ॥ ए देशी ॥

राजा राजसनायें बेसे, मांरुवियें मंत्रीशो रे ॥ वाणिग हाट बेशी धन मेले, धर्म न छुःखे लेशो रे॥ ते नर महोटा ते नर महोटा, न्याय न करता खोटा रे॥ ते नर० ॥ ए आंकणी ॥१॥ धर्म विरुद्ध करे नाहिं राजा, मध्यस्थपणे करे न्यायो रे॥ दारिद्री व्यवहारी उपरें, दृष्टि सरिखी रायो रे ॥ ते नर० ॥ २ ॥ कल्याण कटकपुर केरो स्वामी, नाम यशोब्रह्म रायो रे ॥ नीतिघंट बांध्यो तेणें बहारें, करतो निरतो न्यायो रे ॥ ते नर० ॥ ३ ॥ राजतणी जे अछे अधिष्ठायिका, परीक्षा कारण आवे रे ॥ थइ सवच्छा गवरी रूपें, राजमार्गें जावे रे ॥ ते नर० ॥ ४ ॥ राजपुत्र रथ खेडे वेगें, चांपे वछनां पायो रे ॥ मूउं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाछडो छणमां त्यारें, रूपें ग्रसके गायो रे ॥ ते नर० ॥५॥ लोक कहे तुं जा राजा कने, न्याय करावा काजो रे ॥ जइ दरबारें घंट बजायो, सुणीयो ते महारा जो रे ॥ ॥ ते नर० ॥६॥ जोजन करतो राजा उठ्यो, दीठी आंगणे गाय रे ॥ पूछ्युं तुजने कोण पराजवे, वछ देखाड्यो राय रे ॥ ते नर० ॥ ७ ॥ राय कहे तव जोजन करशुं, मलशे जब रथवालो रे ॥ कुमर कहे वछ ए में मार्यो, दंरू दीउ जूपालो रे ॥ ते नर० ॥ ८ ॥ स्मृति शास्त्र तणो जे समजू, पूछ्यो दंरू विचारो रे ॥ राजयोग्य एक पुत्र तमारो, इयों कीजें तस प्रहारो रे ॥ ते नर० ॥ ए ॥ कोनो पुत्र ने राज्य ते कोनुं, न्याय करेवो महारे रे ॥ पांच बोल साधे ते राजा, जांखे नरपति त्यारें रे ॥ ते नर० ॥ १० ॥ डुष्टदमननें संत पोखवो, न्यायें जरे जंमारो रे ॥ पक्षपात करे नहिं कहेनो, करे मित्र नी सारो रे ॥ ते नर० ॥ ११ ॥ तेणें कारण मुज न्याय करेवो, पंमित बोल्या त्यारें रे ॥ जेणें काम कर्युं होय जेहवुं, तिम करी तेहने मारे रे ॥ ते नर० ॥१२॥ वेगें वहेल अणावे राजा, कुमर सुआ र्यो त्यांहिं रे ॥ राय कहे रथ खेडो वेगें, कोइ न

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हा कहे प्राहिं रे ॥ ते नर० ॥ १३ ॥ नृपतिने वा
र्यो परधानें, नरपति चित्त न आवे रे ॥ पोतें रथ
खेडियो पग उपरें, प्रगट देवांगना थावे रे ॥ ते नर०
॥१४॥ पुष्फवृष्टि करीने बोली, में कीधी परिक्षाय रे॥
पुत्रतणो मोह तें नवि राख्यो, तिहां पण कीधो न्याय
रे ॥ ते नर० ॥ १५ ॥ ऋषभ कहे नृप एहवा होय,
ते नरगें नवि जाय रे ॥ हितशिक्षा सुणतां ए मा
हारी,नृपति धर्मी थाय रे ॥ ते नर० ॥ १६ ॥५७३॥

॥ दोहा ॥

॥ खोटो न्याय करे नहिं, राम सरीखा राय ॥ वि
क्रम भोज ने भरतरी, जेहनो जश बोलाय ॥ १ ॥
कर्ण कृष्ण हरिचंद हुवो, नल नृप कुमर नरींद ॥
एहनां जश जगमां रह्यां, जब लग तरणि चंद ॥ २॥
जात चलंते दाडले, गयो रावण गढ रिद्ध ॥गया ते
पांचे पांडवा, रहि भला तणी प्रसिद्धि ॥ ३ ॥ नवे
नंद लोभी हुवा, खुए कलंकी नाम ॥ लूंटी धन कर
पी मूआ, शुं साध्युं तेणें काम ॥ ४ ॥ ५७७ ॥

॥ कुंडलियो ॥

॥ कृपण नंद देखी करी, बोल्यो पंडित राय
॥ नर फीटी ईसर थयो, ते पण मुज पसाय ॥ ईश

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नग्न ने जटाधारी, वस्त्रहीण नर पेखि ॥ थयो मुंड मलें करी नारी, उदरें शूल कपाल करी ॥ अर्धचंद्र दे पाठो करी, कवि कृपन कहे नर बोलियो, कृपण नंद देखी करी ॥१॥ नंद सरिखा नव लख गया, करी पाप अन्याय ॥ न्याय रीति राखे जिको, ते उत्तम विरलाय ॥ २ ॥ सर्वगाथा ॥ ५९९ ॥

॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ जे उत्तम जगमां परधान, ते न करे अन्याय विज्ञान ॥ निर्लोभी अति योगी सार, जेम चाणाक्यने अजय कुमार ॥ १ ॥ व्यवहार शुद्ध राखे वाणियो, ते धरमी जगमां जाणियो ॥ द्रव्य तणी पण चिंता करे, धर्म तजी ने नवि आदरे ॥ २ ॥ मन वचन कायायें करी, व्यवहार शुद्धि राखे मन धरी ॥ देश विरुद्ध वाणिग परिहरे, धन उपार्जवा उद्यम करे ॥ ३ ॥ विषम वस्तु जग शी कहेवाय, जे कांई द्रव्यें नवि थाय ॥ आजीविका नर करे अपार, तेहना भांख्या सात प्रकार ॥ ४ ॥ व्यापार विद्यायें धन होय, कर्षण पशुआं पाले कोय ॥ विज्ञान सेवा सातमी भीख, आजीविकानी ए तुज सीख ॥ ५ ॥ त्रणशें शाठ करियाणां सार, वणिग करे ते

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हना व्यापार ॥ काम नलुं नाहिं वैदह तणुं, लान बहु पण पातक घणुं ॥ ६ ॥ सुनट विग्रहने वंछे अति, सुनिक्ष सुख ते वांछे यति ॥ मानव मरण वांछे बांनणा, वैद्य रोग ते वांछे घणा ॥ ७ ॥ नक्ष्य अनक्ष्य उंशड ते दिये, दरिद्री रोगीनुं पण लिये ॥ द्वारिकां नगरी मांहे वसे, अनव्य धनंतरी नरगें खसे ॥ ८ ॥ एहवो वैद्य ते प्रायें होय, जीवानंद सरिखा ते कोय ॥ लोन रहित टाले रुषिरोग, बेहु नवें पामे सुख नोग ॥ ए ॥ कर्षण त्रिहुं नेदें आद रे, मेघकूप उनय जल नरे ॥ पशुआं गाय नेंश घर नरे, गज अश्वें आजीविका करे ॥ १० ॥ कर्षण पशुआंनो व्यापार, उचित नाहिं उत्तम नर सार ॥ विज्ञान कर्मनां जोय प्रकार, कर्मनेद कहुं तुऊ चार ॥ ११ ॥ बुद्धि करे ते उत्तम होय, हाथे करे ते मध्यम जोय ॥ अधमजीव पाए आदरे, अधमा धम ते माथे करे ॥ १२ ॥ बुद्धि कर्म उपर एक वात, चंपा नगरी छे विख्यात ॥ शेठ धनावो तिहां वाणियो, मदन पुत्र तेहनो जाणियो ॥ १३ ॥ बुद्धि हाट मंमाणुं ज्यांहि, मदन शेठ नर चाल्यो त्यांहि ॥ दाम पांच सहि आपी करी, बुद्धि एक हइयामां

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धरी ॥ १४ ॥ जिहां वढतां होय मानव दोय, पासें जइने तुं म म जोय ॥ इसी बुद्धि लेई घरें जाय, हस्यो पिता मंत्री तिणें गाय ॥ १५ ॥ पाठो वाळ्यो सुत तिहां गयो, बुद्धि आपी द्रव्य पाठो ग्रह्यो ॥ शीख दीधी तेणें गहगही, वढे दोय त्यां रहेजे सही ॥ १६ ॥ नृप तणा नर वढता दोय, मदन कुमर पासें जई जोय ॥ कह्यो सामियो तेह कुमार, नृप आगल तुं कहे विचार ॥ १७ ॥ सुनट दोइ जूजु आ जई, वढ्या पुरुष धनाने कही ॥ माहारुं रूडुं नवि बोलशे, मदन तणुं तो मरणज थशे ॥ १८ ॥ धनो गयो तव बुद्धिने हाट, बुद्धि एक आपो पुण्य माट ॥ दाम पांचशे पहेला लियो, सुनट साख उपर बुद्धि दियो ॥ १९ ॥ नृपना नर जब आवे घरे, तव बेटानें घहेलो करे ॥ इसी बुद्धि ले ईने फर्यो, घर आवी तसु घहेलो कर्यो ॥ २० ॥ नृपें तेड्यो जेणी वार, तव घहेलाई करे अपार ॥ मंत्रि नृप कहे गांमो एह, किसी सीख नर देशे तेह ॥ २१ ॥ विघन टळ्युं ने क्षेम कल्याण, बुद्धि जली जगमांहि प्रमाण ॥ एम पांचशे बुद्धि ग्रहे, एहने उत्तम नर सहु कहे ॥ २२ ॥ हाथे काम करे वा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णियो, मध्यम पुरुष तेहने जाणियो ॥ पायें काम करे ते दूत, ते जांख्यो नर अडमज पूत ॥ २३ ॥ माथे काम करे ते हमाल, खाये घेंच रोटी ने गाल ॥ अधमाधम ते पुरुष असार, काम भेद कह्या ए चार ॥ २४ ॥ आजीविका सेवायें करे, चार भेद ह इये नव धरे ॥ नरपति मुनिवर वाणिक तणी, इतर सेवा ते चोथी भणी ॥२५॥ नरपति सेवा दोहेली कही, वचन चाटुआं कहेवां सही ॥ सुखें न सुए बिहितो रहे, अंतें मार शरीरें सहे ॥ २६ ॥ उपाय न सूजे बीजो जोय, तो राजाने सेवे सोय ॥ गाह्या नृपनी करी चाकरी, दुर्बलकन्नो मूको परहरी ॥२७॥ कीधा गुणनो जे जग जाण, गुणी नरनां करियें वखाण ॥ क्रूर व्यसनी मूढ रोगीयो, लोभी अन्यायी मूकी दीयो ॥ २८ ॥ राजसभायें बेसे जाय, अति ढूक डे अबाधा थाय ॥ अति वेगलो जइ बेसे जेह, मा पण हीण नर कहियें तेह ॥ २९ ॥ आगल अन्य पुरुष नवि गमे, पाछल मुख जोवा मन रमे ॥ हारे बेसतां वानर थाय, बराबरी करतां अवज्ञा थाय ॥ ३० ॥ राजाने नवि कहियें काम, थाक्यो भूख्यो तरस्यो जाम ॥ शयन समे व्यग्राइ रीश, त्यारें

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काम न कहियें ईश ॥ ३१ ॥ एम सेवा कीजें महा राज, सेवा विण नवि चिंत्युं काज ॥ शत्रुंजय मंत्री उद्धार, नृपसेवा विण नहिं निरधार ॥ ३२ ॥ इक्षु क्षेत्र सायरनी लहेर, अहोनिश जो मन आणे महे र ॥ योनि पोषण तूसे राय, दारिद्र पणुं तो क्षण मां जाय ॥ ३३ ॥ प्रधान शेठ सेनापति पणुं, श्राव वक सूधो वरजे घणुं ॥ नवि चाले तो नहिं कोटवा ल, बंदीखाणो नहिं सिमपाल ॥ ३४ ॥ मंत्रिपणुं जे नर आदरे, वस्तुपाल मंत्री परें करे ॥ प्रासाद प्रतिमा पुण्य नहिं पार, जिनधर्म आराध्यो सार ॥ ३५ ॥ ए सेवानो कह्या विचार, आजीविका कर जे नर सार ॥ वली भेद कहुं सातमो, ऋषभ कहे निद्रा निर्गमो ॥ ३६ ॥ सर्वगाथा ॥ ६३५ ॥

॥ ढाल ॥ चेतन चेत रे प्राणीया ॥ ए देशी ॥

॥ भेद घणा छे भीखना, भीवर लहे धन धान्य रे ॥ आधारभूत यतितणो, दीये भूपति मान रे ॥ भेद घणा छे भीखना ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मित्र माता बंधव जिस्या, नामें देवता शीश रे ॥ पाय नमे गज केशरी, आपे परम जगीश रे ॥ भेद० ॥२॥ नमस्कार करुं भीखने, तहारुं भगवती नाम

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रे ॥ वस्तु लहियें अण उद्यमें, नित्य नवि अभिरा
म रे ॥ भेद० ॥३॥ गृहस्थने भीख भूंमी कही, ल
ज्जातणुं ते हेत रे ॥ ज्ञानक्रिया गुण तेहना, गयां ते
रण खेत रे ॥ भेद० ॥ ४ ॥ तिहां लगें रूप ने कुल
भलुं, विनय लक्षण जेय रे ॥ तप समता स्तुति
तिहां लगें, नथी कह्युं जब देय रे ॥ भेद० ॥ ५ ॥
दे कहेतां गुण पंच जे, तनथी नाशी जाय रे॥ बुद्धि
संतोष कीर्त्ति गइ, लाज गइ शोभाय रे ॥ भेद०
॥ ६ ॥ सर्वथी हलवुं तृणखलुं, तेहथी आकतूल
रे ॥ याचक हलवो तेहथी, सदा जे अनुकूल रे ॥
भेद० ॥ ७ ॥ वाय न उमाडे तेहथी, रखे याचतो
मोय रे॥ मरण देवुं बे सारिखुं, तेणें नासतो सोय
रे ॥ भेद० ॥ ८ ॥ रोगी परदेशें भमे, पर अन्ननुं
शरण रे ॥ परवशें वसतो जे वली, चारे जीवता
मरण रे ॥ भेद० ॥ ए ॥ भीख मागी नर जे जमे,
घणो तेहने आहार रे ॥ बहुअ निद्रा ने आलसु,
दारिद्रज अपार रे ॥ भेद० ॥ १० ॥ भीखारीना पा
त्रमां, घाले बलदियो मुख रे ॥ बूंब पाडे हाय हाय
करे,मुऊ ए घणुं डुःख रे ॥ भेद० ॥११॥ भीख जड
शे मुजने घणी, घांची बेल शी पेरें रे ॥ अकज्ज

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

थाशे एतो आजथी, गलियामांहि घेरी रे॥ नेद०॥१२॥
नीखें न होय व्यवहारीयो, पेट कबीय नराय रे॥ व
णज करंतां धन मिले, नलो एह उपाय रे ॥ नेद०
॥ १३ ॥ कमला कमलज वासिनी, कृसने हइये वा
स रे ॥ शोधंतां सोय जो नवि जडे, जडे वणज
तिहां खास रे ॥ नेद० ॥ १४ ॥ मानव धन देशका
लने, नाग्यने अनुजाय रे ॥ वणज करे माह्या वली,
सुखिया ते बहु थाय रे ॥ नेद० ॥१५॥ पन्नरे कर्मा
दाननो, करे नहिंज व्यापार रे ॥ नियमनी वस्तु वहो
रे सही, सूत्र वणज ते सार रे ॥ नेद० ॥१६॥ रजतने
हेम नाणां लिये, एवा जेह व्यापार रे ॥ पुरुष धर्मी
तेही आदरे, जिहां नहिं पाप लगार रे ॥ नेद० ॥
॥ १७ ॥ डुर्निक्ष काल होये जदा, गमे ते करे वणज
रे॥ तेल मीठुं तिल वेचतो, नीलां शाक ने कणज रे
॥ नेद० ॥ १८ ॥ पुरुष कुवणिजने जो करे, लाज
बीक धरंत रे ॥ ससुग थई निज निंदतो, मति साधु
करंत रे ॥ नेद० ॥१९॥ रुषन दिये हित शीखडी,
रहे जो मन गम रे ॥ वाणिज नूंडुं तुम म म
करो, करो पाप कोण काम रे ॥ नेद० ॥ २० ॥
सर्व गाथा ॥ ६५५ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ डाल ॥ गुरु गीतारथ मारग ॥ ए देशी ॥

॥ वणिज कुवणिज न कीजें रे भाई, लही न्याय मेलीजें ॥ हाड चरम रुपद ने चौपद, इस्या वणज नवि कीजें रे पुरुषा, मेलो हितशिक्षा सारी ॥ गामां लोहन विष वेचतां, दीधी मुक्तिनें बारी रे ॥ पुरुषा सु० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ वणिज व्यवहार करीजें रूडो, जिहां नहिं सबलज कूडो ॥ मदिरा मंस मध माखण वेची, पुरुष पातालें बूडो रे॥ पुरुषा० ॥ २ ॥ वणज व्यापारें माह्यो रे जोइयें, उंलखे सहु करियाणां ॥ सघली भाषा बोली जाणे, परखे सघलां नाणां रे ॥ पुरुषा० ॥ ३ ॥ हस्तसंज्ञा समजे रे सघली, करपल्लवी पण जाणे ॥ नेत्रपल्लवी जे नर समजे, वणज करी धन ताणे रे ॥ पुरुषा० ॥ ४ ॥ विण दीठे सतकार न दीजें, दीजें बहु देखंतां ॥ मित्र संघातें वणज न कीजें, शास्त्रें वरज्या एता रे ॥ पुरुषा० ॥ ५ ॥ शस्त्रधारीशुं वणज न कीजें, परिहर बांजण भाटो ॥ द्रव्यलिंगीशुं काम म पाडिश, ए नहिं वणजनी वाटो रे ॥ पुरुषा० ॥ ६ ॥ नट विट वेश्या ना जूवटिया, म करिश त्यां उधारो ॥ धर्म पोतानो नवि हेलाये, तेह वणज कर सारो रे ॥ पु

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रुषा० ॥ ७ ॥ कूडां काटलां तुं परिहरजे, देखीतो ए लाज्जो ॥ एकें वारे ए शिरनो जाशे, पाघडी साथें गा ज्जो रे ॥ पुरुषा० ॥ ८ ॥ कूडो करहो म म काढिश ज्जोला, सम म म खाइश जाजा ॥ परधूतीने पिंक जे ज्जरता, नहिं परमारथें ताजा रे ॥ पुरुषा० ॥ ए ॥ ब दली वस्तु म आपीश कोने, ठेतरतां ठेतराइश ॥ दूध बीलाडीनें दृष्टातें, मस्तक बुंधूं खाइश रे ॥ पुरुषा० ॥ ॥ १० ॥ देव गुरु धर्मतणा सम मूके, सत्यनो चीलो राखे ॥ ज्जेल संज्जेल म करजे वस्तें, कांइक साचुं ज्जांखे रे पुरुषा० ॥ ११ ॥ खोले माथुं मूक्युं जेणें, तेहशुं म करीश कूडुं ॥ धर्मि पुरुषने जो तुं वंचिश, तेणें लाज्जें तुं बूडो रे ॥ पुरुषा० ॥ १२ ॥ देव गुरु ठाकुर म म वंचो, चोथो पुरुष सुंहालो ॥ जो कोइ म रण विमासे हइये, नो म म वंचे बालो रे ॥ पुरुषा० ॥ १३ ॥ कोनो पद्ध म म थाइश ज्जाई, नवि पूरेवि सा खो ॥ सम म म खाजे धीज तजेजो, ए शीखामण रा खो रे ॥ पुरुषा० ॥ १४ ॥ वणज व्यहार कह्यो में मांकी, रूडे डुर्मति ठांकी ॥ ऋषज्ज कहे हितशिक्षा सुणे, तस शिर दैवनी कांकी रे ॥ पुरुषा० ॥१५॥६७०॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ढाल ॥ राम सीताने धीज करावे रे ॥ एदेशी ॥
हितशिक्षा नर लहे तेहो रे, एक ध्यानें सुणतां जे हो ॥ व्यवसायनो बूटको एहो रे, जीव मूकावे नर जेहो ॥ १ ॥ अन्न वस्त्र तणां दिये दानो रे, आपे घणा पुरुष निधानो ॥ नहिं करी पापें लिंपाय रे, थोडा कालमां लखमी जाय रे ॥ २ ॥ जे उत्तम नर नीरागो रे, लाभ खरचे चोथो भागो ॥ भाग दश मो खरचे कोयो रे, तेह पण मारग होयो ॥ ३ ॥ शेरी पुण्य तणी कांइ राखो रे, गलिया धूंसर म म नाखो ॥ व्यापारें पाप अनेको रे, कांइ आणो पुरुष विवेको ॥४॥ भमतो परदेशें जाय रे, व्यवहार शुद्धि कीसी नवि थाय ॥ गले जीवती माखी मूढो रे लख मोटां करतां कूडो रे ॥५॥ दाण चोरी करता जाये रे,हाथ गाय तणे गले वाहे ॥ लीये सोनुं दीये माटी इण वणजें सद्गति नाठी रे ॥ ६ ॥ हणे कुंथुआ .री कोडथो रे, घणा जीवनी आणे खोडो ॥ चो मासें वलीय विशेषो रे, तिहां हणतो जीव अनेको ॥ ७ ॥ एम वणिज तणां बहु पापो रे, सुणि चेती जें सुपुरुष आपो ॥ हितशिक्षा ऋषभें भांखी रे,मने धरजो निश्चें राखी ॥ ८ ॥ सर्वगाथा ॥ ६७८ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ढाल चोपाईनी देशी ॥

॥ एक मनां सुणजो नर सार, बुद्धि करीकरजो व्यापार ॥ निर्बुद्धि जे जोलो होय, वणज करी धन खोवे सोय ॥१॥ जीर्णदत्त सुत जोलो नाम, जोल पणानुं करतो काम ॥ अंत समय शिक्षा दिये बाप, पुत्र जणी समझावे आप ॥ २ ॥ दंत वाडी तुं सघले करे, द्रव्य देइ म म जाये घरे ॥ स्त्रीनें तुं बांधी मार जे, मिष्ट जोजन जखी सुखें सोवजे ॥ ३ ॥ गाम गाम घर करवुं घणे, दुःखमांहे गंगा कांठो खणे ॥ संदेह पडे पाडलीपुर जजे, सोमदत्त मित्र जणी पूबजे ॥ ४ ॥ सकल बोल तेणें आदस्या, अणसमजु तेणें अवला कस्या ॥ धन खूटथुंने निर्धन थयो, सोमदत्त मित्र तणे घर गयो ॥ ५ ॥ स्वामी तातें जे मुऊ कह्युं, ते करतां धन सघलुं गयुं ॥ गजदंतें कीधी में वाडी, सोय लोक गया सहु काढी ॥ ६ ॥ द्रव्य आपी माग्या विण गई, स्त्री बांधी मारी नवि रही मीठे खाधे रोग अत्यंत, सूते काम सहु विणसंत॥७॥ गाम गाम घर लोकें ग्रह्यां, गंगाना तट में नवि लह्यां ॥ बुद्धिहीण खोया में दाम, धन विण पूजा न लहे राम ॥ ७ ॥ सर्वगाथा ॥ ६७६ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ दोहा ॥

॥ तेहज राम ते तापसा, तेहज आ आश्रम॥हव णां आदर बहु करे, पहेलां नाठो केम ॥ १ ॥ दोल त देखी जग नमे, करे कह्या विण काम ॥ तिण का रण ऋद्धि मेलियें, सीताना पति राम ॥२॥ ऋद्धियें पूजा पामियें, धन खाधे गुण जाय ॥ द्रव्य विहूणां मानवी,मृतक सम तोलाय ॥३॥ गिरिजाकंत[1] तणुं आ भरण, तस रिपु स्वामी जेह ॥ तस रामा जस घर नहिं, खरो विगूतो तेह ॥४॥ दो जिह्वा गति वांकडी, तस रिपु स्वामी नारी ॥ तिण नारें जे परिहर्या,भूल्या भ मे संसार ॥ ५ ॥ धन पाखें भूलो भमुं, कर मित्र महारी सार॥ पडे काम अलगो रह्यो, किश्यो ते मित्र गमार ॥ ६ ॥ शुं कीजें तेणें सज्जनें, भीड न भांजे जेण ॥ अजाकंठ पयोहरा, दूध न पाणी तेण ॥७॥ पुरुषा तेहवा मित्त कर, जेहवा अगर बणाय ॥ पर धूपे आपें दहे, सज्जन लहू गुणाय ॥ ८ ॥ स रोवर हंस न मित्त कर, चूणी जे अलगा थाय ॥

---

१ चतुर्थ दोहानो अर्थः— गिरिजाकंत जे महादेव, तेनुं आभरण जे सर्प तेनो रिपु जे गरुड,तेना स्वामी जे विष्णु,तेनी रामा एटले स्त्री जे लक्ष्मी, ते जेने घेर नथी ते खरो विगूतो थाय.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर पोयणशुं मित्तडी, जे सरसी शूकाय ॥ए॥ कम ल कपूर चंदन जिस्यो, पिता तणो तुं यार ॥ निज बालक जाणी करी, सोमदत्त कर सार ॥१०॥६ए६॥

॥ ढाल चोपाईनी देशी ॥

॥ सोमदत्त कहे सुण गुणखाणी, दांतवाडी ते मीठी वाणी ॥ आपी धन मागण म म जजे, दोढूं गरेहणुं तुं राखजे ॥१॥ बांधी माख्या तणो विचार, ज्यारें ढोकरानो परिवार ॥ मीठी वस्तु खावी मन धरे, जिहां मान तिहां जोजन करे ॥२॥ सुख जरी सूवुं ते एम कहे, रूडे ठामें जइने रहे ॥ निद्रा आवी सूवुं शिरें, गाम घर ते मित्र एम करे ॥ ३ ॥ गंगा गाय बंधाये ज्यांह, गमाण आगल खणजे त्यांह, मित्र कहेण ते सघला करे, खणी जूमी धन घरमां धरे ॥४॥ सुखी हुउं ते बुद्धि करी,धन आव्युं घर पाडुं फरी ॥ गरेहणुं जाजुं लेई धन देह, उधारो कहि यें न करेह ॥ ५ ॥ कदाचित् सुपुरुषने जो दिये,अ त्यंत व्याज तिहां नवि लिये ॥ लोकमांही हेलाये घणुं, संतोषपणुं जाये आपणुं ॥ ६ ॥ लेनारो पण तरतज देह, वचन आपणुं शुरू करेह ॥ तस्यो जार माथे नवि लिये, आगल जातां नाखी दीये

For Private and Personal Use Only

॥ ७ ॥ कदाचित् हुइ धननी हाणि, थोडुं थोडुं दिये निर्वाण ॥ आ नव परनव जे डुःख देह, कोण मूरख रण राखे तेह ॥ ७ ॥ धनआगमनें शत्रुघात, अग्नि रोगनो करो निपात ॥ कन्या दान नें रण ठेदवुं, विलंब न करवो शीघ्रज थवुं ॥ ए ॥ सर्व गाथा ॥७०५॥

॥ दोहा ॥

॥ पुत्रीमरण रण ठेद, विद्या उंषध धर्म ॥ ऋष न कहे डुःख ते नथी, पढें दिये सुख पर्म ॥ १ ॥ कुपथ्य परिग्रह श्वानमिथुन, पाप करज ने घाय ॥ रण करतां ठे सोहेलुं, निर्वहेतां डुःख थाय ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ जो नवि पामे देवा दाम, तो तेहना घरनुं करे काम ॥ करे बूटया तणो उपाय, नाहिंकर परनवें डुःखियो थाय ॥ १ ॥ नेंसो उंट गधेडो दास, थाय बलदियो आणे घास ॥ खांधे धोंसरुं खमतो मार, करडे पूठडुं धरतो खार ॥ २ ॥ वींधी नाक परोई राशि, किहां जाईश रे रणिया नाशि ॥ चूके आर पेसारे घणुं, कारण ते सहु देवा तणुं ॥ ३ ॥ लेहे णदार विमासे इस्युं, जे कई देवा नहिं धन किस्युं ॥ उत्तम ते कंइ मागे नहिं, पाप बांधतुं जाणे तहिं ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥४॥ कहे मुऊ होजो पुण्यने काम, वैर न बांधे तेणें ठाम ॥ जावड शेठनी सुणो कथाय, रुषन्न कहे तुम हितशिक्षाय ॥ ५ ॥ सर्वगाथा ॥ ७१२ ॥

॥ ढाल ॥ ढानो रे बूपीने कंता किहां रह्यो रे ॥

॥ ए देशी ॥

॥ शेठ जावड वडो वाणियो रे, जुंकुं सुपन लहे नार रे ॥ रणसंबंधें सुत उपन्यो रे, जाण्यो मृतयोगें विचार रे ॥ शेठ जावड वडो वाणियो रे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मालण नदी तटें जइ करी रे, मूक्यो शूके जाड रे ॥ प्रथम रोयो पछें बहु हस्यो रे, बोल्यो ज डबुं झाड रे ॥ शे० ॥ २ ॥ बालक रोयो तेणें कार णें रे, मागुं लाख टकाय रे ॥ लेइ अटवीमांहे मू कियो रे, तात मूरख कांय थाय रे ॥ शे० ॥ ३ ॥ बाल हस्यो तेणें कारणें रे, नहिं द्यो टका लाख रे ॥ तुम घरे जुंकुं बहु हशे रे, जाणो साची जांख रे ॥ शे० ॥ ४ ॥ पाछो लेइ घर आवियो रे, खरच्युं लाख सुवर्ण रे ॥ जनम महोछव करे तिहां घणो रे, छठे दिवसें पाम्यो मर्ण रे ॥ शे० ॥५॥ बीजो पुत्र तिहां जनमीयो रे, त्रण्य लाख देवा तातें रे ॥ मूक्यो रण तव बोलियो रे, लाव्या घरे संघातें रे ॥ शे० ॥ ६ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्रण्य लाख टका खरचिया रे, छठे दिनें थयुं मरण रे ॥ त्रीजुं स्वपन लेइ जण्यो रे, देहनो कंचन वर्ण रे ॥ शे० ॥ ७ ॥ तेहने मांख्यो वन मूकवा रे, बो ल्यो मुखथी नांख रे ॥ मुजने कांइ तजो तातजी रे, देवा उंगणीश लाख रे ॥ शे० ॥ ८ ॥ सुणिय वचन सुतनें ग्रह्यो रे, दीधुं जावड नाम रे ॥ अनुक्रमें ते यौवन लहे रे, बहु वाध्या गुणग्राम रे ॥ शे० ॥ ॥ ए ॥ मात पिता परजव जतां रे, उंगणीश लाख टकाय रे ॥ मान्या तेणें तिहां खरचवा रे, जरावी त्रण्य प्रतिमाय रे ॥ शे० ॥ १० ॥ कृषन अने पुंम रीकनी रे, चक्रेसरी संतुष्ट रे ॥ नव लाख टका तेह ने दिया रे, दश लाखें कीधी प्रतिष्ठ रे ॥ शे० ॥ ॥ ११ ॥ अढार वाहाण धन लावियो रे, सोनुं अ संख्य अपार रे ॥ शत्रुंजय उद्धार करावियो रे, मणि मय बिंब सुसार रे ॥ शे० ॥ १२ ॥ एम रण बूटी उरण थयो रे, कीधां पुण्य अनेक रे ॥ कृषन कहे देणुं नवि गमे रे, जेहने पोतें विवेक रे ॥ शे० ॥१३॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ कलेश वयर वाधे रणथकी, आ जव परजव थाये दुःखी ॥ तेमाटें आ जव दीजीयें, उधारे श्याने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लीजियें ॥१॥ माली तंबोलीशुं प्रेम, उधारे देतां नहिं खेम ॥ सुखडियो सुगंधी सार, उधारानो श्यो व्यापार ॥ २ ॥ नृपति नाट अने पस्ताग, म करिश उधारानो लाग ॥ बांभण बोडो शस्त्रह धार, महिलाशुं म करीश व्यापार ॥ ३ ॥ धर्मीशुं करवो व्यापार, साधर्मिकनी करवी सार ॥ वस्त वोहरावे देई वखार, ए सगपण मोटुं संसार ॥ ४ ॥ धन आपंतां करे विचार, रहेशे तो ठे ठार सुसार ॥ जो श्रावक घर लखमी हशे, साते क्षेत्रने ते पोखशे ॥ ५ ॥ एम जाणीने वणज करेह, मचकोडायो ते नवि देह ॥ ए मुज पुण्यनुं थानक हवुं, एम जाणी धन ते मूकवुं ॥ ६ ॥ द्रव्य मलेछादिक कर रहे, वोसिरावे तो बहु सुख लहे ॥ जो आपे तो पुण्यने ठाम, ते धन नावे बीजे काम ॥ ७ ॥ पडी वस्तु गई जे होय, वोसिरावे श्रावक पण सोय ॥ एम अनंता भवनी देह, घर कुटुंब वोसिरावे तेह ॥ ८ ॥ पापोपकरण शस्त्र अनेक, ठंरे दुक्कड धरी विवेक ॥ नहिं कर चाले पूठें पाप, भगवती मांहे कह्यो जबाप ॥९॥ पारधीयें मृग मार्यो जई, किरिया चारने लागे सहि ॥ धनुष पणछ फल चोथुं बाण, लागे पातक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुणो सुजाण ॥ १० ॥ धन खोये दिलगिर नवि थाय, शी लखमी सूजते उपाय ॥ उद्यमवंतनी ल खमी दास, धर्म करे मन एह विमास ॥ ११ ॥ तरु काप्यो वली थाये ढतो, चंद खीण थई वाधतो ॥ आ पद संपद चाली जाय, सरखो रहे नर बेहु ठाय ॥ ॥ १२ ॥ होय आपदा मोटा तणे, शूर शशीनी ल खमी हणे ॥ चादरणी सरखी ते सदा, दारिद्रीनें शी आपदा ॥ १३ ॥ (मूरखने चिंता शी होय, पटु ते पुरुष निर्चिंत न होय ॥) अंब वृक्ष तरुवरमांहि सार, चिंतातुर दीठो एक वार ॥ पूछे पंमित कां अण मणा, फाल्गुन मास लिया गुण घणा ॥ १४ ॥ कहे पंमित चैतर वैशाख, त्यारें फल होशे तुझ लाख ॥ पत्र पंचवर्ण होये तदा, तुं पामीश सवली संपदा ॥ ॥ १५ ॥ सुणो कथा गरढा नर बाल, पाटणमांहे वसे श्रीमाल ॥ नागराज शेठ तिहां रहे, कोटिध्वज तस सहुको कहे ॥ १६ ॥ मेला देवी तस घरनार, गर्ज्जवती होई जिण वार ॥ नागराजा तव पाम्यो मरण, राजायें धन कीधुं हरण ॥ १७ ॥ गई धोलके पीयर जणी, मोहलो उपन्यो तातें सुणी ॥ अमा री पडह वजडाव्यो सही, पुत्र जण्यो तव मन गह

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गही ॥१७॥ नाम अजय तस आजड थयो, पांच वरषनो जणवा गयो ॥ कहे लोक न बापो जदा, पूठी माय पाटण गयो तदा ॥ १९ ॥ प्रगटयुं धन ते धरती मांहे, लाछलदे स्त्री परण्यो त्यांहे ॥ कोटि ध्वज अनुकरमें थाय, त्रण्य पुत्र ते नारी जाय ॥२०॥ जूंने करमें निर्धन थाय, पुत्र लेई स्त्री पियरें जाय ॥ पोतें एकलो घरमां वसे, अकिक चर्मनी कोथली घसे ॥ २१ ॥ जव माणुं ते आपे एक, पोतें दलतां गयो विवेक ॥ पोतें रांधे पोतें जमे, दरिद्र तणा दाडा निर्गमे ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ ७४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कण खांमो कण वाटलो, कण लांबो कण लीह ॥ दैवें न दीधा चंदनें, सवे सरीखा दीह ॥ १ ॥ जग शिर अक्कर विधि लिखे, विधि शिर लखिया केण ॥ रावण घर कोडव दले, एम पूछयुं हणुएण ॥ २ ॥ नलिनी सरोवर घर कियो, दव दाझणा जए ण ॥ ते दाधी हिमाजलें, पूरवदत्त फलेण ॥ ३॥ ना कीधे ते नवि रहे, दैव करे ते थाय॥ मन्न रयणायर घर करे, सांझे साथ वेचाय ॥ ४ ॥ अवली गति छे दैवनी, रखे पतीजो कोई ॥ आरंज्या यूंही रहे,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवर अचिंत्यां होय ॥ ५ ॥ सुकुलें उपन्यो शुं करे, जो शिर कर्म न होय ॥ नाथ्यो विंध्यो ने हण्यो,शंख नमंतो जोय ॥ ६ ॥ शंख सरीखो नर नमे, आनंड कोटिध्वज ॥ पुरुषां मान न कीजीयें, काल तिस्युं नहिं अज्ज ॥ ७ ॥ सुखीया म करिश गारवो, निर्धन पाय म ठेल ॥ कोइ कुवायो वायशे, ज्युं तुंबडी ने वेल ॥ ८ ॥ गयवर कां तुं गरवियो, देखी वड वड दंत ॥ एहज दंतह जोगथी, युं खरु होइ पडंत (कहे मुणिंद गुमानथी, केते गये गिरिंद) ॥ ए ॥ ७५६ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ ए लखमी नवि कहेनी होय, समुद्र तातनें ठांरुयो जोय ॥ नारायणने सबलो प्रेम, तोहे निकली त्यांथी केम ॥ १ ॥ बीजा पुरुष तो खरचे खाय, तिहां शुं रहे लखमी एक ठाय ॥ आनंडने मूकीनें जाय, देखी मूरख विस्मय थाय ॥ २ ॥ हेमाचारय पासें सार, आनंड उचरे ठे व्रत बार ॥ थोडुं मूकवा हिंमे धन्न, सो पंचाशे आएयुं मन्न ॥ ३ ॥ हेम कहे सुण आनंड शाह, आगल मन तुफ न रहे ठाह ॥ अति आग्रह करे अपार, मेले मोकला दाम हजार ॥ ४ ॥ गुरु कहे ए कहो जूठी नांख,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आजड दाम मूके एक लाख॥लोक घणां ते हांसी करे, हेम कहे एटले नवि सरे ॥ ५ ॥ मूक्या मोकला नवलख दाम, अधिके करशुं पुण्यनुं काम ॥ पांचदाम हुंता तस गांठ, इंद्रनील गलीने कंठ ॥६॥ पांच दाम आपी ते लीध, तेहना मणिया जाजा कीध ॥ लाखें मणियो वेचे एक, एम करतां धन हवुं अनेक ॥ ७ ॥ अनुक्रमें कोटिध्वज थाय, आवी सुत स्त्री लागां पाय, नगरमांहि परठायो पडो,मुनिवरने दिये घृतनो घडो ॥ ८ ॥ सर्वगाथा ॥ ७६४ ॥

॥ दोहा ॥

साहसियां लछी मिले, नहु कायर पुरुषांह ॥
काने कुंकल रयणमय, काजल लहे नयणाह ॥ १ ॥
सतिया सत्य न छोडियें, सत्य छोडे पत जाय ॥
सतकी बांधी लछमी, बहोत मिलेगी आय ॥ २ ॥
जमरा जाखर दाढलां, लांबी चढीने ठेल ॥ काले केतकी फूलशे, वली थाशे रंगरेल ॥ ३ ॥स०॥७६७॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ रंगें सामिवत्सल करे, जिनवरनी पूजा आदरे ॥ शत्रुकार मंमावे सोय, संघ जक्ति वरसें करे दोय ॥ १ ॥ पुस्तक देरांने उद्धरे, वरष चोराशी आउ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शिरे ॥ वांची पुण्य तणी जे वही, लाख आठाणुं खर च्या सही ॥१॥ अंतकालें ए कानें सुणी, थयो विख वादने चिंता घणी ॥ एक कोडी नवि खरच्या दाम, तो शुं कीधुं पुण्यनुं काम ॥ २ ॥ त्यां पुत्रें खरच्या दश लाख, आठ लाख मान्यानी नाख ॥ अणसण पाली सुरघर गयो, आनडप्रबंध संपूरण थयो ॥ ४ ॥ ते माटें धन जाये जदा, धैर्य न मूको मा नव तदा ॥ नवि पामो तोही न धरो रोष, रुषन व डो जगमांहि संतोष ॥ ५ ॥ सर्व गाथा ॥ ७७१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पवन नखंत पुष्टा अहि, तृणचर पुष्ट गयंद ॥ संतोषें तापस सुखी, खाता वनफल कंद ॥ १ ॥ मीठो कडवो लींबडो, जे आपणडे देश ॥ आखें मं रुप मोरिया, शुं कीजें परदेश ॥ २ ॥ देखी रिद्धि पीयारडी, मत्सर तुं म करेश ॥ वाव्युं जे नव आग लें, आणे तेह लुणेश ॥३॥ सर्व गाथा ॥ ७७५ ॥

॥ ढाल ॥ लंकामां आव्या श्रीराम रे ॥ ए देशी॥

॥ राग मारु ॥ धनहीण थयो नर ज्यारें रे, ना ग्यदारने सेवे त्यारें रे ॥ दुःख दारिद्र तेहथी जाय रे, धनवंत सुखी ते थाय रे ॥ १ ॥ कहुं लखमीनो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिवार रे, होय निर्दयपणुं अहंकार रे ॥ पात्र देखी होये अप्रीत रे, कटु वाणी ने तृष्णा चित्त रे ॥ २ ॥ आपदायें दीन न थाय रे, विद्यावंतने नम तो जाय रे ॥ खमे समरथ हुउं जेह रे, परपीडें दुःखीयो तेह रे ॥३॥ दुःख आवे आतम ज्यारें रे, हर्ष पामे उत्तम त्यारें रे ॥ धन पामे गर्व न होय रे, तेहना देवता पाय धोय रे ॥ ४ ॥ धनवंत होये नर जेह रे, न वढे घणुं कोश्शुं तेह रे ॥ घटे लज्जा ने धन जाय रे, ते मूरखमां कहेवाय रे ॥ ५ ॥ ज गमांहे मूरख चार रे, रोगी लोलुपवंत अपार रे ॥ खासी खुखु ने चोरीनो रंग रे, निद्रा जाजी परस्त्री संग रे ॥ ६ ॥ धनवंत कलेशनो अर्थी रे, ए मूरख चारे धुरथी रे ॥ न करो मूरखने साद रे, धनवंत शुं करता वाद रे ॥ ७ ॥ नृप पक्ष घणो बलवंत रे, गुरुशुं न वढे गुणवंत रे ॥ तपशीने चोर रीसाल रे, वढे जे जग मूरख बाल रे ॥ ८ ॥ महोटा साथें पडि युं काम रे, विनय वचनें करतो ताम रे ॥ पंचाख्या ननो न्याव ते लीजें रे, नमस्कार उत्तमने कीजें रे ॥ ए ॥ बलवंतशुं कीजें नेद रे, दीये नीचाने न होये जेम खेद रे ॥ बराबरीनो होय ज्यांही रे, बहु

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पराक्रम कीजें त्यांही रे ॥ १० ॥ जिम मयगल म होटो मूउं रे, शीयालनी दृष्टें हूउं रे॥ देखी खुशीय थयो तेणि वार रे, घणा दीवस लगी करुं आहार रे ॥ ११ ॥ इण अवसरें नूख्यो सिंह रे, चाल्यो मयगल ताणी अबीह रे ॥ शीयाल तस शीश नमावे रे, स्वामि मृतकने तुं शुं खावे रे ॥ १२ ॥ उत्तमने एम करी वाल्यो रे, वली वाघ आवंतो नाख्यो रे ॥ शीयाल कहे सिंह मारी रे, गयो नाहा वा मुऊ बेसारी रे ॥ १३ ॥ नेद नांखतां बलवंत वलियो रे, नीच चीतरो आवी मलियो रे ॥ कह्युं वाघतणुं नऊ एह रे, कांइक दीधुं वलियो तेह रे ॥ १४ ॥ पछें आव्यो एक शीयाल रे, उठ्यो जंबुक तव तत काल रे॥ बराबरीनो आमो पाड्यो रे, करी पराक्रम ठेली काढ्यो रे ॥ १५ ॥ वढवाडीना चार प्रकार रे, मोटाने करवो जूहार रे ॥ धनवंतने धन नी आश रे, क्षमा आदरवी नर तास रे ॥ १६ ॥ वली दंत कलह होय ज्यांहिं रे, जुवटुं दीसे घरमां हि रे॥धातुरवादी सज्जनशुं द्वेषी रे,सदा आलसु होय विशेष रे ॥ १७ ॥ आयपदने खरच न जूवे रे, नंगा दिक फाकी सूवे रे ॥ तिहां दारिद्र केरो वास रे,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

म करो लखमीनी आश रे ॥ १० ॥ वडा पुरुषने पूजे ज्यांहिं रे,न्यायनुं धन मंदिर मांहि रे ॥ प्रीति दीसे मांहो मांहि रे, लखमीनुं स्थानक त्यांहि रे ॥१ए॥ लेणुं मागतो मीठुं बोले रे, कठिन बोलीने एब न खोले रे ॥ जूठुं कहेतां रीश जराय रे, दीवा नमां उठी जाय रे ॥ २० ॥ लज्जा जाये धननी हाणी रे,लांघणो म करो गुणखाणी रे ॥ धनअर्थे न लाघण कीजें रे, साहामाने जमवा दीजें रे ॥ २१ ॥ जमी लाघण करता केता रे, देणदारने जमवा न देता रे ॥ अंतरायनुं पाप अपार रे, फुःख ढंढणा सहि कुमार रे ॥ २२ ॥ सुंहाल पणे होये जेह रे, जूंठुं बोले न थाये तेह रे ॥ सुकुमाल बोलीजें जाई रे, तेह दांतनी करे रक्षाइ रे ॥ २३ ॥ कवि लहे एणुं देवुं थाय रे, जो विसरी बेहुने जाय रे ॥ न वढे चार होये ज्यांहि रे, समा केश ते कांकशी मांही रे ॥ २४ ॥ न्याय करतां जे नर चार रे, हइये धरता धरम विचार रे ॥ राग द्वेष धरे नर कोय रे, बेहु जव ते फुःखीया होय रे ॥ २५ ॥ सर्वनो न करे नर न्याय रे, सगा साहमीथी केम बूटाय रे ॥ न्याय करतां गुण ठे बहुज रे, लोक माने जगमां सहुज रे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ २६ ॥ अवगुण पण जाजा दीसे रे, घणा देखी ने दंत ते पीसे रे ॥ तेणें ऋषन्न जोई करे न्याय रे, अ णदेणें रे देणुं कहेवाय रे ॥२७॥ सर्व गाथा ॥७०२॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ अणदेणें देणुं कहेवाय, वसंत पुरमां सुबुद्धि साह ॥ महत्त्व वडाइ वांछे घणुं, लक्षण न्याय करेवा तणुं ॥ १ ॥ न्याय करेवा पर घर जाय, बोल्या विण तेणें नवि रहेवाय ॥ धर्मन्याय क्यारें किम थाय, क्यारें केम खोटुं बोलाय ॥ २ ॥ तेहने विधवा पुत्री एक, म्हाही धर्मिणी घणो विवेक ॥ तेणें वार्यो पो तानो बाप, टालो न्याय तणो संताप ॥३॥ किस्यो लाज्ञ आपणने अहिं, एणी वातें तुम महिमा नहिं ॥ मोढे रूडुं कहेतां कहे, पूठें वयर घणां ते वहे ॥ ४ ॥ वार्यो बाप न माने किस्युं, कहे अमो न्याय करेवा जस्युं ॥ प्रतिबोधवाने काम सुताय, ऊगडो मांडे तेणें ठाय ॥ ५ ॥ घाली लांघण बेठी बार, मिल्यां लोक पूछे तेणें ठार ॥ कुमरी कहे शुं पूछो घणुं, कर्म न्नोगवुं हुं आपणुं ॥ ६ ॥ वैर वसाव्युं हाथे करी, आपे वैरिणी होय दीकरी ॥ सोनैया मुऊ एक हजार, लीधा तातें गणि निरधार ॥ ७ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जो आपे तो जोजन करुं, विण दीधे नवि पाछी फिरुं ॥ जिणें बेटीनुं खाधुं धन्न, ते उपर नवि माने मन्न ॥ ८ ॥ दीये गाल बोले आरडी, सुबुद्धि शेठने चिंता पडी ॥ गयो चार न्यायवाला कने, आवीने ठो डावो मने ॥ ए ॥ न्याय करेवा आव्या चार, कुमरी रोई तेणी वार ॥ हुं रंक ने अबला बाल, न्याय क रेजो थई दयाल ॥ १० ॥ पुरुष चार विमासे तहिं, पुत्रीवचन ते जूठुं नहिं ॥ पुण्यवंती जूठी नहिं कदा, तात हरामी खोटो सदा ॥ ११ ॥ तेडी पुरुषें पूछ्युं साह, लेइ कांय करो अन्याय ॥ शेठ कहे में लीधुं नथी, न वदुं ते हुं पुत्रीवती ॥ १२ ॥ पुरुष कहे मानो तमे आज, वढतां रहेशे नहिं तुम लाज ॥ सुता तुमारी बालक रंग, तेहने दीजें सांहमुं दंग ॥ १३ ॥ दया धरीने करजो सार, आपो सोवन एक हजार ॥ काल जाव जोई त्यां साह, आप्या सोनै य्या तेण ठाय ॥ १४ ॥ लोकमांहि निंदा विस्तरी, लेई दामने साह गयो फरी ॥ न्याय तणा करनारा जेह, प्रायें जला न होये तेह ॥ १५ ॥ लोकमांही चाल्यो उपहास,रहे बेठो घर साह विमास ॥ न्याय करवा नवि जाये फरी, त्यारें बोली निज दीकरी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ १६ ॥ पिता बोल मुऊ हैयडे वस्यो, तुमो न्याय एम करता हश्यो ॥ एह काम नहिं जग सार, आल्युं पाबुं सोवन हजार ॥ १७ ॥ तातें बुद्धि खरी मन धरी, न्याय करवो मूक्यो परहरी ॥ ऋषन्न कहे हित शिक्षा खरी, न्याय करे विमासी करी ॥१८॥७२०॥

॥ ढाल ॥ बंधव जई लावो पाणी ॥ ए देशी ॥

॥ परनी लखमी घणी जोइ, नर मत्सर म कर शो कोइ ॥ कर्मने आयत बे धन्न, शीद मेलुं करो तुमें मन्न ॥ १ ॥ इह लोकें परन्नवें नाई, मत्सर होये दुःखदायी ॥ नूंरुं चिंतवे परने जेह,होय पोताने घरे तेह ॥ २ ॥ मन वश राखो सहु कोय, नूंरे वचनें पातक होय ॥ वश होय जेहनी काया, ते जननीयें नलें जाया ॥३॥ धान्य वहोरवुं तेह जंजालो, पण नवि वंबेज दुकालो ॥ लागो औषधनो कर्म नोगो, नवी वांबे जगने रोगो ॥ ४ ॥ वस्त्रादिक वहोरे ज्यारें, मोंघुं नवि वंबे त्यारें ॥ अणचिंतव्युं मोंघुं होय, अनुमोद्ये पातक जोय ॥ ५ ॥ जेहनां निश्चल मन बे सार, तेने दीठे पुण्य अपार ॥ जेनां मांठां मन सदाय, तेने दीठे पातक थाय ॥ ६ ॥ बे मित्र मलि पंथें जाय, जइ बेठा रसोइकर ठाय॥ पंथी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाणीने नारी पूछे, तुम कोण कामें आगें जावुं बे ॥ ७ ॥ एक मित्रज बोल्यो त्यांहि, चर्म वहोरिश होये ज्यांहि ॥ बीजो कहे हुं घृतनो अर्थी, वहोरवा नीकल्यो बुं घरथी ॥८॥ जिमाडया घरनी मऊार, चर्म वालो बेठो बाहार ॥ बेहु वोरीने जब आवे, घरे रांधणीनें तव जावे ॥ ए ॥ मांरुयुं बेसणुं ते घर मांहि, चर्म वालो बेठो त्यांहिं ॥ घृतवालो बाहेर काढ्यो, मने चिंतवे एह कुहाड्यो ॥ १० ॥ बे मित्र ते पूछे तामो, कां फेरव्यां जोजन ठामो ॥ रांधणी कहे जो घृतवालो, पहेलुं वंछतो सुजिक्क सुगालो ॥ ११ ॥ घणां ढोरने जाजुं दूधो, हुतो तव परिणाम विशुद्धो ॥ हवे ढोर ने जूंरुं चिंते, घर चोखुं न होय लिपंते ॥ १२ ॥ चर्म वालो चालंतां मेलो, ढोर मुआं वांछे पहेलो ॥ हवे वांछे पशुआंने आय, जिम चामडां मोघां थाय ॥ १३॥ तेणे बेसाड्यो में मांहि, बेहु समज्या मित्र ते त्यांहिं ॥ मन मेलानुं बहु पापो, मन चोखे तरशे आपो ॥ १४ ॥ ८३४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मन मेले दल नरकनां, मेले प्रसन्नचंद राय ॥ तेहज मन निश्चल करी, तिणें जवें मुगति जाय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ १ ॥ तंदुलमत्स्य नरकें वसे, मनें करे ते पाप ॥ जाणे मत्स्य सघला जखुं, खाइ न शके कांइ आप ॥२॥ काम जोग बहु जोगवे, त्रण पल्योपम आय ॥ जो मन निर्मल युगलनां, सहु सुरलोकें जाय ॥३॥ तेणें कारण नर वणजमां, राखो चोखुं मन्न ॥ अति तृष्णाने आकरुं, मातुं म वांछिश जन्न ॥ ४ ॥ ७३७ ॥

॥ ढाल ॥ बंधव जइ लावो पाणी ॥ ए देशी ॥

॥ थयुं वस्तुनुं आकरुं ज्यारें, घणुं त्रगणे वेचे त्यारें ॥ अति जाजुं त्यांहि न जाणे, गयां करियाणां न वखाणे ॥१॥ पासंग काटलां हीणां जेह, खाधी मांमीयें टाले तेह ॥ रस जेलने वस्तुनो जेल, तजे तेहने सांइशुं मेल ॥२॥ कूडो करहो ने खाता लंच, अति बहु सेवंता मंच ॥ नाणुं खोटुं ने साटुं जांजे, लेइ शाईने मोटुं मांजे ॥ ३ ॥ ग्राहक परना नवि जांजीजें, वाणी फेर ते किमहिं न कीजें ॥ अंधारे वस्तु न दीजें, अक्करना जेद न कीजें ॥ ४ ॥ परवंच ना जे बहु पेरें, उत्तम करता एक मेरे ॥ करी माया ने वंचे जेह, जगमांहि वंचाये तेह ॥५॥ देवलोकने मोक्षनां सुख, किम पामे पर करी दुःख ॥ परवंचना म करो कोय, सत्य चालतां बहु धन होय ॥ ६ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ दोहा ॥

॥ बहु धन तेहने संपजे, ऋषज कहे निर्धार ॥ जे जागे ते सांजले, कथा एक सुविचार ॥ १ ॥ ७४५॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ वसंत पुरमांहे शेठ होलाक, वणिग तणुं जेणें खोयुं नाक ॥ महोटा पुत्र घरमांहि चार, को न करे त्यां तत्त्वविचार ॥ १ ॥ तोली धान दिये त्रण शेर, जांखे पंच ए महोटो फेर ॥ लिये पंचने जांखे त्रण, लूंटे लोकने आव्या शरण ॥ २ ॥ त्रिपुष्कर दिये सुतनुं नाम, ज्यारें होय देवानुं काम ॥ त्रिपुष्कर कही तेडे तदा, पंच पुष्कर लेअंतां सदा ॥ ३ ॥ एम करतां नाहानी वहू जेह, जाणी ठबको देती तेह ॥ ससरो कहे किम कीजें वरा, निर्धनशुं होये शुजकरा ॥ ४ ॥ वहू कहे व्यवहार शुद्धिथी जोय, धर्म अर्थ सधावे दोय ॥ षट् महिना तो तुमें मन धरो, रूडुं थई आगल आदरो ॥ ५ ॥ व्यवहार वहू वचनें आदरे, शुद्ध काटलां पाठल धरे ॥ साचुं बोले साद नवि करे, घणां घराक हाटें तरवरे ॥ ६ ॥ लोकमांहे कीरति विस्तरी, ए वाणिकनी दानत फरी ॥ अन्न गोल घृत दीये अपार, वस्त जलीने तोले सफा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

र ॥ ७ ॥ खातां मिल्या नवटका हेम, वहूअर कहे हवे करजो एम ॥ करो काटलुं एहनुं तुमें, न्यायत णो नवि जाये किमे ॥ ८ ॥ कह्युं काटलुं को नवि लेय, वहूवचनें ड्रहमां नाखेय ॥ मीन एक तणे मुख गयुं, जाल्यो मत्स्य माछीयें ग्रह्युं ॥९॥ लोह काटलुं दीवुं जिसे, नामुं जई वंचाव्युं तिसे ॥ दीधुं होलाक शेठने हाथ, कही वात निज वहूअर साथ ॥१०॥ तहारुं वचन खरुं मनमांहि, व्यवहार तणुं नवि जाये क्यांहि ॥ एह आशाता मनमां धरे, व्यवहार शुद्धि सदा आदरे ॥ ११ ॥ पाम्यो धन श्रावक ते थयो, कुटुंबें जिनमारग त्यां ग्रह्यो ॥ राजमान्य थयो वाणियो, सत्यवादी जगमां जाणियो ॥ १२ ॥ आ ज लगें तस गोखे जाण, होलासा कही ताणे वा हाण ॥ ते कारणें खोटुं परिहरो, सत्यमार्ग सहुये आदरो ॥ १३ ॥ श्रावक जन एतां परिहरे, सामी सायें छल नवि करे ॥ विश्वासी देव गुरु वृद्ध बाल, द्रोह करंतां पातक जाल ॥ १४ ॥ तेहनी थापण नवि ओलवे, तेह साथें जूठुं नवि लवे ॥ न करे वंच ना तिहां लगार, कर्मचंमाल कह्या छे चार ॥१५॥ कूडी साख दिये निशि दीस, घणो काल रहे जस

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रीश ॥ विश्वासघाति कृतघ्नी जेह, कर्म चंमाल कह्या नर तेह ॥ १६ ॥ जाति चंमाल कहियें पांचमो, तुम चारे जई तेहने नमो ॥ तुमथी तेह न्नलेरो होय, कृषन्नकथा एक न्नांखे जोय ॥ १७ ॥ ८६२ ॥

॥ ढाल ॥ प्रन्नु पासनुं मुखडुं जोतां ॥ ए देशी ॥

॥ विशाला नगरी ठे ज्यांही, नंदराजा बेठो त्यांही ॥ जेहने न्नानुमती पटराणी, बोले अमृत मुखथी वाणी ॥ १ ॥ विजयपाल ते सुतनुं नाम, बहुश्रुत मंत्री करे काम ॥ नृपने राणीशुं रंगो, नवि ठंमे तेहनो संगो ॥२॥ सन्नामांहे पासें बेसारे, मंत्रीसर बोल्यो त्यारें ॥ वैद मीठा बोलो जेह, विण साडे नरनी देह ॥ ३ ॥ गुरु बोले मीठी वाणी, पुण्य चूके उत्तम प्राणी ॥ मंत्री बोले मुखें सार, तो विणसे सहि न्नंमार ॥४॥ तेणें कारणें कहे पर धानो, नथी रहेतुं सन्नानुं मानो ॥ तुम पासें स्त्री पटराणी, न्नली सांन्नलो महारी वाणी ॥ ५ ॥ गुरु अग्नि नरपति नारी, वेगलां फलपति नहिं सारी ॥ ढूकडां रहेतांज विणास, मध्य न्नागें सेवियें खास॥६॥ पासें बेठे तुमें नहीं फावो, नवि चाले तो रूप लिखावो ॥ एणे वचनें राजा हर्षे, लख्युं रूप ते बेठो निर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खे ॥७॥ शारदानंदन गुरु जास, रूप लेइ देखाड्युं तास ॥ पंडिताइ जणावा बोले, साबुं तिलक होय तो खोले ॥ ८ ॥ राजा मन विकल्प थाय, तेड्यो बहुश्रुतने तेणें ठाय ॥ शारदानंदनने मारो, रखे फेरी त्यांहि विचारो ॥ए॥ परधान विचारे ताम, विचारी कीजें जे काम ॥ ते बहु सुखदायी थाय, तननुं डुःख सघलुं जाय ॥ १० ॥ करे कारिय अणह विचार्युं, तेतो सालज सरिखुं धार्युं ॥ हृदय बाले संताप रतांइ, में फोगट कीधुं कांइ ॥११॥ इस्युं आप विचारे त्यांहि, ठानो राख्यो घरमांहि ॥ एक दिन राजानो पुत्त, रमे आहेडो अदनूत ॥ १२ ॥ सूअरने पूठें ऊ जाय, पड्यो एकलो वनमां राय ॥ सांऊं तलपि चढ्यो जाडे, नहिंकर वाघ खाय तस फाडी ॥ १३ ॥ कपि एक त्यांहां देव अदृष्टें, बोलाव्यो प्रेमनी दृष्टें ॥ म म बीहे रहे रात रंगें, तुज मूकीश पुरने संगें ॥१४॥ फल आपी वचनें ठार्यो, करी मित्रने खोले सुआर्यो ॥ वाघ नूख्यो आव्यो त्यांहिं, नाख वानर नरने आंहिं ॥१५॥ वानर कहे हुं नवि नाखुं, मुऊ जीव तणी परें राखुं ॥ न करुं हुं विश्वासघात, ठल ठद्मथी नरकें पात ॥१६॥ नवि नाख्यो वानरें ज्यारें,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पठी कुंअर उठ्यो त्यारें ॥ खोले सुउं तुमें कपिराय, जिम सुखजरें रयणी जाय ॥ १७ ॥ कपि सूतो खो लामांहि, गाजी वाघलो बोल्यो त्यांहि ॥ राजपुत्र तु ने नवि खाउं, नाख वानरने लेई जाउं ॥ १८ ॥ ना ख्यो वानरो कुमरें ज्यारें,वाघ देवरूपी हस्यो त्यारें ॥ गयो निकली ते मुख फाडी, बेठो रुदन करंतो झाडी ॥ १९ ॥ कहे वाघलो हसिय कां रोय, रह्यो जीवतो वानरो जोय ॥ कहे वानरो सांजल वात, कृतघ्नी विधि शी थात ॥ २० ॥ आप वरग तजी परजातें, राचे केता पर नातें ॥ तेहनी गति केइ थाशे, तेणें रोतो वानर जासे ॥२१॥ पशु मानवशुं शी प्रीति,कीधी में सबल अनीति ॥ सुणीने लाज्यो तेणें ठाय, वान रें घहेलो कर्यो राय ॥ २२ ॥ जंपे विशमेरा विशमे रा, दीये वनमां घहेलो फेरा ॥ शोधी तातें घरे आण्यो, थयो घहेलो नूपें जाण्यो ॥२३॥ करे औष ध जाजां राय, सुत साजो तोहि न थाय ॥ शारदा नंदन संजास्यो, तेहने तो पापीयें मास्यो ॥२४॥ प डहो वजडावे महाराज,अरध राज देउं तस आज ॥ जे टाले कुंअरने घेलो, ते पडहो ठवजो वहेलो ॥२५॥ पडहो ठवतो त्यां परधानो, वालुं राज कुंअ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रनो वानो ॥ मुऊ पुत्री कांश्क जाणे, ते रोग तणो अंत आणे ॥ २६ ॥ आण्यो कुमर तणे घरे ज्यारें, आडी परिअचि बांधी त्यारें ॥ शारदानंदन मांहे बोले, एब कुमर तणी त्यां खोले ॥ २७ ॥ विश्वास धरे जे नाई, तेहने वंचतां शी पंकिताई ॥ खोले सुतो हणे जे गमा रो तेहनो श्यो पुरुषाकारो ॥ २८ ॥ एवां वचन सुणे नृप ज्यारें, वि अक्षर मूके त्यारें ॥ शमेरा मुखथी ते नांखे, बीजी गाथा पंकित दाखे ॥ २९ ॥ समुऊतणे तटें जाय, गंगा सायर जलते न्हाय, ब्रह्महत्या तिहां मूकाय, मित्रऊोही न चोखो थाय ॥३०॥ श मूक्यो मेरा गोखे, त्रीजी गाथानो नाव पोखे ॥ मित्रऊोही कृतघन चोरी, विश्वास घाती तेह अघोरी ॥ ३१ ॥ ए नरकें जाये चार, चंद सूर ऊगे तिहां सार ॥ मे मूक्यो ने रा राख्यो, पढी चोथो बोल ते नांख्यो ॥ ३२ ॥ राजन वांढो सुत कल्याण, दीउं पात्रने दान सुजाण ॥ गृही दानें चोखो थाय, सुणतां रा मूक्यो तेणें राय ॥ ३३ ॥ टल्यो घहेलो सुसतो थाय, त्यारें कुमरेंज कही कथाय ॥ कह्यो वानरनो अधिकार, कृतघन हुं मित्र असा र ॥३४॥ नंदराजा विस्मय आणे, वनवात कुंअरी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केम जाणें ॥ बोले कुमरी सांजल राय, देव गुरुनो ए महिमाय ॥३५॥ जिव्हाग्रें शारदा वासो, तेणे हुउं ज्ञान प्रकाशो ॥ नवि जांखुं उंडो अधिको, जिम जानु मतीनुं तिलको ॥३६॥ तव नंदें खुशी होइ जोयो, ए तो शारदानंदन होयो ॥ करि परिअचि उंची मलीया, मन तणा मनोरथ फलीया ॥३७॥ एह वचन सुणी मन वाले, वंचना कृतघन पणुं टाले ॥ टाले विश्वास घात ते आप, कहे रुषज वहुं ए पाप ॥३८॥ ए०० ॥

॥ ढाल ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ पाप तणा कहुं दोय प्रकार, गोप्य प्रगटनो सुणो विचार ॥ गोप्य तणा वली जेद छे दोय, एक न्हानुं एक महोटुं होय ॥ १ ॥ कूड तोल ने कूडां माप, एह कह्युं में न्हानुं पाप ॥ जे नर करता विश्वास घात, कहुं गुप्त ए महोटुं पाप ॥ २ ॥ प्रग ट पापना दोय प्रकार, प्रथम जेद कुलनो आचार ॥ म्लेछ मंस तणे नित्य खाय, तेहने पाप थोडुं कहे वाय ॥ ३ ॥ निर्लज पणे एक करतां पाप, लीधो वेश यतिनो आप ॥ प्रगट पाप करेज अपार, तेहने अनंत कह्यो संसार ॥४॥ जे सत्यवादी होये आप, ते न करे नर जानुं पाप ॥ निसुग पणे ज्यारें आद

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रे, असत्यपणुं त्यारें मन धरे ॥ ५ ॥ असत्य तणुं छे महोटुं पाप, एक त्राजुवे मूके आप ॥ सकल पाप एकमांहेधरे, योगशास्त्र उ अधिको करे ॥ ६ ॥ ते माटे सत्य मारग नजो, रखे न्याय कोए नर तजो ॥ न्याय तणुं धन थोडुं घरे, क्षय नहिं जेम कूआनी सरें ॥ ७ ॥ अन्यायें बहु लखमी मली, खरचे नहिं जीवतो होय वली ॥ थिर न रहे रिद्धि तेहने घरे, मरु देश तलावनी पेरें ॥ ८ ॥ दीसे नीर नरानुं वली, सहु घेसुंमांहे जाये नली ॥ तरड्यो घट लिये पूतें वारि, अंतें बूडे तेणें ठार ॥ ए ॥ पाप करीने मेल्युं धन्न, न रहे थिर थइ सोवन्न ॥ मेलण हारो बूडे सही, त्यारें शिष्य बोल्यो गहगही ॥ १० ॥ न्यायें रह्या नर दीसे जेह, कां दुःखिया जगमांहे तेह ॥ अन्यायी सुखीया ते कांइ, लील करंता दीसे आंहीं ॥११॥ गुरु कहे शिष्य सांनल कहुं मर्म, ए नो गवे छे पूरवकर्म ॥ कर्म तणा छे चार प्रकार, धर्मघोष गुरु कहे विचार ॥ १२ ॥ पुण्यानुबंधी पुण्य छे एक, नरत तणी परें रिद्धि अनेक ॥ जैनधर्म आराधी करी, नव समुद्र गयो ते तरी ॥ १३ ॥ पापानुबंधी पुण्य पण होय, रोग रहित तन पामे सोय ॥ कोणि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क परें रिद्धि करतां पाप, मरण लही नरकें वहे आप ॥ १४ ॥ पाप पुण्यानुबंधी पण होय, दरिद्री नर थाये सोय ॥ जिन मारग पामी होय सुखी, संप्रतिराय जिम कुमकह रिषि ॥ १५ ॥ पापानुबंधी होये पाप, ते दरिद्री लहे संताप ॥ पापें रातो दुर्गति वरे, कालग सूरिआनी परें फरे ॥ १६ ॥ चार भेदनो भांख्यो मर्म, पामे सुख ते पूरव कर्म ॥ न्यायें दुःख ते पूरव पाप, आगल सुख भोगवशे आप ॥१७॥ ज्यां न्याय तिहां लखमी जाण, सुपुरुष न करे परनी हाण ॥ ते घर हाट वखार पण त्यजे, जिहां परिताप परने उपजे ॥१८॥ परना नीशासा जिहां होय, तिहां लखमी सुख न हुवे दोय ॥ उक्ति सुणो पंडित मुख भणे, वंछे मैत्री धूरत्त पणे ॥ १९ ॥ सुखें शास्त्रने कपटें धर्म, ते नवि वांछे समने मर्म ॥ कठण थइ स्त्रीने वांछतो, ते दीसे जग दुःखी थतो ॥ २० ॥ पर संतापें वंछे धन्न, ए पांचे ते मूरख जन्न ॥ लोक भलो कहे ते विधि करे, सत्यपणुं नर सही आदरे ॥ २१ ॥ सत्यवादीने शिक्षा दे एह, धन खोयूं नवि भांखे तेह ॥ धन वाध्युं मन जाणी रहे, संग्रही वस्तु न कोने कहे ॥ २२ ॥ स्त्रीनी वा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जोजन अवदात, धन गांठे ने गुण विख्यात ॥ जूंठुं काम पोतानुं पुण्य, एणें थानकें तुं करजे मौन ॥२३॥ मरण म आपणो मरण प्रकाश, कहेतां अवगुण होशे तास ॥ कदाचित् को पूछे खप करी, कवण काम तुम कहे इम फरी ॥ २४ ॥ गुर्वादिक पूछे रा जाय, सत्य वचन बोले तिण ठाय ॥ साचे सिद्धि होये जगमांह, सुण दृष्टांत कहुं एक त्यांह ॥२५॥ दील्ली नगरमांहे जाणीयो, मोहनसंघ वसे वाणी यो ॥ सत्यवादी तस नाम धराय, एक दिवस पूछे पादशाय ॥ २६ ॥ कहे वाणिक तुज केतुं धन्न, बोल्यो शेठ तिहां थइज प्रसन्न ॥ स्वामी लेखुं जोइने कहुं, अणप्रीछ्युं सूधुं नवि लहुं ॥ २७ ॥ जोइ ना मुंने लीधुं रहस्य, सोवन टका चोराशी सहस्स ॥ म हारे एटलुं छे धन सही, वात पादशाह आगल कही ॥ २८ ॥ तव हरख्यो चिंते सुलतान, थोडुं जाणुं हतुं निधान ॥ एणें द्रव्य तो जाजो कह्यो, जगमां ए सत्यवादी लह्यो ॥२९॥ हुउं पादशा हरख अपा र, सोंप्या तस सघला भंमार ॥ वाधी दोलत सुख पाम्यो घणुं, सहु आदरो सत्यवादी पणुं ॥ ३० ॥ खंज नयरमां सोनी नीम, सत्य वचननो राखे नीम

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्रावक जगत चंदसूरि तणो, तपो तेह द्रव्य ते हने घणो ॥ ३१ ॥ मल्लिनाथने देहरे गयो, जातां तेहने चोरें ग्रह्यो ॥ पाल्लीमांहे लइ गया तेह, चार हजार सोवन मागेह ॥ ३२ ॥ जीम तणो बेटो सज्ञ थयो, खोटा सोनैया लेई गयो ॥ खत्रीने कहे परखी लीउं, जीम पिताने मूकी दीउं ॥ ३३ ॥ महो टो खत्री त्यां इम कहे, सोवन पारखुं अंहीं कुण लहे ॥ जीम कने परखावो एह, सत्यवादी कहेवाये तेह ॥३४॥ जीम कने परखावी जिस्ये, निरखी सो वन बोल्यो तिस्ये ॥ ए सोनैया खोटा सही, आपे पाछा एहवुं कही ॥ ३५ ॥ महेवासी हरख्यो घणुं त्यांहि, एहवा पुरुष अछे जगमांहि ॥ संकट पडे ए साचुं कहे, सत्य काजें धन परिसह सहे ॥ ३६ ॥ पुत्र तणे पण जूठो कह्यो, एह विचार हिये नवि धर्यो ॥ कलिकालें ए पुरुष रतन्न, कुण पापी लहे एहनुं धन्न ॥ ३७ ॥ मूक्यो जीम गयो निज घरे, पहेरामणी कीधी बहु परें ॥ साचे सिद्धि हुइ तस घणी, रुषन्न कहे हितशिक्षा जणी ॥ ३८ ॥ ए३८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रुषन्न चावे सत्यनाम हुआं, मूक असत्यनो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घोल ॥ दुर्गति जाये आतमा, तेहथी रूडो खोल ॥१॥ चावो सत्यनां पानडां, मूकी असत्यनां पान ॥ जे पांचे रूडो कह्यो, पाम्यो सकल निधान ॥ २ ॥ धन्य लही सत्य आदरे, समराये परलोक ॥ हितशि क्षा सुपुरुषने, कुपुरुष कहेवुं फोक ॥ ३ ॥ ए४१ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ वली हित शिक्षा जांखुं एह, राखे सेवक सुंदर जेह ॥ नहीं वंचकने थिर गुणवंत, माह्यो मधुर वचन बलवंत ॥ १ ॥ पवित्र अलोजी ने उद्यमी, स्वामीभक्त चालंतो नमी ॥ आपधर्म समानी कह्यो, भलो नहिं घर बीजो रह्यो ॥ २ ॥ निंदे धर्म जैननो जेह, आशातना जिननीज करेह ॥ साधपंथ वि खोडे सिरे, बेठो घणुं दुगंछा करे ॥ ३ ॥ करे सोय संसारनुं काम, तेहथी न लहे पुण्यनुं नाम ॥ श्राव क सेवक जगमांहे सार, जेह सुणावे धर्मविचार ॥ ॥४॥ जीव अजीवनी वातो कहे, पुण्य पापना भेद पण लहे ॥ अनंतकाम अभक्ष्यनां पाप, शेठ तणे समजावे आप ॥ ५ ॥ बार व्रतनी वातो करे, सम कित भेद समजावे सीरे ॥ मिथ्यामतिथी ते फेरवे, शुरू धर्ममांहे मेलवे ॥ ६ ॥ पूजा पडिक्कमणानी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वात, कहे मुनि जिनवरना अवदात ॥ संसार काम करे मन धरे, खांम खेल्ली जल्ली बेहु परें ॥ ७ ॥ जे श्रावक दाता धनवंत, एक सेवक राखे गुणवंत ॥ सकल शास्त्रनी वातो करे, विण कीधे सुणतां शुभ वरे ॥८॥ तेणें श्रावक सेवक ते सार, श्रावक शेठ जलोज अपार ॥ पाडोशी श्रावक सारथि, धर्म सु णावे जे नर कथी ॥ ए ॥ सेवक केरो कह्यो विचार, सांभलतां मति होये सार ॥ वात करे आघेरो रहे, रुषभ कहे हितने नवि लहे ॥ १० ॥ सर्व० ॥ए५१॥

॥ ढाल ॥ राग रामग्री ॥ महावनमांहे मृगलो॥

॥ ए देशी ॥

॥ रुषभ कहे नर सांभलो, एकमित्र कीजें सार॥ विषम कामें काज आवे, साह्यनो दातार ॥ १ ॥ तेमाटें एक मित्र करवो, समान जेहनो धर्म ॥ धन प्रतिष्ठा जस आप सरिखो, तेहशुं मैत्री परम ॥२॥ गुणबुद्धि जेहनी आप सरिखी, लोभें हीणी जेह ॥ एक मित्र एसो करे जे, सुखी होये तेह ॥३॥ महो टो मित्र जो घरे आवे,करे ते धननी हाणी ॥ आपण ने बहु मान न दीये, मान मनमांहे आणी ॥४॥ प्रीति सहेजें वडा संघातें, होय गुणनुं हेज ॥ विषम काम

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेह आप करतां, राज मंत्री तेज ॥ ५ ॥ नहानो मित्र ते वडा केरुं, करे विषमुं काज ॥ उक्त जे पंचाख्यानमांहे, सुणो जांखुं आज ॥ ६ ॥ यूथहस्ती उंदर वनमां, आवियो एक वार ॥ हिरण्यगर्न तिहां कहे उंदर, करो नाग विचार ॥ ७ ॥ आ वनमांहें कां ऊतरो, उंदरा बहु चंपाय ॥ न्हानो मित्र तुम काम आवशे, मानजो गजराय ॥ ८ ॥ करी मैत्रीने नाग चाल्यो, अवर वन ते मांहि ॥ राज सुन्नटें खाडा खणीया, गज सकल पडिया त्यांहि ॥ ए ॥ हिरण्य गर्न तेणें वेगें समरयो, आव्यो वनमाहें ऊठि ॥ कोडीबद्ध उंदरा केडे, फरया गजनी पूंठ ॥ १० ॥ पगें माटी सबल ठेली, उंदरे पूरी खाड ॥ गज सकल ते गया नाशी, जिहां पर्वत जाड ॥ ११ ॥ तेमाटें जोइ मित्र न्हानो, आवे महोटे काम ॥ महोटो मनमांहे चिंतवे पण, न चाले तिणें ठाम ॥ १२ ॥ सुचि तणुं वली काम जालो, करे केही पेर ॥ युगंधरीनुं काम जारें, मोती न आणे घेर ॥ १३ ॥ मीठानुं जे काम होवे, करे न सखरी खंरु ॥ सली तणुं जे काम होवे, करे केही परें दंरु ॥ १४ ॥ पाणी तणुं वली काम दूधें, नवि होये निरवाण ॥ न्हाना तणुं तेम काम महोटे,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नवि होये तुं जाण ॥ १५ ॥ तेणें मैत्री राख सहुशुं, म म वढो वयरी साथ ॥ किश्युं काम किहां तुंहिं थाये, चढे जूंका हाथ ॥ १६ ॥ पंमित खलने करी आगल, आप साधे काज ॥ जीन्न दंतनें लंठ जाणी, करे आगल आज ॥ १७ ॥ जांजे करडे दंत चूसे, चावी करी रस देह ॥ कठिण नरने करी आगल,स्वाद जिह्वा लेह ॥१८॥ प्रांहि कंटाला विना वलि, न होय विषमुं काम ॥ तींखा कांटा क्षेत्र राखे,आराम घरने गाम ॥ १९ ॥ तेमाटे तुं जाणजे, वढवुं नहिं कुण साथ ॥ व्यापार काजें न दीजीयें धन, मित्र केरे हाथ ॥२० ॥ पाडोशीशुं वढवुं पडे जिम, तिम जाण वणजह मांहि ॥ ते माटें नवि कीजीयें, व्यापार मैत्री ज्यांहि ॥ २१ ॥ मित्रघरे धन कदा मूके, साक्षी राखे त्यांहि ॥ ऋषन्न कहे हितशीख माटें, कथा आणी मांहि ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ ए७३ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ शेठ धनेश्वर धननो धणी, रत्न आठ लीधां तिहां गणी ॥ एक कोडी सोवननुं सही, मित्र घरें मूक्यां गहगही ॥१॥ नारी पुत्र न जाणे कोय, साखी लखत नहिं वली कोय ॥ मूकी तिहां गयो पर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गाम, मांदो शेठ पड्यो तेणें ठाम ॥२॥ सगां लोक मिल्यां तिहां बहु, पूछे धन किहां ताहरुं सहु ॥ शेठ कहे धन ठारो ठार, मुऊ विण ते नवि आवे बार ॥ ३ ॥ पण एक मित्र अछे मुऊ गाम, रत्न आठ मूक्यां तेणें ठाम ॥ अपावजो ते सुतने सही, मरण लहे साह एहवुं कही ॥ ४ ॥ लखत लेख आव्यो तस घरें, नारीपुत्र रुए बहु परें ॥ शोक निवारी वांचे लेख, मित्र बोलाव्यो विनय विशेष ॥५॥ रत्न आठ माग्यां जेटले, बोल्यो नहीं मुखथी तेटले ॥ वढे पुत्रने जय देखडे, करी लांघणुं तीहां कणे पडे ॥ ६ ॥ पिता मित्र कहे आ जो नवुं, ताहारा बापने शुं धन हवुं ॥ इम रत्न नाखंतो फर्यो, लख त साखीयो को नवि कर्यो ॥ ७ ॥ इम वलगे नवि आपे कोय, गयो रायनी पासें सोय ॥ करी वात मां मीने बहु, लखत साख विण वारे सहु ॥ ८ ॥ धन खोइ आव्यो निज घरें, तेणें रुषनो वारे बहु परें ॥ लखत साख विण नवि दीजियें, मैत्री नीचशुं नवि कीजीयें ॥ ए ॥ सर्व गाथा ॥ ए०२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ काची ए केरी जली, पाको जलो न बील ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भांगो तो भूपति भलो, मातो भलो न भील ॥१॥ सखी सहोदर छंमियें, जे होय हइये डुष्ट ॥ आपें क्युं नाहिं कढीयें, अहि डस्यो अंगुष्ठ ॥२॥ गेरु बेरु सारिखा, वहेरो नाहिं नरपाल ॥ गेरु पान रातां करे, बेरु करे कपाल ॥ ३ ॥ गंगा सायरमांहि वसे, मत्स्य डुगंधो देह॥अवगुण जास शरीरमां, फेस्यो न फीटे तेह॥४॥ दूधें सींच्यो लींबडो, थाण उस करी धूलेण॥ तोहि न छंके कडुआ पणुं, जातितणे गुणेण ॥५॥

॥ परजीया रागमां ॥ दोहा ॥

॥ पहेला प्रीति करेह, ऊंडुं आलोच्युं नहिं ॥ भीखाव्यांज भवेह, मीठा बोले माणसें ॥१ ॥ जेहवुं रातुं बोर, तेहवुं हैयुं डुर्जन तणुं ॥ भींतर कठिन कठोर, उपर दीसे रलियामणुं ॥ २ ॥ एउए ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुरतरु जाणी सेवियो, अरे निगुणा पलाश ॥ जब तें मुह कालुं कीयुं, तब में छंमी आश ॥ १ ॥ भमरे रान भमंतडां, अगरज कोस्यो कोय ॥ तास तणे भोलामणे, वंशज कोरे सोय ॥ २ ॥ एक पासें डुर्जन भलां, सज्जन न वसे चित्त॥ ठाया गुण तो जाणीयें, जोतां वडला गत्त ॥ ३ ॥ अग्नि जिस्यो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मित्रज हुवो, राख्यां रत्न तेणें आठ॥तेणें नीचा नरने तजो, राखो संतनी वाट ॥ ४ ॥ साचा साथें मैत्री करो,कदिएक पाडो काम॥ लखत साखि विना वली, सहि नवि दीजें दाम ॥ ५ ॥ सर्व गाथा ॥ ९९४ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ लखत करीने दीजें दाम, साख विना नवि कीजें काम॥शास्त्र कहे साचुं कीजियें, साखी चोर कने लीजीयें ॥ १ ॥ एक दृष्टांत इहां जाणियो, धन लेई चाल्यो वाणियो ॥ धूर्त्त विचक्षण ने वाचाल, वाटें चोर मल्या ततकाल ॥२॥ शेठें हरखी कर्यो जूहार, बोल्या चोर थई हुशियार ॥ लाव्य द्रव्य सघलुं अम देह, पछें जूहार लांबोज करेह ॥३॥ शेठ कहे ल्यो साखें करी, अवसरें पाछुं देजो फरी ॥ चोर कहे ए जोलो घणुं, किहां खोलशे घर आपणुं ॥४॥ हांसी काजें आगल धर्यो, रान बीलाडो साखी कर्यो ॥ लेइ द्रव्य मूक्युं वाणियो, आव्यो घेर लेइ प्राणीयो॥ ॥ ५ ॥ केटले कालें तस्कर त्यांह, आव्या वाणिग नगरीमांह ॥ घणी वस्तु करियाणां बहु,चोर ठेलख्यो वणिकें सहु ॥ ६ ॥ जाली द्रव्य माग्युं जेटले, नृप आगें पहोता तेटले ॥ न्याय करेवा बेठो राय, ल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खत साखी मागे तेणें गाय ॥ ७ ॥ साखी रानबी लाडो अढे, साह घेरथी लइ आव्यो पढें॥एक चोर कहे न होये एह, ए कालो तस काबर देह ॥ ८॥ वचनें बंधाणा जेटले, कूटी द्रव्य लीधुं तेटले ॥ वाणिकने घर लखमी थइ, साखी तेणें राखवो सही ॥ ए ॥ ठानी थापण नवि मूकवी, साखि विना ते नवि राखवी ॥ थापण धन वावरवुं नहिं, वणिज करेवो वाख्यो सही ॥ १० ॥ सर्वगाथा ॥ १००४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ थापण धन नवि खरचियें, राख्यो पाप अपार॥ परधन वातें वेगला, जस घर धर्मविचार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ धर्म विचार नर ते पण तरे, धन पुण्य गाम आवे तेम करे ॥ धर्म विलंब करे नहिं कदा, थोडूं थोडामांहे खरचे सदा ॥ १ ॥ घणुं मले तो खरचुं हवे, मूरख मन एहवुं चिंतवे ॥ चिंती लखमी कहियें मले, कहियें धर्म मार्गमां जले ॥ २ ॥ ते माटें होय कालिनुं काज, पंमित नर तुं करजे आज ॥ मरण न कोने पडखे कदा, धर्मकाम पहेलुं कर सदा ॥ ३ ॥ उद्यम म मूकीश वणजह तणो, थोडे लाभें

For Private and Personal Use Only

म म अवगुणो ॥ अतिहिं लोन्न न करवो कह्यो, सागर शेठ सागरमांहे गयो ॥ ४ ॥ शक्ति सारु कीजें इछाय, न्नीखारी चक्री नवि थाय ॥ कदाचित् न्नोजन पामे सार, बहु वांछ्युं नवि मले लगार ॥५॥ कलेश सोय पामे नर नेठ, जेम जगमां धनावो शेठ ॥ लाख नवाणुं सोवन धणी, करतो कोडि थयो रे वणी ॥ ६ ॥ पाम्यो कष्ट न हुइ कोडी, अति लोन्नें तस होये खोडी ॥ कदाचित् वांछ्युं पामे कोय, तो तृष्णा वाधंती जोय ॥ ७ ॥ तेणे लोन्न पंम्रित परिहरो, धर्म ऋद्धि थाये तिम करो ॥ धर्म अर्थ ने साधे काम, ते पंम्रित जगमां अन्निराम ॥ ८ ॥ कोइक एकलो सेवे काम, गले रूप तस देही श्याम ॥ वन हस्ती परें खाडे पडे, विषय विटंब्यो बहु रडवडे ॥ ए ॥ कोइक एकलो साधे अर्थ, तेहनो कुजको खाये गर्थ ॥ पोतें पापनुं न्नाजन थाय, जिम सिंह गज़ मारीने खाय ॥१०॥ कोइक एकलो सेवे धर्म, नवि पोसाये ते विण कर्म ॥ केवल धर्म यतिने जाण, श्रावकने त्रण वर्ग वखाण ॥ ११ ॥ धर्म न आराधे नर कोय, अर्थ काम सेवे ते दोय ॥ बीज विना कणबीनी परें, ते सुखीयो नवि होये घरें

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ १२ ॥ इह लोकें परलोकें सुखी, नहिं कदि नरने जांख्यो दुःखी ॥ ते सुख पामे धर्म पसाय, धर्म विना सहु दुःखीयो थाय ॥ १३ ॥ कोइ एक साधे धर्म ने काम, तो रण वाधे मूके ठाम ॥ धर्म अर्थ सेवे जो दोय, संतान सुख तस केइ परें होय ॥१४॥ धर्म अर्थ ने त्रीजो काम, त्रण वर्ग साधे नर जाम ॥ पूरो पुरुष जग ते कहेवाय, उंडो सेवे उंडो थाय ॥१५॥ तादान्विक नर कहियें तेह, मन चिंते धन धर्में देह ॥ एह पुरुष सघलामां सार, बीजो मूलह र अति असार ॥ १६ ॥ बाप तणुं धन दिये कुठाम, कदरी पुरुषनुं नावे काम ॥ नवि खाये सेवकने दिये, धर्म ठामें ते नवि खरचीयें ॥ १७ ॥ धर्म अर्थ न सेवे काम,कदरी पुरुष तेहनुं नाम॥तेहनुं धन गोत्री मागेह, हरे चोरने राजा लेय ॥ १८ ॥ अगनि नीर जोमि विणसशे, पुत्रादिक मली खय घालशे ॥नवि खाये दाटयुं उछसी, त्यारें पृथवी मनमां हसी ॥१९॥ कुण दाटे कोनुं ठे एह, एहने मोढे धूलि पडेह ॥ इम पृथवी चिंते तस ठार, जिम कुशीलिणी हसती नार ॥ २० ॥ सुतने बाप रमाडे जिसे, नारी कुशीलिणी हसती तिसे ॥ कुण हुलरावे कोणनो जण्यो,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेम पृथ्वीयें करपी गण्यो ॥ २१ ॥ कीडी माखी करपी तणुं, संच्युं बीजा खाता घणुं ॥ तेमाटें डाह्यो नर होय, त्रण वरगने साधे सोय ॥२२॥ अर्थ का मनुं जो नहिं कर्म, तो आराधे एकलो धर्म ॥ पुण्यें वइजव पामे जदा, चार जाग धन करतो तदा ॥ ॥२३॥ एक जाग धन जोमें धरे, वणज जलो एक जागें करे ॥ एक जाग पुण्य ठामें जोय, खरच करे एक जागें सोयं ॥२४॥ श्या माटें ए कह्युं में कथी, धन आतम कुण वहालां नथी ॥ तोहे पुरुष धीरज आदरे, आठे ठाम नवि लेखुं करे ॥ २५ ॥ सज्जन मित्र शुज स्त्रीने काम, निर्धन बांधव धर्मह ठाम ॥ विवाद व्यसनें रिपुखय जदा, न करे खरचनुं लेखुं तदा ॥ २६ ॥ कुमार्गें जाती कोडी कही, हजार सोवन परें राखे सही ॥ रूडे ठामें लख खरचे जोय, तिहां विचार करे नहिं सोय ॥ २७ ॥ इसी धात होये जेहनी, लखमी न मूके केड तेहनी ॥ एक दृष्टांत इहां आणियो, वसंत पुर सुबुद्धि वाणियो ॥ ॥ २८ ॥ सुत परण्यो धन खरची करी, आणी महोटानी दीकरी ॥ तेल तणुं टीपुं एक पडे, ससरो पाग रखे चोपडे ॥२९॥ वहू चिंते मुज लागुं पाप, दीसे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करपी वरनो बाप ॥ खावुं पहेरवुं ने खरचवुं, ए ससराथी ते नहिं हवुं ॥ ३० ॥ संदेह भांगवा काजें वहू, कहे मुज मस्तक दुःखे बहु ॥ मांरु मांरु करे आक्रंद, ससरे मेल्यां वैदज वृंद ॥ ३१ ॥ आण्यां औषध तिहां अनेक, करे पोटली केरा शेक ॥ शिर दुःखतुं न रहे जदा, ससरो वहूने पूछे तदा ॥३२॥ सदाये शिर दुःखे के आज, वहू बोली मुख मूकी लाज ॥ क्यारें क्यारें शिर दुःखतुं, मोती खरडे ते रहे अतुं ॥ ३३ ॥ ससरो ताम खुशी त्यां हवा, मोती थाल लागा भरडवा ॥ त्यारें वहू कहे रह्युं दुःखतुं, टल्युं शल्य जे मनमां हतुं ॥ ३४ ॥ पूछ्युं तेलनुं टीपुं पड्युं, ते तुम पागरखे चोपड्युं ॥ हमणां मोती भरडो बहु, ए मुज संदेह टालो सहु ॥ ३५ ॥ सस रो कहे सांभल रे वहू, वशीकरण ए धननुं सहु ॥ कामें लाख सोवन खरचियें, कुमार्गे टीपुं नवि दीजी यें ॥ ३६ ॥ एणें वचनें वहू हर्ष अपार, ससरानी बुद्धि सुविचार ॥ रुषभ कहे हितशिक्षा एह,होय सुबुद्धि सुणे नर जेह ॥ ३७ ॥ सर्वगाथा ॥ १०४१ ॥

॥ ढाल ॥ हवे राणी पदमावती ॥ ए देशी ॥

॥ जेह सुणे नर शुभ परें, वाधे बुद्धि अपार रे ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुन्नथानक धन खरचतां, न घटे ते निरधार रे ॥१॥ ए जिनवरतणी देशना ॥ ए आंकणी ॥ कूप आराम थी काढतां, देतां महीषीने गायो रे ॥ तिम न घटे कहिये वली, वाधतुं सहि धन जायो रे ॥ २ ॥ ए० ॥ जिम रे विद्यापति शेठने, लखमीनो नाहिं पारो रे ॥ नवि खरचे शुन्नथानकें, आवी कमला तेणि वारो रे ॥ ३ ॥ए०॥ कहे स्वप्नांतर शेठने, दश दिन तुम घर वासो रें ॥ पछें तुम मंदिर नवि रहुं,कर सुख न्नोग विलसो रे ॥ ४ ॥ ए० ॥ शेठें सकल धन वावखुं, पोख्यां खेत्र तो सातो रे ॥ दीन उद्धार ते बहु किया, कीर्त्ति हुई विख्यातो रे ॥ ५ ॥ ए० ॥ लखमी आवी बीजे दिनें वली, बोलाव्यो नर त्यांहि रे ॥ वणिक कहे रंक बाहेर हिंरू, शीद आवी छे तुं आंहीं रे ॥ ६ ॥ ए० ॥ सुख न्नरी सुवे छे उरडे, नृप चोरनी बीहीको रे ॥ जंबूयें छांकी कुलखकणी, प्रन्नवें लीधी दिख्को रे॥ ७ ॥ ए० ॥ लखमी कहे जई नवि शकुं, तें पग घाली छे बेडी रे ॥ घर न्नखुं दीठुं पहिला परें, आवी लखमी अण तेडी रे ॥ ८ ॥ ए० ॥ वली खरचे धन वाणीयो, नहिं मुझ लखमिनुं कामो रे ॥ फरी फरी घर न्नरे लाछडी, मूके नाहिं तस ठामो रे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ए ॥ ए० ॥ दश रे दिवस लगें खरचतो, लखमी वाधती जायो रे ॥ लछी कहे हुंतो इहां रही, सेवी श तुम तणा पायो रे ॥ १० ॥ ए० ॥ वणिक कहे बोल्युं दोयनुं, होशे सहि अप्रमाणो रे ॥ तेणें घर छोडीने वन गयो, पाम्यो राज सुजाणो रे ॥ ११ ॥ ॥ ए० ॥ अनुक्रमें दीक्षा ते ग्रहे, नव पांचमे मो ख्यो रे ॥ तेणें कारण धन खरचियें, पात्र जोइने पोखो रे ॥ १२ ॥ ए० ॥ जो धन खरचतां गयुं घटी, शोक ते न करे लगारो रे ॥ धैर्य धरे गये आवते, धर्माधर्म विचारो रे ॥ १३ ॥ ए० ॥ शोक धरे पापी पुरुषडो, गयुं मुऊ खरचतां धन्नो रे ॥ अथवा उंधुं पडयुं देयतां, मूरख चिंते निश दिन्नो रे ॥१४॥ ॥ ए० ॥ पुण्यवंत इस्युं नवि चिंतवे, खरचे धन शुन्न ठामें रे ॥ व्यवहार शुद्धें धन मेलतो, थोडुं होय बहु कामें रे ॥ १५ ॥ ए०॥ इहां दृष्टांत बे वणिकनो, जांखे रुषजनो दासो रे ॥ ए हितशिक्षाने जे सुणे, पहोंचे तेहनी आशो रे ॥ १६ ॥ ए० ॥ १०५० ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ देव जशो नर एहवे नाम, बेहु मित्र चाल्या धनने काम ॥ कनक कुंमल पडयुं वाटें एक, देखे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देव ते सबल विवेक ॥ १ ॥ व्रतवती नवि लेतो तेह, देखी पाछो वेगें टलेह ॥ बीजे वंची लीधुं त्यांहिं, पड्या तणुं पातक नहिं क्यांहि ॥ २ ॥ देव उपर हूवो अति खुशी, एणें कुंमल नवि लीधुं धंशी ॥ एहने नाग हुं आपीश सहि, इस्युं विचारी वली यो ग्रही ॥ ३ ॥ वेगें आव्या बीजे गाम, वेच्युं कुंम ल तेणें गाम ॥ वहोरी वस्तु तिहां बेहु जणे, चाली आव्या गाम आपणे ॥ ४ ॥ वहेंचे वस्तु देखे तव अति, देव कहे आवडी क्यां हती ॥ जशो कहे में कुंमल लियुं, ते वेच्युं धन वेंची दीयुं ॥ ५ ॥ देव कहे नवि लेउं एह, जाये मूलगुं महारुं जेह ॥ पो तानुं तव वेंची लिये, बाकी सहु ते मित्रने दीये ॥ ६ ॥ रातें चोर लेइनें जाय, पछे वसाणां मोघां थाय ॥ वाध्युं धन सुखीयो हुवो देव, व्यवहार तणी जो हुंती टेव ॥ ७ ॥ जशोमित्र हुवो अति दुःखी, देवमित्र ते कीधो सुखी ॥ श्रावक थयो व्यवहारक शुधि, वाध्युं धन जो निर्मल बुद्धि ॥ ८ ॥ ते माटे न्यायें मेलवुं, बीजो दृष्टांत आहीं केलवुं ॥ चंपा नगरी सोम नरेंद, दीये दान ते मन आनंद ॥ए॥ सूर्यग्रहण होये एक वार, तेड्यो मंत्री कर्यो विचा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

र ॥ पात्र जलुं कोण आणे गाम, दीजें दान तस पुण्यने काम ॥ १० ॥ कहे प्रधान एक विप्र अपार, पण न्याय द्रव्यतणोज विचार ॥ राजाने तो वली विशेष, जेहनां पाप तणो नहिं ठेक ॥ ११ ॥ देना रानुं चित्त विशुद्ध, लेनारो अति निर्मल बुद्ध ॥ दो हिला दोय मिले जगमांय, जोह मिले तो पुण्य बहु त्यांय ॥ १२ ॥ जलुं क्षेत्रने बीज सुसार, तिहां कणे अन्ननो होय अंबार ॥ क्षेत्र बीज जो होय असार, तिहां अन्न पुण्य तणो विचार ॥ १३ ॥ इस्यां वच न मंत्रीनां सुणी, खरो विचार करे पुरधणी ॥ थइ हमाल करे वहित्तरुं, व्यवहार शुद्ध धन मेले खरुं ॥ १४ ॥ सूर्य ग्रहणनो अवसर थयो, त्यारें राय नि ज राजें गयो ॥ तेड्या ब्राह्मण मळ्या अनेक, अने क दान दिये धरी विवेक ॥ १५ ॥ एक निर्लोभी हूतो जेह, पाड चडावी तेड्यो तेह ॥ राजा पाय न मीने कहे, कोई धन महारुं नवि ग्रहे ॥ १६ ॥ विप्र कहे सुण नांखुं तुज, राजपिंड नवि कल्पे मुज ॥ लोभी जेहने लेवुं रुचे, ते ब्राह्मण सहि नर गें पचे ॥ १७ ॥ मधु मिष्ट विष सरिखो पिंड, लेइ विप्र म म आतम दंड ॥ पुत्र मांस जखे ते सार,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजपिंरु ते अतिही असार ॥ १८ ॥ दश सोनार सम द्विज एक, जेहनां पापतणो नहिं छेक ॥ द्विज दश सम एक चक्री होय, दश चक्री सम आहेडी जोय ॥१९॥ दश आहेडी सम वेश्याय, दश वेश्या सम एक राजाय ॥ ते माटें सुण नृपति कहुं, राज पिंरु निश्चें नवि ग्रहुं ॥ २० ॥ पगे लागीने कहे रा जान, व्यवहारशुद्धें देउं तुम दान ॥ आठ दाम पर सेवा तणा, लेतां गुण तुझ मुझने घणा ॥ २१ ॥ नृप वचनें दाम लीधा जिसे, अन्य विप्र मन खीज्या तिसे ॥ तेडी तेहने सोवन देह, खाइ रह्या थोडे दिन तेह ॥ २२ ॥ आठ दाम लेई जे गयो, मूकी कोथलीमांहे रह्यो ॥ खाये खरचे देतो दान, नवि खूटे जेम नवे निधान ॥२३॥ ज्ञानव्रत वाध्या जट दोय, नृप जंगार वधंतो जोय ॥ न्यायद्रव्य तणो महि माय, रुषज कहे नृप सोम कथाय ॥ २४ ॥ १००२॥

॥ ढाल ॥ प्रभु चित्त धरीने अवधारो मुझ वात ॥ ए देशी ॥

॥ कहुं चोजंगी दाननी जी, न्याय तणुं वित्त सार॥ दान सुपात्रें जो दिये जी, उत्तम जंग अपार ॥सोजा गी सुणो चोजंगी रे एह ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ देव

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मनुज रिद्धि पामियें जी, व्रतसिद्धि गति तस होय ॥ धन सारथवाह परें जी, शालिनद्र परें जोय ॥ सो० ॥ २ ॥ वित्त वारु ते शुं करे जी, सलियो पात्र असार ॥ लख्कनोजी बांनण परें जी, ते नवि पामे पार ॥ सो० ॥ ३ ॥ नव नव नमतां पामियो जी, थोडा थोडेरो नोग ॥ सेचनक हाथी ते थयो जी, श्वेत नद्र तन योग ॥ सो० ॥ ४ ॥ जे ब्राह्मण आगले थइ जी, करतो जमणज वार ॥ उगरतुं तो आपतो जी, पात्र मुनिने आहार ॥ सो० ॥ ५ ॥ नंदीखेण नर ते थयोजी, श्रेणिकनो सुत जेह ॥ पंच सयां नारी वर्या जी, पात्र दान फल एह ॥सो०॥६॥ हस्तिवनें ग्रही आणियो जी, श्रेणिकने घरे सोय ॥ नंदीखेणने निरखतो जी, जाति समरण होय ॥ सो० ॥ ७ ॥ हस्ती तोये बूडियो जी, पहेली नरगें जाय ॥ पात्र दोष तणो वली जी, बीजो नंगो कहाय ॥ सो० ॥ ८ ॥ वित्त नूंरुं पातर नलुं जी, त्रीजो नांगो एह ॥ देतां बहु सुख पामतां जी, सुण दृष्टांत कहेय ॥ सो० ॥ ए ॥ बीज विभेद इक्षुकंदनुं जी, जाये जेणी रे वार ॥ काशबीज तिहां वावतां जी, उगे शेलडी सार ॥ सो० ॥१०॥ नूमि नली माटें वली जी, ऊगे इक्षुरस कंद ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पात्रदान जगमां वडूं जी, टाले चउगति फंद ॥सो० ॥ ११॥ जिम खड देतां आपती जी, दूध सकोमल गाय ॥ दूध पड्युं मुख सापनें जी, ते विष विरुउं थाय ॥ सो० ॥ १२ ॥ स्वाति नक्षत्र तणुं वली जी, जल अहिना मुख मांय ॥ ते विष जगमां नीपन्युं जी, मोती शीपशुं त्यांय ॥ सो० ॥१३॥ जूउं विमल ते वाणियो जी, द्रव्य नहिं तस सार॥ जिन प्रासा द करावतां जी, शुन्न गति पाम्यो अपार ॥ सो० ॥ ॥ १४ ॥ धन कुमारग तणुं वली जी, नवि खरच्युं शुन्न काय ॥ ते दुर्गति पामे सदा जी, अपजश गामो गाम ॥ सो० ॥ १५ ॥ मुम्मण नंद ने सागरो जी, मेली धननी रे कोड ॥ खरच्या विण नरगें गया जी, म म हो एहनी जोड ॥ सो० ॥ १६ ॥ वली चोथो नेदज कहुं जी, अन्याय तणुं धन जास ॥ पोखे तेह कुपात्रनें जी, सुख नवि होवे तास ॥ सो० ॥ १७ ॥ हणी धेनुने पोखतो जी, काग तणे नर जेह ॥ फल नवि पामे दाननुं जी, शुन्नगति न लहे तेह ॥ सो० ॥ १० ॥ अन्याय तणे द्रव्यें व ली जी, करे श्राद्ध बाल ॥ पूर्वज तृपता त्यां नहिं जी, होय तृपता चंमाल ॥सो० ॥१९॥ प्रायें धन अन्या

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

थनुं जी, तेहथी पाप अभिमान ॥ ऋषभ कहे रांका परें जी, सुणजो जसु शिर कान ॥ सो० ॥ २० ॥११०२ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ सुणजो सुपुरुष जस शिर कान, रांकें मेल्युं पापनिधान ॥ घणा ठेतस्या करी अन्याय, करी पाप दुर्गतिमां जाय ॥१॥ तेणें कारण नर भाह्यो जेह, अकर अन्याय करे नहिं तेह ॥ देश विरुद्ध टालतो सुजाण, नवि खंमे राजानी आण ॥ २ ॥ लोकविरुद्ध नर तुं टालजे, कालविरुद्धथी अलगो थजे ॥ धर्म विरुद्ध करो म म कदा, जैनधर्म आराधो सदा ॥ ३ ॥ दान शील अने तप भाव, आराधो नर मननें भाव ॥ धर्म तणा कह्या चार प्रकार, भाव भलो तो पुण्य प्रकार ॥ ४ ॥ सर्वगाथा ॥ ११०६ ॥

॥ ढाल ॥ कायावाडी कारमी ॥ ए देशी ॥

॥ भाव भलो तो पुण्य घणुं, सुणी एक कथाय ॥ नगर विशाला मांही वली, वीर विहरता जाय ॥ भाव भलो तो पुण्य घणुं ॥ ए आंकणी ॥१॥ प्रतिमा धर उभा रह्या, तप तिहां चउमासी ॥ जीरण शेठ निमंत्रणुं, करी जाये प्रकाशी ॥ भा० ॥२॥ अति घणी भावे भावना, धन्य हुं जग मांही ॥ चार मासनुं पारणुं,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वीर होशे आंहीं ॥ जा० ॥ ३ ॥ बारमा देव लोकें आउखुं, तेणें बांध्युं ज्यारें ॥ उंचो चढे सो आतमा, सुणी डुंडुनि त्यारें ॥ जा० ॥ ४ ॥ अनिनव मिथ्या त्वी घरे, जीखारी पेरें ॥ अडद अपाव्या त्यां सहि, वृष्टि हुइ बहु पेरें ॥ जा० ॥ ५ ॥ जीरण शेठ सुण तो नहिं, देवडुंडुनि कान ॥ थोडी वारमांहे ऊल हलत, तो केवल ज्ञान ॥ जा० ॥ ६ ॥ जाव अधि को ते वती, नावे तोहे पुण्य ॥ एणी परें देतां नो तरुं, ते जगमां धन्य ॥ जा० ॥ ७ ॥ एवुं निमंत्रणुं नर करे, अन्नादिक जेह ॥ औषध काज गुरु मुनि, तमो करजो तेह ॥ जा० ॥ ८ ॥ वले मंदिर एहवुं नहोतरुं, मुनि वरने देह ॥ जिन पूजी आवे तेडवा, मन हरख धरेइ ॥ जा० ॥ ए ॥ नाम लिये बहु व स्तुनां, विण वहोखुं पुण्यो ॥ मनें चिंते पुण्यज सही, वचनें वली मान्यो ॥ जा० ॥ १० ॥ दीधे कल्पडुम फल्यो, नवि पुण्यनो पारो ॥ नाम न ले घणी वस्तुनां, तेहनी हाणि अपारो ॥ जा० ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ जावें आहार नर आपे जेह, शालिजद्र रिद्धि पामे तेह ॥ औषध दीये श्राविका रेवती, तीर्थंकर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गति पामे सती ॥ १ ॥ रोग निवारे मुनिवर तणो, तेहनो महिमा जांख्यो घणो ॥ जीवानंद परें तुं जोय, गोत्र तीर्थंकर बांधे सोय ॥ २ ॥ वसति दान नुं पुण्य विशाल, तर्यो अवंती जे सुकुमाल ॥ वंक चूल जयंती सार, कोश्या पामी जवनो पार ॥ ३ ॥ इस्यां दान जावें करी देह, आ जव परजव सुखीया तेह ॥ जावें शील धरे सुकमाल, होये नीर टली अग्नि जाल ॥ ४ ॥ शीलें नारद सिद्धा सही, जं बूनी कीर्त्ति गहगही ॥ थूलिजद्र मुनि जींते काम, चोराशी चोवीशी नाम ॥५॥ शेठ सुदर्शन सूधो कह्यो, शिवकुमार नर शीलें रह्यो ॥ एणी परें पाले जावे शील, वंकचूल परें पामे लील ॥ ६ ॥ जावें तप त पतां सुख थाय, पांमव परमुख मुक्तें जाय ॥ काकं दी नगरीनो धणी, तप तपतो निश्चल एकमनी ॥ ७ ॥ सर्वार्थ सिद्धि पाम्यो सार, वली सुख पाम्यो सनत कुमार ॥ नंदीषेण तप लब्धि करी, सोवनवृ ष्टि करे घर खरी ॥ ८ ॥ अर्जुनमाली ने दृढप्रहार, तपें करी ते पाम्या पार ॥ जाव सहित जे तप आ दरे, मुक्ति तणे मारग संचरे ॥ ए ॥ जावे जावना चोथी जेह, केवलज्ञान लहे नर तेह ॥ जरत हुउं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जावें केवली, मृगलांने सुरनी गति फली ॥ १० ॥ वलकलचीरिय परमुख सहु, जावें केवली हूआ बहु ॥ जाव वडो एणें संसार, जावें तरियां नर नें नार ॥ ११ ॥ धर्म तणा ए चार प्रकार, आराधतां पामे भव पार ॥ वली सांभले आगम सार, मुनिवर देखी हरख अपार ॥ १२ ॥ आगम साधुनी निंदा करे, श्रावक शक्ति वारंतो तरे ॥ अभयकुमारें वाख्या सहु, तेहने पुण्य हवुं त्यां बहु ॥ ॥ १३ ॥ जीखारी हुवो संयम धणी, तेहनें लोक करे रे धणी ॥ उंठ कोडि आणे मूकी सही, स्त्री घरवात न जाये कही ॥ १४ ॥ बुद्धि विचारे अभयकुमार, पंच रत्न लीधां तेणें सार ॥ नगर लोकने तेडी कहे, पांच तजे ते पांचे ग्रहे ॥ १५ ॥ पृथ्वी पाणी तेउ वाय, वन स्पति मूके जे जाय ॥ पांच रत्न नर पामे तेह, एक तजे तो एकज लेह ॥ १६ ॥ कोनो जीव न चाले त्यांहि, ए मूक्या नवि जाये क्यांहि ॥ अभयकुमार कहे कहुं तुम्ह अमो, निंदा साधु करो कां तुमो ॥ १७ ॥ पांच रत्न नवि हाथे धर्यां, विण लीधे पांचे परिहर्यां ॥ त्रसकाय तेणें नवि हणे, कंचन पत्थर सरिखा गणे ॥ १८ ॥ काम जोग जेणें परिह

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ख्या, वणज सकल जेणें दूरें कस्या ॥ तिस्या साधुने निंदो कांय, लोक सकल लाज्या मनमांय ॥ १ए ॥ न करे निंदा को साधुनी, स्तुति करता साह्यमुं ते हनी ॥ साधु तणी एम रक्षा करे, अन्नय कुमार परें ते तरे ॥ २० ॥ आगम तणी बहु रक्षा करे, ग्रंथ अपूरव शीखे शिरे ॥ गोत्र तीर्थंकर बांधे तेह, जाणा वनार पुण्यनो नहिं छेह ॥ २१ ॥ थोडी प्रज्ञा जो पण होय, तोहे उद्यम न मूके सोय ॥ माषतुषा दिक साधुनी परें, उद्यम मन राखे बहु परें ॥ २२ ॥ पहेले जव बंधव ते दोय, माष तुषा ते लोढो होय ॥ जाणतां ज्ञान घणुं तेणें ग्रह्युं, आचारिय पद त्यारें थयुं ॥ २३ ॥ अनेक पुरुष पूछे तेणी वार, बेसी न शके एक लगार ॥ मन चिंते लागो संताप, घणुं जाण्युं पदवीनुं पाप ॥ २४ ॥ ज्येष्ठ भ्रात मूरख ते सुखी, पंकित पद म्हारे थयो दुःखी ॥ इस्युं चिंतवी कीधो काल, मानव जव पाम्यो ततकाल ॥ २५ ॥ बीजे जवें लीधी दिस्काय, पूरवकर्मैं मूरख थाय ॥ उद्य म न छंके तोही लगार, पद गोख्युंज संवत्सर बार ॥ २६ ॥ मा तूसो मा रूसो वली, गोखंतां हूउं के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वली ॥ तेणें उद्यम ढांकेवो नहिं, कृषन्न कवि एम बोल्यो सही ॥ २७ ॥ सर्वगाथा ॥ ११४४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बोले साचुं मुखथकी, न्यायें मेले धन्न ॥ व्यवहार शुद्धि ज्यारें हवी, आहार शुद्धि तव जन्न ॥१॥ मन चोखुं होये तदा, बोले मधुर अत्यंत ॥ लोक वल्लन्न होये तदा, समकित बीज वधंत ॥ २ ॥ समकित सूधुं राखतो, श्रीदेव गुरुने धर्म ॥ तत्त्व त्रण आराधतो, धोतो आठे कर्म ॥ ३ ॥ कृषन्न देव चरणे नमे, गुरु गौतम गुणवंत ॥ जैनधर्म आराधीयें, लहियें सुख अनंत ॥ ४ ॥ ए त्रण तत्त्व आराधियें, दूषण पांच टालेह ॥ भूषण पांचे आदरे, समाकित दृष्टि तेह ॥ ५ ॥ सर्वगाथा ॥ १२४९ ॥

॥ ढाल ॥ चाल चतुर चंद्राननी ॥ ए देशी ॥

॥ समकित मूल सोहामणां, ग्रहे व्रत ते बार रे ॥ तेहने देवता नित्य नमे, गति नहिंज असार रे ॥ समकित मूल सोहामणां ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ छेदन भेदन नवि लहे, लहे दीरघ आय रे ॥ देव तणी गति ते लहे, वहेलो मुक्तिमां जाय रे ॥ स० ॥ २ ॥ अविरतिनाम कर्मज जशे, नहिं अगड अजाण रे ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वीर संयोगिक श्रेणिक नरो, नहिं काग मंसपच्चक्का
ण रे ॥स०॥३॥ एह अविरतिज देवता, नव जोगमां
जाय रे ॥ जीव अभ्यास जेहवो करे, तेहवो आगलें
थाय रे ॥ स० ॥ ४ ॥ जेणें व्रत पालियां निर्मलां,
आगलें व्रत संयोग रे ॥ व्रत विना तुऊ नवि गले, विष
म कर्मना रोग रे ॥ स० ॥ ५ ॥ तेणें व्रतभंग न कीजी
यें, कदी जोहि खंमाय रे ॥ तेहिज आगल व्रत पालि
यें, जेम कर्म धोवाय रे ॥ स० ॥ ६ ॥ नियमी वस्तु
अण सांभरे, धरी जो मुखमांहे रे ॥ तेह पाढी नर
नाखतो, व्रतभंग नहिं त्यांहि रे ॥ स० ॥ ७ ॥ जोहि
खाधा पढी सांभरे, बीजे दिवसें पालेह रे ॥ मिछा
दुक्कड देइ करी, आराधक होय तेह रे ॥ स० ॥ ८ ॥
वस्तु अचित्त संशय पडी, नर वावरे जेह रे ॥ तेहने
भंग हुउं सही, व्रतनो वली तेह रे ॥ स० ॥ ए ॥
घणोज मांदो ने भूतें दम्यो, थयो परवश जंत रे ॥ सर्प
मुखे अग्निग्रहें वली, पाले तो गुणवंत रे ॥स०॥१०॥
नवि पले तोहि नियमज तणो, भंग ते नवि होय रे ॥
चार आगार कह्यां सही, सकल नियममां जोय रे ॥
स० ॥ ११ ॥ सहेजें वातनो भंग करे, विराधक कह्यो
तेह रे ॥ तेणें निज गुरु हेलीयो, दुःख पामतो देह

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रे ॥ स० ॥ १२ ॥ वस्तु वडी जग आखडी, राखेज थिर मन्न रे ॥ कमल शेठें जोइ तालने, कढा लहे सोवन्न रे ॥ स० ॥ १३ ॥ कमल शेठ हतो मो कलो, न लहे धर्मनी वात रे ॥ अंत समय दीये आ खडी, कमल शेठनो तात रे ॥ स० ॥ ॥ १४ ॥ निरख जे ताल कुंजारनी, पछें जोजन काज रे ॥ कमल शेठ लीये आखडी, आणी बापनी लाज रे ॥ स० ॥ १५ ॥ तात परलोकें पहोतो सही, पाले कमल ते व्रत रे ॥ एक दिवसें बेठो जुंजवा, सांजख्युं तस तुर्त्त रे ॥ स० ॥ १६ ॥ अध विचें उठीने ते धस्यो, कुंजारने बार रे ॥ घेर कुंजार दीठो नहिं, गयो सीम मझार रे ॥ स० ॥ १७ ॥ ताल जोइने पोकारीयो, दीठी दीठी में एह रे ॥ इण अवसरें कढा काढतो, प्रजापति जेह रे ॥ स० ॥ १८ ॥ मनमां बीहीनो ते अति घणुं, तेडे व णिगने तेह रे ॥ तेह जूख्यो झोडी आवियो, करे जोजन गेह रे ॥ स० ॥ १९ ॥ प्रजापति तिहां चिंतवे, ए छे वाणीयो रंद रे ॥ रखे जइ कहे दीवान मां, कढावे पछे कंद रे ॥ स० ॥ २० ॥ कनक कढा लेइ आवियो, शेठ कमलने घेर रे ॥ ल्यो ए वहेंची स्वामी लीजीयें, करे विनति बहु पेर रे ॥ स० ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ २१ ॥ सोवन कढा धरी उरडे, संतोष्यो ते कुंनार रे॥ कमलशेठ मन हरखीयो, जग अगड ते सार रे॥ स० ॥ २२ ॥ अमिय समाणीज जाणजो, माय ताय गुरु शीख रे ॥ जेह माने नहिं बापडा, मागे ते नर नीख रे ॥ स० ॥ २३ ॥ सर्वगाथा ॥११७२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ समकितशुं धरि आखडी,मनमंकड वश राख॥ मानव नव ले दोहिलो, नमतां नवनी नाख ॥ १ ॥ सुर विषयी नारक दुःखी, तिर्यंच विवेक विनाय॥ धर्म अले मानव नवें, जीव न चेते कांय ॥ २ ॥ काम नोग विष शल्य समा, करे ते सुखनी हाणि ॥ रुष न कहे नर सेवतां, लहियें दुर्गति खाणि ॥ ३ ॥ इंद्रिय घोडा चंचला, उन्मारग चालंत ॥ राखे तुं सा रथि थई, वारे नरग पडंत ॥ ४ ॥ बांनण धोय म धोतियां, पन्नर चीर म फाड ॥ धो नर इंद्रिय आप णां, जे जुजूई मोहाड ॥ ५ ॥ जिह्वा मोह कढोट डी, जींत्युं न जाये मन्न ॥ रुषन कहे जे वश करे, ते नर जगमांहे धन्य ॥ ६ ॥ आंख म मींचीश मींच मन्न, नयण निहाली जोय ॥ जो मन मींचीश आपणुं, अवर न दूजो कोय ॥ ७ ॥ राति गमाई

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सोवतें, दिवस गमायो खाय ॥ हीरा जिस्यो मनुष्य भव,कोडी बदलें जाय ॥ ८ ॥ सर्वगाथा ॥ ११८० ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ एलें जनम खोयो नर तेह, व्रत अंगें नवि धरता जेह ॥ नियमधरा जगमें पूजाय, वली परलोकें सुखीया थाय ॥१॥ धरी नियमने समकित धरे, उचित जालव तुं बहुपरें ॥ उक्ति सुणो म म होजो बाल, एणी परें बोले उपदेशमाल ॥ २ ॥ पामे लोकमांहि कीर्त्ति तेह, उचित कस्यानो महिमा एह॥ पिता माता भाइ स्त्रीतणुं, उचित साचवे सुतनुं घणुं ॥ ३ ॥ सज्जन गुरु पोतानी नात, परतीर्थी भांख्या बहु भांत ॥ उचित एहनां जे साचवे, रुषभ कवि गुण तेहना स्तवे ॥ ४ ॥ सर्वगाथा ॥ ११८४ ॥

॥ ढाल ॥ सोय अनाथी परभवें होय ॥

॥ अथवा ॥ जं सुरसंघा ॥ ए देशी ॥

॥ गुण तेहना नर सहुको रे गाय, जेह पिता ना पूजे रे पाय ॥ उचित पितानुं त्रणे प्रकारें, मन ह वचन काया करी ठारे ॥ गुण० ॥ १ ॥ शरीर तणी शुश्रूषा करतो, सेवक परें बोल शिर पर धरतो॥ पाय धोवे नवि सामुं बोले, सोय पुत्र कह्यो रुषभने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तोले ॥गुण०॥२॥ मर्दन करे कर साही उगाडे, वचन कह्युं ते जोमि न पाडे ॥ वचन प्रमाण करेवा काम, प्रमाण देशोटो कीधो रे राम ॥ गुण० ॥ ३ ॥ सुणी अ वचन मन आनंद धरतो, चित्त न बेसे तोहीपण करतो ॥ सखर सेवा करे गुरुने पितानी, रहस्य प्रकाशे वात जे छानी ॥ गुण० ॥ ४ ॥ थोडुं जाण्यो करे वृद्धनी सेवा, ते होय बुद्धि लोकोने देवा ॥ जेहवुं लहे गरढो कोइ एको, तरुण कोडिमांही नहिंज विवेको ॥ गुण० ॥ ५ ॥ उक्त पूछ्युं नृप पाटु मारे, कवण दंरु देवो तस त्यारें ॥ तरुण कहे मारेवो तेहने, नृप निर्द्धंछे मनमांहि एहने ॥ गुण० ॥ ६ ॥ गरढो कहे तस पूजा कीजें, वस्त्र पहेरावीने ज्रूषण दीजें ॥ नरपति हरख्यो तेणी वारो, पूजी बाल पहेराव्यो रे हारो ॥ गुण० ॥ ७ ॥ तेणें कारणें नर माह्यो जेहो, वृद्धवचन माने सहु तेहो ॥ एक हंस सुत एकशो आठो, चुनि करवाने लीये जव वाटो ॥ गुण० ॥ ८ ॥ साथें बाप गमे नांहिं गरढो, तरुणा पूछें श्यो ए जरछो, वात कहे सुणो पुत्र गमारो ॥ कबि एक गरढो करे तुम सारो ॥ गुण० ॥ ए ॥ एक दिन सघला पाशमांहे पडता, पूछे तातने हंसा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रे रडता ॥ तात कहे अचेतन थाजो, काढी नाखे तव ऊडी रे जाजो ॥ गुण० ॥ १० ॥ काढे पारधी पाखें रे झाले, रुंध्या श्वास नवि हाले ने चाले ॥ जाणी मुआ तस दूर नखावे, मली एकठा सहु उडी रे जावे ॥ गुण० ॥ ११ ॥ पुत्र पिताना गुण बहु गावे, तात पसायें जीवता रे जावे ॥ ऋषन्न कहे गरढानी रे माने, ते हनी कीर्त्ति नवि माये रे पाने ॥ गुण० ॥ १२ ॥ सर्वगाथा ॥ ११९६ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ पानामां कीर्त्ति नवि माय, जे नर माने मात पिताय ॥ ते सुख पामे जगमांहि सार, श्रेणियथी जिम अजय कुमार ॥ १ ॥ मात पितानें कहे गह गही, तमो जिनवरने पूजो सही ॥ गुरुसेवा पडिक्कमणुं करो, सात खेतरें धन वावरो ॥ २ ॥ दीन उद्धार तीरथनी जात्र, पुण्यें पोषो महोटां पात्र॥ सकल मनोरथ पूरा करो, इस्युं कहे उत्तम दीकरो ॥ ३ ॥ शास्त्रमांहे कह्युं छे नेट, मात पिता गुरु सूधो शेठ ॥ जिननो धर्म करावे जोय, तेह पुरुष उंशिंगण होय ॥ ४ ॥ ते उपर छे युगतिय घणी, कहुं त्रिजंगी गणांग तणी ॥ त्रणनो उंशिंगण नवि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

थाय, शेठ धर्मगुरु मात पिताय ॥ ५ ॥ तेल सत सहस पाकने ग्रही, करे अभ्यंगन पोतें सही ॥ सुगंध पीठी अंगें करी, तेल उतारे सुत बल धरी॥६॥ सुगंधनीरें धूए शरीर, लूहे लेइ निर्मल चीर ॥ पहे रावे शोले शिणगार, विचरे भाखे कृष्ण विचार॥७॥

॥ छप्पय ॥

॥ कुंठ मुंठ सम राय, मर्जन कुंमल कानें ॥ वस्त्र तिलक वाणही, मुकुट मुख शोभे पानें ॥ खड्ग मुद्रिका हाथ, चंदन अंगें लगावे ॥ कमरें पटंबर सार, बुरिका त्यांहि बनावे ॥ विद्या विनीत शीलें भला, शोल शणगार शोहे नरा ॥ कवि कृष्ण एणी परें उच्चरे, पुण्य पुरुष पामे खरा ॥ १ ॥ सर्वगाथा ॥ १२०४ ॥

॥ ढाल चोपाईनी देशी ॥

॥ भला पुत्र होये जग जेह, एणी परें भगति करे वे तेह ॥ पूठी वात करे नित्य नमे, भूख्यो तात पोतें नवि जमे ॥ १ ॥ रूपा तणी मूके आरुणी, भोजननी मांके मांरुणी ॥ मूके कनक तणो त्यां थाल, अति उज्ज्वलने अतिहि विशाल ॥ २ ॥ मन गमता पीरसे त्यां पाक, सुख पामे जिह्वा ने नाक ॥ बहु पक्कान्न न लाधे पार, सिंघ केसरिया मोद

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क सार ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ "चउसठि कुसुमरसा, चउ रासी राय दव्व नेयव्वा ॥ सोल सुगंधा वासा, दसविहा हुंति केसरिया ॥ ४ ॥" पीरसे एम जगति करे लाख, शाल दाल अढारे शाक ॥ वल्ली कपूरें वास्यां पान, अति मीठुं संजलावे गान ॥ ५ ॥ जाव जीव खंजे लेइ फरे, एणी पेरें जगति जलेरी करे ॥ पूढे गौ तम सुणि जिनराय, तेह पुत्र उंशिंगण थाय ॥ ६ ॥ ना उंशिंगण तोहि न थाय, पूढे गौतम कहो उपा य ॥ जांखे वीर पमाडे धर्म, उंशिंगण थावानो मर्म ॥ ७ ॥ को एक महा व्यवहारी जेह, आवी वखारे बेठो तेह ॥ वाणोतरनो बहु परिवार, आव्यो माग वा एक कुमार ॥ ८ ॥ शेठ तणे मने आवी दया, पूढी वात करी मन मया ॥ कुमर कहे मुऊ मात पि ताय, बाल पणे परलोकें जाय ॥ ए ॥ धन खोयुं तव शी विधि करुं, ते कारण हुं परघर फरुं ॥ सुंदर जाणी राख्यो घरे, जोजन वस्त्र दिये बहु परें ॥१०॥ यौवन वय परणाव्यो सही, अलगो सोय रह्यो गह गही ॥ सुबुद्धि पणुं तेहमांहि अपार, तेणें तेहने हाथे व्यापार ॥ ११ ॥ वाणोतरी टाले तेणी वार, सुत चोथ करतो व्यापार ॥ नर परदेशें गयो ते जिस्ये,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बहु लखमी पाम्यो ते तिस्ये ॥ १२ ॥ सरव शेठ तणुं मोकले, मांम्यो वणज पोतें एकले ॥ धन उपार्जी आव्यो घरे, करे विनय शाहानो बहु परें ॥१३॥ नामुं करी नदावा लेह, बीजे नगरें रह्यो जइ तेह ॥ कालें शेठ ते जांग्यो घणुं, अडवा लायुं जमवा तणुं ॥१४॥

॥ दोहा ॥

॥ दिन सघला सरखा नहिं, म करो पुरुष गुमा न ॥ ब्रह्मदत्त चक्री जिस्या, जमतां न मिले धान ॥ १ ॥ दाधी नगरी द्वारका, नाठा बांधव दोय ॥ तर श्यो त्रिकम वन मुउं, मान म करश्यो कोय ॥ ॥ २ ॥ समय कर्षण समय धन, समय सहु समर ह ॥ गोपन राखी अर्जुनें, तेह नाथा तेह हह ॥ ३ ॥ लज्जा मति सत्य शील कुल, उद्यम वरत पलाय ॥ ज्ञान तेज मानज वली, ए धन जातां जाय ॥ ४ ॥ सायर पुत्री त्रिकम पियु, चंद सरीखा नाउ॥ लछी हींमे घर घरें, महिला नीच सनाउ ॥ ५ ॥ लछी गइ वाणिग तणी, हियडे करे विचार॥ हवे घर बेसी शुं रहुं, अन्यदेश मुझ सार ॥ ६ ॥ दंत केश नख अधम नर, निज थानक शोजंत ॥ सुपुरुष सिंह गयंद मणि, सघले मान लहंत ॥ ७ ॥ इस्युं विचा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

री निकल्यो, गांठे नहिं कांय धन ॥ पंथें थाये दोहि लो, दुःखें पामे अन्न ॥ ८ ॥ सर्वगाथा ॥ १२२६ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ अतिहि दोहिलो थाये जिस्ये, वाणोतर ते आव्यो तिस्ये ॥ देखी शेठ असंभ्रम थाय, साहामो जइने लागो पाय ॥ १ ॥ वलगी कोटें रोयो घणुं, किस्युं रूप दीसे तुम तणुं ॥ सुवन रत्न मणि मोति जेह, भूषण वस्त्र गयां क्यां तेह ॥ २ ॥ शेठ कहे तुं अलगो थयो, त्यार पछें द्रव्य सघलो गयो ॥ खूटयुं पुण्य पूर्वनुं जदा, राख्युं किस्युं रहे नहिं तदा ॥ ३ ॥ वाणोतर रोतो नवि रहे, तव मेता सघला एम कहे ॥ घेला शेठ थया सहि होय, भीखारी गले वलगी रोय ॥ ४ ॥ वाणोतरने वास्या वढी, एहणें पोषी मुऊ चांमडी ॥ एहने कोलिये हुं उछस्यो, एणें मुऊ व्यहारी कस्यो ॥ ५ ॥ हुं वाणोतर ए मुऊ शेठ, गुण न समाये मारे पेट ॥ एम करि घर तेडी करी, इंद्र सरीखो कीधो फरी ॥ ६ ॥ एक दिवस मेल्यो परिवार, पेखुं पोतियुं तेणी वार ॥ सरव वखारी धन भूषण हार, आपे शेठने तेणी वार ॥ ७ ॥ पूछे गौतम त्यां गहगह्यो, वाणोतर उशिंग

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ण थयो ॥ जिन कहे तो उंशिंगण थाय, जैन धर्म पमाडे ताय ॥ ८ ॥ वाणोतर कहे शाहने फरी, रिद्धि पाम्यो जिनधर्मे करी ॥ तुमें आराधो जिननो धर्म, थोडे दिवसें फले तुम कर्म ॥ ए ॥ यति पासें ते तेडी गयो, सुणे सूत्र तिहां गहगह्यो ॥ पडिक्कम णुं सामायिक करे, जिन पूजी जिनने मन धरे ॥ १० ॥ वाणोतर करतो व्यापार, वाधे वादलो शे ठनो सार ॥ आवे लाज आपे शेठने, थोडे दिवसें वाध्यो ते धनें ॥ ११ ॥ आवी आसता जिन उपरें, खरच्युं धन तेणें बहु परें ॥ अंतें दीक्षा लीधी सार, सद्गति पाम्यो तेणी वार ॥ १२ ॥ पूठे गौतम जि नवर तणे, उंशिंगण हूउं एम जणे ॥ वीर कहे उं शिंगण थयो, बीजो भेद कवि ऋषभें कह्यो ॥ १३ ॥

॥ ढाल ॥ कदलीवननो रे सूडलो ॥ ए देशी ॥

॥ गौतप स्वामी रे पूठता, सांभलो जिनवर राय के ॥ जेणें जिनधर्म पमाडियो, उंशिंगण किम तस थाय के ॥ गौतम० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ यति य तिनी श्रावक श्राविका, सुणि तस धर्मकथाय के ॥ पामी धर्म थयो देवता, करे हवे एटला उपाय के ॥ गौ० ॥ २ ॥ धर्माचारय आपणो, पीड्यो रोगें

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वली कोइ के ॥ सुर समाधि आवी करे, तो उंशिंग
ण होय के ॥ गौ० ॥ ३ ॥ दुर्निक्षमांहीथी काढ
तो, मूके सुनिक्षमांही के ॥ अटवीमांहेथी उद्ध
रे, मूके वसति होय ज्यांही के ॥ गौ० ॥ ४ ॥ एम
उंशिंगण थाये प्रनु, नांखे वीर तिहां नाय के ॥ क
बीग्र पड्यो गुरुधर्मथी, आणे तेहने ठाय के
॥ गौ० ॥ ५ ॥ जिम आषाढाचारज मुनि, अणसण
बहुने उच्चरावे के ॥ कहे तुमें होश्यो रे देवता, कहे
जो मुऊने इहां आवी के ॥ गौ० ॥ ६ ॥ कोइ कहे
वा नवि आवीयो, व्यग्र मुनि तिहां होय के ॥ तव
एक चेलो रे आपणो, वाहालो सबलज सोय के
॥ गौ० ॥ ७ ॥ मरण समय थयो तेहने, अणसण
उच्चराव्युं त्यांहिं के ॥ गुरु कहे चेला थइ देवता, क
हेवा आवजे आंहिं के ॥ गौ० ॥ ८ ॥ ते पण ना
व्यो रे गुरु नणी, उपन्यो ताम संदेह के ॥ धर्म नाहिं
जगमांही सही, खोटा देवता तेह के ॥ गौ० ॥ए॥
खाधुं पीधुं ते आपणुं, खोटो संयम वास के ॥ उठी
पंथें रे नीकल्यो, घर मांऊवानी आश के ॥ गौ० ॥
॥१०॥ चेले देवतायें ते लह्युं, आव्यो अटवीनी मांहि
के ॥ नूषण नरियो रे ठोकरो, थइ वांदतो त्यांहि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के ॥ गौ० ॥ ११ ॥ पूछ्युं नामज तेहनुं, पृथ्वीकायियो कुमार के॥ भूषण लोभें रे मारियो,चालियो तेणी वार के ॥ गौ० ॥ १२ ॥ आगल अप्कायियो मल्यो, मारी लीधां आभरण के ॥ पछें तेउकायियो मारियो, वायुकायियाने मरण के ॥ गौ० ॥ १३ ॥ वनस्पति त्रसकायियो, मार्या कुमार ते दोय के ॥ पछे सुर संघ विकूर्वतो, वंदन आवे सहु कोय के ॥गौ० ॥ १४ ॥ वांदी वलगा रे छोकरा, त्रोडी झोली ते ताम के ॥ पूछे गुरु किस्यां भूषणां, मुनि कहे एहनुं काम के ॥ गौ० ॥ १५ ॥ एम कही मुनिवर चालियो,दीठुं नाटक ताम के॥ जोतां खट मास वही गया, न कर्युं बीजुं कांइ काम के ॥ गौ० ॥ १६ ॥ आगल जातां रे आवियो, शिष्य करी मूलगुं रूप के॥ वांदी देवता एम कहे, आ शुं तुमह सरूप के ॥गौ० ॥ १७ ॥ गुरु कहे तुं शिष्य नावीयो, पडिउं दुःख अपार के ॥ शिष्य कहे नाटक जोअतां, तुम होय केटली वार के ॥ गौ० ॥ १८ ॥ गुरु कहे थोडीशी वेला हुइ, चेलो कहे षट मास के॥ नाटक मोह्यो नवि आवियो,तुमो मन राखोह ठाम के ॥गौ०॥१९॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तुमें खट कुमारज मारिया, विरुश्रा घरवास काम के ॥ गौ० ॥ २० ॥ सर्वगाथा ॥ १२५ए ॥

॥ ढाल ॥ ढानो रे बूपीने कंता क्यां ॥

॥ रह्यो रे ॥ ए देशी ॥

॥ इंडियवश पड्योतो जीवडो रे, एटलां वानां खोय रे ॥ तप ने कुल शोजा देहनी रे, पंमितपणुं गयुं जोय रे ॥ मुनिवर ऊंपे इंडिय आपणां रे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पामे कलंकने आपदा रे, संग्रामनां डुःख सोय रे ॥ इंडियवशें कुल वालुउं रे, बहु डुःख पाम्यो जोय रे ॥ मु०॥ २ ॥ रूडे शब्दें नवि राचियें रे, रूडुं रूप म जोय रे ॥ गंध फरस रस जलें तजे रे, धर्म उद्यम करे सोय रे ॥ मु० ॥३॥ १२६२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ काचो पिंम न पोखियें, अजक्ष्य न कीजें आहार ॥ धन ढंढे इंडिय दमे, ते नर पामे पार ॥ १ ॥ मंदिर महिला सुत सुता, एणें मोह्यो सहु लोक ॥ पांच दिवसने कारणें, पाप करे जीव फोक ॥ २ ॥ क्रोध घणो निड्रा बहु, आहार तणो नहिं पार ॥ जोगें तृप्ति न पामतो, तस डुर्गति निर्धार ॥ ३ ॥ विषय विडंब्यो रावणो, खोया दसा ते वीश ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खोयुं राज लंका तणुं, खोयां सघलां शीश ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ ते धन्या ते साधुज नाम, तेहने नित्य कीजें परणाम ॥ जेह अकारय विरमी रह्या, अखंम व्रत पालंता कह्या ॥ १ ॥ थूलिजद्र जिम साचो यति, अकार्य काम न कीधुं रति ॥ वेश्याघर चोमासुं रही, व्रत अखंम पाले गहगही ॥ २ ॥ वडुं व्रत जे पर्व त प्राय, उपाडवा तत्पर रुषिराय ॥ इस्यो साधु युवती संग जोय, संयम भ्रष्ट बहु परें होय ॥ ३ ॥ मुनि तपियो मस्तक लोचतो, एकासण वांकल पहेरे तो ॥ पण ते अब्रह्म जाचे पठें, ब्रह्मा होय तो मुऊ नवि रुचे ॥४॥ जणुं गणुं तेहनुं परिमाण, जे चेत्या ते पंमित जाण ॥ कष्टें पड्या प्रारथीया यति, जेह अकार्य न करे रति ॥ ५ ॥ सुदरिसण शेठ तणी परें रहे, पाडे कष्ट अजया तस कहे ॥ नवि बोल्यो नवि खंम्युं शील, आ जवें परजवें पाम्यो लील ॥६॥

॥ दोहा ॥

॥ नवयौवन स्त्री देखी करी, नयन रहे जस ठाम ॥ रुषज कहे जन जड करी, तस चरणे शिर नाम ॥ १ ॥ काम जोग उपजोग बहु, पाम्या अनंती

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वार ॥ तोहे अपूरवनी परें, माने सुख संसार ॥२॥ जोगऋद्धि फल धर्मनां, जाणे एहवुं जंत ॥ तोय मूढ हृदय धणी, पाप कर्मे राचंत ॥ ३ ॥ नंदीषेण नीचें कुलें, पण तप संयम सार ॥ नृप वसुदेवज ते थयो, हरिवंश कुल शणगार ॥ ४ ॥ राजसुता विद्याधरी, बहोंतेर सोय हजार ॥ काहन पिता परण्यो सही, अहो तपनुं फल सार ॥ ५ ॥ तप संयमथी म म चलो, स्वामी थ्यो घरवास ॥ चेतो गुरु पाठा वलो, हुं चेलो तुम दास ॥ ६ ॥ सर्वगाथा ॥ १२७८ ॥

॥ ढाल ॥ कदली वननो रे सूडलो ॥ ए देशी ॥

॥ नाटक ए में देखाडियुं, विकुरव्यो संघ सार के ॥ कुमर तणुं रूप में धर्युं, म म खुउं संयमजार के॥गौतम स्वामी रे पूठता ॥१॥ ए आंकणी ॥ धर्मविषे मुनि थापियो, दीधो प्रतिबोध त्यांहिं के ॥ पश्चात्ताप गुरु त्यां करे, लाज्यो घणुं मनमांहि के ॥ गौ० ॥ २ ॥ कहे धिक्कारज मुऊ हुवो, हुउं जाणतोहि गमार के ॥ सूत्रना तां तणा कारणें, त्रोड्यो रयणनो हार के ॥ ॥ गौ० ॥३॥ नहिं मुऊ चेलो रे गुरु सही, ए हुउं बंधव तात के ॥ जेणें दुर्गति रे पडतां थकां, आवी ग्रह्यो मुऊ हाथ के ॥ गौ० ॥ ४ ॥ पाठो संयम आदरे, पात

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क आलोए सोय के ॥ गौतम पूछे रे वीरजी, शिष्य उंशिंगण होय के ॥ गौ० ॥ ५ ॥ शिष्य उंशिंगण ए थयो, नांखे वीर जिणंद के ॥ ऋषन कहे हितशी खडी, सुणजो श्रावकवृंद के ॥ गौ० ॥६॥ १२०४ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ वीर कहे श्रावक आदरो, मात पितानी नक्ति ज करो ॥ धर्म पमाडो धर्मी धूरें, आर्यरक्ति सूरि नी परें ॥ १ ॥ दशपुर नगर अनोपम कहे, पुरोहित सोमदेव त्यां रहे ॥ सोमरुद्रा नारी जेहने, आरिय रक्ति सुत तेहने ॥ २ ॥ चउद विद्या नणी आव्यो जिस्ये, खूशी माय न हूई तिस्यें ॥ पूछे पुत्र नहिं हर्षे अपार, माय कहे सुण पुत्र सुसार ॥ ३ ॥ पूरव चउद नणो तो नल्ल, पातक रूपियां काढो शल्ल ॥ पुत्र कहे ते पामुं क्यांहीं, माय कहे मुऊ मामो ज्यांहिं ॥ ४ ॥ तोसलीपुत्र नणी ते चल्यो, साढी नव शेलडी लइ मल्यो ॥ विप्रकुमरने दिये तसु गाय, कुमर मोकले जिहां निज माय ॥ ५ ॥ देखी शेलडी कस्यो विचार, पूर्व साडा नव नणे कुमार ॥ कुमर गयो तव गुरुनी संग, उपाशरामां पेठो रंग॥६॥ ढढ श्राव कने पूठें गयो, शीखी वांदे त्यां गह गह्यो ॥ सघली विधि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रावक परें करी, उलखी गुरु बोलावे फरी ॥ ७ ॥
कुमर कहे चउद पूरव जेह,मया करीने जणावो तेह॥
तोसलीपुत्र कहे सुणो कुमार, संयमविण नहिं पूरव
सार ॥ ८ ॥ लीधी दीक्षा उंमयुं सहु, श्रुतसिद्धांत
जणाव्यो बहु ॥ गुरु कहे पूरवनो खप करो, वयर
स्वामी चरणे अनुसरो ॥ ए ॥ गुरुवचनें त्यांहांथी
चालियो, उज्जेणीमांहे आवियो ॥ भद्रगुप्त आचा
रय जिस्ये, आर्यरक्षित निजामे तिस्ये ॥१०॥ शीख
दीये आचारिय सही, वयरस्वामीथी अलगो रही ॥
जणजे पूरव तुं गहगही, सुणी वचन चाल्यो ते वही
॥ ११ ॥ वयरस्वामी अवंतीमांहि, वादी जणवा
लाग्यो त्यांहिं ॥ पूर्व साडा नव जणियो जिस्ये,
आर्यरक्षित मुनि थाको तिस्ये ॥१२ ॥ फल्गुरक्षित
भाई छे जेह, आव्यो शोधवा वेगें तेह ॥ प्रतिबोधी
तस दीक्षा देह, बिहुं दसपुर नगरें आवेह ॥ १३॥
भूपति बहु सामइयुं करे,नगरमांहि मुनिवर संचरे॥
कुटुंब सकल वांदे गहगही, प्रतिबोधी दीये संयम
सही ॥ १४ ॥ पिता न बूझे तेणें गाम, धोती विण
न नमुं परगाम ॥ जनोइ छत्र अनेज उपान, हाथ
कमंडल ते शुभवान ॥ १५ ॥ अतिशयवंत गुरु

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुखें कही, सोमदेवने दीक्षा सही ॥ शिष्य सघला ने एम शीखवे, कोइ म वांदश्यो तातने हवे ॥१६॥ एक एकने वंदन करे, सोमदेवथी पाछा फरे ॥ तव खीजीने जांखे इस्युं, वड लोढाई नहिं तुम किस्युं॥ ॥ १७ ॥ मुनिवर कहे नहिं वांकुं अमो, छत्रादिक केम राखो तुमो ॥ सघलां वानां छंके तहिं, पण गोचरीयें जाये नहिं ॥१८॥ गाम गया गुरु शिष्यने कही, तातने आहार म देजो सही ॥ आणे वस्तु मुनि बेठो जोय, सोमदेवने न दिये कोय ॥ १९ ॥ एक छठ मन पाखे होय, पछें गुरु मुनि आव्या सहु कोय ॥ तातें राव करी त्यां जिस्यें, चेला उपर खीजे तिस्यें ॥२०॥ गुरु झोली घाली सज्ज थाय, लाजी बोल्यो गुरु पिताय ॥ हुं पोतें जाइश गोचरी,चाल्यो आहार लीये ते फरी ॥२१॥ सर्व गाथा ॥ १३०५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मुनिवर करतो गोचरी,मधुकरनी परें आहार॥ सार करे संयम तणी, खरचरी करे खूआर ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ एक व्यवहारीने घर गयो, लेइ लाडूने ते आ वीयो ॥ वहेंची दीधा मुनिने फरी, वली चाल्यो मुनि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वर गोचरी ॥ १ ॥ तेहज व्यवहारी ने घेर, जातां लज्जा थइ बहु पेर ॥ बारीनी वाटें ते जाय, बत्रीश लाडु लहे मुनिराय ॥ २ ॥ निमित्त विचारे गुरुजी तिस्यें, बत्रीश पाट महारा चालशे ॥ इस्युं विचारी तातने त्यांहि, सबल प्रशंस्यो मुनिवरमांहि ॥ ३ ॥ साधुपंथ पाले सहु तजी, एक धोतियुं राख्युं हजी ॥ एक दिन एक मुनिवर करे काल, परठववा चाल्या ततकाल ॥४॥ गुरु कहे साधु तणुं ए शरीर, परठवि आवे मुनिवर धीर ॥ तेहना लाज तणो नहिं पार, उठयो तात तव सुणी विचार ॥ ५ ॥ सोमदेवने गुरु त्यां कहे, मनह तुमारुं ठामें नवि रहे ॥ देव दा नव जद्द ठलशे जदा, शब नाखीने बेसो तदा ॥६॥ सोमदेव कहे नाखुं नहिं, वेगें शब उपाड्युं तहिं ॥ त्यारें गुरु शिष्यने शीखवे, काढो धोतीयुं ताणी हवे॥ ॥ ७ ॥ ताणी धोती चेलो लावियो, सखर चलोटो पहेरावीयो ॥ शरीर परठवी आव्यो जिस्ये, तातें ठबको दीधो तिस्यें ॥ ८ ॥ वारे गुरु शिष्य न लहे किस्युं, पहेरो धोतियुं जो मन वस्युं ॥ सोमदेव कहे शी हवे धोती, जेहनी मुनिवर करता ठोती ॥ ए ॥ प्रतिबोधी कीधो जल यति, जेहने पाप न लागे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रती ॥ पूछे गौतम वीरने वली,तव वलतुं जांखे केव ली ॥ १० ॥ ए उंशिंगण तातने थयो, आर्यरक्षित वांदेवो कह्यो ॥ रुषनदास कहे हितशिक्षाय, उत्तम मानो मात पिताय ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ १३१७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मात पिताने मानियें, जिम जग कुरमा पूत॥ गृहस्थपणे जस ऊपन्युं, केवलज्ञान अद्नूत ॥ १ ॥ गृहस्थ तणे वेशें रह्यो, लेतो निरवद्य आहार ॥ मात पिता प्रतिबोधियां, दीधो संयमनार ॥ २ ॥ राज गृहीनो राजीयो, महेंद्रसिंह नरींद॥पटराणी कुरुमा तिस्यें, करतां बेहु आनंद ॥ ३ ॥ कुरुमा पुत्र सुत तेहनो, धुरथी नहिं उन्मत्त ॥ यौवन वय पाम्यो जदा, तब ते विषय विरत्त ॥ ४ ॥ एक दिन साधु नणतां सुणी, देतो प्रेमें कान ॥ जातिसमरण पामियो, कीधुं हैडे ज्ञान ॥ ५ ॥ देवतणो नव देखतो, मानव हुउं हुं आंहीं ॥ गर्नतणां उःख दोहिलां, चेत्यो चित्तशुं त्यांहि ॥ ६ ॥ असार स्वरूप संसारनुं, देखे तिहां कुमार ॥ शुक्ल ध्यान ध्यातो तिहां, विरुउं काम विकार ॥ ७ ॥ ध्यानरूप अग्नि करी, कर्म इंधण बा लंत॥केवल ज्ञानें ऊलहल्यो, जाणे नाव अनंत ॥ ८॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मन चिंते चारित्र ग्रहुं, तो दुःख मात पिताय ॥ न खमे विरह ए माहरो, हंसा ऊडी जाय ॥ए॥ केवल ज्ञानथकें रह्या, आणी अनुकंपाय॥ मात पिता माहारां वली, रखे दोहिलां थाय ॥१०॥ अनुक्रमें इंडें वली, दीयो यतिनो वेश॥ मात पिता विस्तारियां, नाहिं सुत गुणनो ठेक ॥ ११ ॥ कुरमापुत्र कथा सुणी, माय ताय नमी पाय ॥ एक कहे समजे सहु, किसी दिये शिक्षाय ॥ १२ ॥ सर्वगाथा ॥ १३२ए ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥शीख देउं कवि कहे ते वती, कबी एक चूक वडाने अति ॥ सीतानो पति चूको राम, मृग देखीने धायो जाम ॥ १ ॥ जग निपायो पोतें सहु, सोवन मृग नी पायो नहु ॥ पण चूक्यो जे पूतें धस्यो, अवसर चूके महोटा इस्यो ॥२॥ रामें वनमें मढी करी लीह नावे आघो वनचर सिंह ॥ सीता लीह लोपी कां गइ, एणें थानकें ए चूकी सही ॥ ३ ॥ सिंहनाद मूके रावणो, सुणतां व्यग्र हुउं लखमणो ॥ जाएयुं साद करे ठे राम, हार्यो जाणी धायो ताम ॥ ४ ॥ मूकी मढी ने आघो गयो, एह वरांसो महोटो थयो॥ एह विचार कर्यो नहिं ताम, केम हारे सीतापति

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राम ॥ ५ ॥ चोथो चूको हनुमंत वीर, लंका वन पहोतो गंभीर ॥ सिताशुं जेणें कीधी वात, लेइ नाव्यो ते चूक विख्यात ॥ ६ ॥ अवधिज्ञान हवुं आणंद, नवि माने गौतम गुणचंद ॥ वीरतणें पूठे तो सही, मिछाडुक्कड देतो जई ॥ ७ ॥ चूको महि पति शंख नरनाथ, कलावतीना काप्या हाथ ॥ अम रकुमारें मूकी नार, वणिकपुत्र चूको तेणें ठार ॥८॥ विप्रवचनें चूक्यो नूपाल, नंदें डुहव्यो मंत्री सक माल ॥ रामचंड नृप चूको सहीज, सीता पासें करा वी धीज ॥ ए ॥ दमयंती जव मूकी रान, त्यां नल चूक्यो निश्चय मान ॥ विमल वरांस्यो तिहां कणे कह्यो, अश्व चढी जिन आगल रह्यो ॥ १० ॥ अनेक एम नर चूका सही, धर्मउपदेश देवो गहगही ॥ सम जे ते माहापण आदरे, मात पितानी नक्ति करे॥११॥

॥ दोहा ॥

॥ ते कारण नर सांजलो, नक्ति करो निजता त ॥ तेहथकी अधिकी कही, जेह पोतानी मात ॥ १ ॥ सेव करे उवद्वायनी, नक्ति करे दश दीय ॥ एकदा आचरज तणी, पुण्य सरीखुं थाय ॥ २ ॥ आचारियने पूजतो, कोइक पुरुष सोवार ॥ तात न

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गति एकदा करे, तेनुं पुण्य अपार ॥ ३ ॥ पिता तणी पूजा करे, फरी फरी वार हजार ॥ मात ज्ञक्ति एकदा करे, पुण्य तणो नहिं पार ॥ ४ ॥ पशुआं मात तिहां लगें, धावे जव लगें जाय ॥ अधमा नारी नावे जदा, तव लगें माने माय ॥ ५ ॥ मध्यम मात तिहां लगें, हाथे नहिं घर बार ॥ उत्तम मात जीवित लगें, सदा करे तस सार ॥ ६ ॥ पशुआं मात खुशी तदा, नानो पूंठे जाय ॥ मध्यम मात खुशी तदा, ज्यारें कुमर कमाय ॥ ७ ॥ उत्तम मात खुशी तदा, सुणती सुत अवदात ॥ लोकोत्तम माता खुशी, जस त्रिहुं ज्ञुवनें जात ॥ ८ ॥ पंच मात शास्त्रें कही, नृपनारी निज माय ॥ गुरुपत्नी सासू कही, उंरमान नमी पाय ॥ ए ॥ पांच पिता परें मानवा, पंड्यो जनम पिताय ॥ अन्नदाता विद्यागुरु, हणतां जे राखताय ॥ १० ॥ पंच ज्ञात शास्त्रें कह्या, मित्र अने मायजात ॥ रोगपालग सांथें ज्ञण्यो, मार गें कीधो साथ ॥ ११ ॥ उचित एहनुं साचवे, पूढे मननी वात ॥ सकल कला तस शीखवे, ज्ञुंजे सरी खा ज्ञात ॥ १२ ॥ हितबुद्धि शिक्षा दीये, जोह न समज्यो ज्ञात ॥ निरवहेवो तो सहि, पीये नीर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तस पात ॥ १३ ॥ न वढे बांधवशुं कदा, राखे वडा नी लाज ॥ भ्रात अठाणुं भरतना, मूके पृथ्वीराज ॥ १४ ॥ भ्रातें तेड्या बल करी, मिली कृषन कहे जात ॥ राज दीयो कीजें वडा, भांख्यो स्वामीतात ॥ १५ ॥ अठाणुं गाथा तणुं, कह्युं अध्ययनज त्यां हिं ॥ श्री सूयगडांग धुरें सही, जुउं सिद्धांतज मांही ॥ १६ ॥ पुत्र अठाणुं वारिया, म वढो बंधव साथ॥ वढो कषायज चारशुं, नावो जमने हाथ ॥ १७ ॥ बंधव अठाणुं बूझिया, मूके लोन कषाय ॥ वढवा भागा वातशुं, लीधी तेणें दीक्षाय ॥ १८ ॥ सुख मां सांभरे नारया, दुःखमां सांभरे माय ॥ बांधव त्यारें सांभरे, मस्तकें वागे घाय ॥ १९ ॥ भूख्यां भोजन समरियें, तरश्यां समरे नीर॥ रणमांही बांधव समरियें, माडीजायो वीर ॥ २० ॥ रयणी थोडी रण घणां, पूतें चढ्यां केकाण॥ बांधव होय तो मां रियें, नहिं कर उमवी पराण ॥ २१ ॥ वडुउं काको माउलो, भाणेजो भतरीज ॥ उचित एहनुं साचवे, भगति भलेरी कीज ॥ २२ ॥ उचित नारीनुं साच वे, ते सुखीयो संसार ॥ कृषन कहे हित शीखडी, को म म दुहवो नार ॥ २३ ॥ आणंद कहे नर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सांजलो, स्त्रीय समी नाहिं आथ ॥ रसोइ निपावे रतन जणे, शके तो आवे साथ ॥ २४ ॥ पुण्यें लाधे पद्मिनी, अने गुणवंती नार ॥ शीलवती ने सुंदरी, रम झम करती बार ॥२५॥ सर्वगाथा ॥१३६५॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ उचित नारी तणुं साचवे, रात दिवस मुख मधुरुं लवे ॥ मीठां वचन समुं वली जोय, वशीकरण जगमां नवि होय ॥ १ ॥ कला ऊपर को धन नहिं, जीवदया सम धर्म न कहिं ॥ संतोष उपर सुख को नथी, मधुर वचननो गुण तिम अति ॥ २ ॥ वचनें संतोषे निज नारी, कुटुंब लक्ष्मी दिये सो अनुरागी ॥ अलंकार पहेरावे सार, स्त्रीशोभें शोभे नर तार ॥ ३ ॥ निशासमय फरती ते वार, कुसंगथी विणसे शुभ नार ॥ राजपंथने परघर बार, बहु भ्रम तां विणसे ऋषि नार ॥ ४ ॥ दूती जात नर दूरें वार, न रहे पियरें धोबी बार ॥ जागरण जानें जावुं निवार, नारी कंत नहिं जस बार ॥ ५ ॥ उपाशरे देहरे जो जाय, त्यारें वडेरी पूठें थाय ॥ घरनां कारज भलावे सहु, ते घरसूत चलावे बहु ॥६॥ नवरी ते चपलाइ करे, हास्य विनोद दुर्मति

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आदरे ॥ पैशाचक वाणिगनी कथा, जांखुं सोय सुणी में यथा ॥ ७ ॥ पैशाचक वाणिग कहेवाय, ए कदा झाड तलें थंभिल जाय ॥ एक देव रहे तेणें झाड, दुर्गंधी दुःख लागुं हाड ॥ ८ ॥ देव ठलेवा करे उपाय, पण वाणिगने ठल्यो न जाय ॥ अणु जाणह जस्सग्गो कही, नित्यें थंभिल जाये सही॥ए॥ सुर चिंते एणें लोपी लाज, उपाय करीने मारुं आज ॥ थंभिल बेठो वाणिग जिस्ये, मागो सुर तूठो कहे तिस्ये ॥ १० ॥ जे तुं काम कहे ते करुं, खूटे काम तो प्राण तुझ हरुं ॥ गले पाश देवें आणियो, ठेतस्यो नवि जाये वाणियो ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ १३७६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लेतो रुसे देतो रुसे, उपर चढावे पाड ॥ वली विषधरने सेवीयें, पण नवि सेवियें किराड ॥ १ ॥ आगें डुंटेरा ठेतरा, खुंदी डुंबडो दोय ॥ लेइ हथी यार तस्कर हण्या, वणिग समो नहिं कोय ॥ २ ॥ वाणिक घर तस्कर गयो, ठांव्यो कोगल ताम॥ नाह क धोयो बापडो, लेइ न शक्यो तस दाम ॥३॥ नजा नूप नुअंगमा, ए मुख दोहला डुंत ॥ वैरी वींठी वा णियो, पूतें दाह देअंत ॥४॥ सर्वगाथा ॥ १३८० ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ढाल ॥ सो सुत त्रिशला ॥ ए देशी ॥

॥ आंगल मूकी मांगल वासे, मांगल मूकी मूल प्रकाशे ॥ जो जाणे तो पाडे हासें, वणिगकला थी दैवे नासे ॥ १ ॥ सर्वगाथा ॥ १३७१ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ वणिक ठेतस्यो ते नवि जाय, तेणें देवने कह्यो उपाय ॥ सात भूमि घर आहीं कणे करो, मणि मोति हीरे ते भरो ॥ १ ॥ देव कहे में कीधुं सही, वेगो बोले वणिग गहगही ॥ वली करो हीं मोला खाट, उपर पाथरो मशरु पाट ॥२॥ वली निपा उं चार वखार, भरो करियाणां तेणें ठार ॥ देव कहे में कीधुं एह, भांखो बीजुं जोइयें जेह ॥ ३ ॥ हेम वंत परवत वन जई, सात ताड उंचो ते सही ॥ अस्यो वांस आणो ते अहिं, उपर आडूं लाकडुं तहीं ॥४॥ रोपी वांसने सांकल आणी, सात ताड लांबी ते जाणी ॥ एक ठेडो उंचो बांधजे, पठी मांक डो तुं पण थजे ॥ ५ ॥ सांकल आप गलामांहि जडो, वांस उपर जइ उतरो चढो ॥ बीजुं काम होये ते करे, नहिंकर सदा लगें एम फरे ॥ ६ ॥ देव कहे हुं मोहोकम हतो, मुऊथी वाणिग ए दीप

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तो ॥ पुण्य पाधरुं वणिक अपार, न शक्यो सुर ठे तरी लगार ॥ ७ ॥ कामथकी परवारे नहिं, चूंको करी शके ते काहिं ॥ साधु चलो एम वलगो काम, नवरो मन न रहे तस ठाम ॥ ८ ॥ तिम नवरी वली न रहे नार, काम विलुद्धी मन तस ठार ॥ वा णिग कथा कही में सही, अवर कथा सुणजो गह गही ॥ए॥ श्रीपुर नगरें जिनदत्त शाय, वडो पुत्र पर देशें जाय ॥ श्रीमती नामें तेहने नार, यौवनवंती तेह विचार ॥ १० ॥ नर चाल्यां दिन जाजा होय, तव नारी कामातुर सोय॥गरढी स्त्रीने कहे तेणि वार, कोइ एक पुरुषने आणो बाहार ॥ ११ ॥ १३ए२ ॥

॥ समस्या दोहा ॥

॥ गजरिपु तस रिपु तास रिपु, रिपु रिपु वृक्ष मिलाय ॥ हरिशय्या पुत्री तणो, सुत पीडे मुऊ माय ॥१॥ अर्थः—काम पीडे ठे ते ॥ सर्वगाथा ॥ १४ए३ ॥

॥ ठप्पय ॥

॥ सत्यजामा घरे काहान, आव्यो पछीम रातें ॥ पूछे नारी तुं कोण, हुं माधव निज जातें ॥ माधव तो वनमांही, चक्री चक्री तो कुंनारह ॥ धरणी धर तो शेष, अहि रिपु गरुड अपारह ॥ हरि कहेतां

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तो वानरो, कवण पुरुष आव्यो अहीं ॥ कवि ऋष न कहे नर कामवश, इयां इयां वचन खमे नहिं ॥१॥

॥ दोहा ॥

॥ कंद्रप पाखें जग वडो, मूआनो मारणहार ॥ इंद्रिय पंच हीणां पड्यां, तोहु नजे विकार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ पाट कुसुम मालती ॥ ए देशी ॥

॥ विषय विकार अछे चिहु गतिमां, इंद्र नमय स्त्री पाय ॥ महोटा मुनिवर मीण मगाव्या, पशुयें नवि मूकाय ॥ हो देवा विषयने कादवें कलिया ॥ पापी काम थकी जे विरम्या, ते जगमांहि बलिया ॥ हो देवा० ॥ ए आंकणी ॥१॥ कालो श्वान कोयो दोय कानें, नूख्यो कदा न धराय ॥ अधम जीवविषयनो विह्वल, शूनी देखी युं जाय ॥ हो देवा० ॥२॥ पगे खोडो घरडो ने काणो, कीडा पड्या बहु अंगें ॥ रूपहीण चांदी तस वांसे,रहेतो शूनी संगें ॥हो देवा०॥ ॥३॥ मानवने पापी एपीडे, नारीने पाये पाडे ॥इंद्रिय पांच पडयां जो ढीलां, मोह्यो कंचुकी साडें ॥ हो देवा० ॥४॥ मागी नीख गोबरमांहि जिमतो, ते पण नीरस आहारो ॥ स्त्रीसेवा कारण ते हीसे, विरुउं काम विकारो ॥ हो देवा० ॥ ५ ॥ आहार कवेला रहेवे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मशाणे, भूमि सूवे नर घेलो ॥ मूरख मर्म न जाणे कांइ, जोगकामें ते पहेलो ॥ हो देवा० ॥ ६ ॥ वस्त्र हीण हिंमे नर नागो, हाथ पाय परिवारो ॥ बहेरो बोबड आंधो चीबो, जींते नहिंज विकारो ॥ हो देवा० ॥७॥ जरादंम वागो कटिमांहि, शिर पक्षियां सूगालो ॥ विषय तणी हजी वात न मूके, जो हुउं विण दंतालो ॥ हो देवा० ॥८॥ सर्वगाथा ॥१४०३॥

॥ दोहा ॥

॥ विषयविह्वल नारी हुई,कहे कोइ नरने आण ॥ नवरी मन दह दिशि फरे, होय गुण केरी हाण ॥१॥

॥ समस्या ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ कन्या काय कुमारी घणी, कृपण लक्ष्मी वाधे श्या जणी ॥ चाडी तांत कहो केम करे, त्रण उत्त र द्यो एक अक्करें ॥ १ ॥ अर्थ ॥ नवरी ॥ नवरी नारी नहिं घर कंत, धन यौवन नें रूप अत्यंत ॥ महोटुं मंदिर सार सज्जाय, कहे कोशीने काम क थाय ॥२॥ तेणें नारें ससराने कह्युं, वहूनुं मन नवि जाये रह्युं ॥ नवरी न रही यौवनवती, सोय शील केम राखे सती ॥ ३ ॥ ससरे बुद्धि विचारी त्यांय, मेल्यां माणस निज घरमांय ॥ सरव काम करो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नर जेह, वहूने पूछी करजो तेह ॥४॥ वहूने तेडी तेणें विचार, सोंप्यो सघलो घरनो जार॥ कृण एक तिहां परवारे नाहिं, निश्चल मन नवि जाये काहिं ॥५॥ घरढी स्त्रीयें पूछ्युं त्यांहिं, नर तेडी लावुं घरमांहिं ॥ वहू कहे कोण परवारे घडी, जूंजी वात करे एवडी ॥ ६ ॥ ते नारें ससराने कह्युं, निश्चल मन तुम वहूनुं रह्युं ॥ कामें विलगी रहे मन गार, तेणें नवरी नवि राखे नार ॥ ७ ॥ तेम मुनि श्रावक धर्मने काम, वलगे तो तस रहे मन ठाम ॥ नवरो हामी बाजी करे, नवरानुं मन दह दिशि फरे ॥ ८ ॥ एकली नवरी जो वहू हती, शील जांजवा थइ ते सती॥ खूती पोताने घर काम, तो निश्चल मन रह्युं तस ठाम ॥९॥ रुषज्ञ कहे तुम हित शिक्षाय, सांजलतां गुण सबला थाय ॥ उंघे अलगो बेसी आरडे, तेहने बुद्धि एको नवि जडे ॥१०॥ सर्वगाथा ॥ १४१४ ॥

॥ ढाल ॥ तुंगिया गिरि शिखर सोहे ॥ ए देशी ॥

॥ जडे बुद्धि जो सुणे सुपरें, नहु डुहवो घरनार रे ॥ प्रियवचनें प्रिया प्रीति वधारे, सुख लहे संसार रे ॥१॥ जडे बुद्धि जो सुणे सुपरें ॥ ए आंकणी ॥ पांचे बोले प्रेम बांधे, गुण बोलंतां ताय रे ॥ वोला

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वे बहु दान देवे, ठंदें न चाले कांय रे ॥ ज० ॥ २ ॥
पांचे बोलें प्रेम नासे, घणे काल मिलंत रे ॥ अत्यंत
जाजुं मले ज्यारें, तेहनी प्रीति पलंत रे ॥ ज० ॥
॥ ३ ॥ वात ठानी जेह राखे, करे सबलुं मान रे ॥
प्रेम नासे तदा तेहनो, दीये वली अपमान रे ॥
ज० ॥ ४ ॥ पांचे बोले पुरुष मूके, प्रियाशुं प्रेम
वधार रे ॥ धर्म कर्म जिम सुखें चाले, चढे मुनिवर
बार रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ कोएक वेला अतिहि नूंकुं,
बोली जो घर नार रे ॥ स्हाह्यो जाणी रहे मनमां,कहे
नाहिं हारठार रे ॥ज० ॥६॥ वांक होय तो विधें वारे,
रूठी मनावे नारी रे ॥ हाणि वृद्धि धनगुपत वातो,
वयर वात निवारी रे ॥ज० ॥ ७॥ थोडे वांके शोक
नाणे,मूरख म धरो रीश रे ॥ स्त्री उपर स्त्री वरे बीजी,
दुःख लहे निशि दिस रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ बे नारीनो
कंत क्यारें, नूख्यो तरश्यो जाय रे ॥ क्यारे कंत प
गधोण न मिले, वैर वाधे तिण ठाय रे ॥ ज० ॥ए॥
देशांतर नाखसी रूडी, नरगें जावुं सार रे ॥ पण
कहीं बे नारी नूंरूी, दुःख लहेज अपार रे ॥ज०॥
॥ १० ॥ कदाचित् बे नारी परण्यो, धरे सरीखो
राग रे ॥ नारी वारो नर न लोपे, नोजन सरिखो

For Private and Personal Use Only

ज्ञाग रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ वांक सारु शीख दीजें, मनावे पण सहिय रे ॥ कदाचित् जो चढे क्रोधें, पडे कूपें जइय रे ॥ ज० ॥ १२ ॥ नीतिशास्त्रें कह्युं एहवुं, हुआ पंमित चार रे ॥ सवा लाख एक करे वैदक, एकें धर्म विचार रे ॥ ज० ॥ १३ ॥ एकें तो नीतिशास्त्र कीधुं, एकें शास्त्र शिणगार रे ॥ नृप आगल जइ ज्ञांखे, नृप कहे तेणी वार रे ॥ ज० ॥ १४ ॥ संक्षेपो तो सुणी शकियें, वैद्य बोल्यो ताम रे ॥ अजीर्णमांहे तजे ज्ञोजन, नाहिं तस औषध काम रे ॥ ज० ॥ १५ ॥ कपिल धर्मनुं मूल ज्ञांखे, धुर दया जीव खास रे ॥ बृहस्पतें नीतिशास्त्रें ज्ञांख्युं, कहोनो म कर विश्वास रे ॥ ज० ॥ १६ ॥ पांचाली शणगार शास्त्रें, इस्युं आण्युं घेर रे ॥ स्त्री आगल सुकुमाल थइयें, चाले घर शुज्ञ पेर रे ॥ ज० ॥ १७ ॥ घर तो घरणी थकीज शोज्ञे, पुरुषनुं नहिं काम रे ॥ तोलडी थाल नर धोवे ढांकणुं, हसे आखुं गाम रे ॥ ज० ॥ १० ॥ ऋषज्ञ कहे हित शीख तुमनें, सांज्ञलतां बहु बुद्धि रे ॥ कलेश कंदल न होय घरमां, वाधे सबली रिद्धि रे ॥ ज० ॥ १ए ॥ १४३३ ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ सुपरें बुद्धि वाधे नर शिरें, महिला मंत्रणुं जे नवि करे ॥ नरनुं काम करे ज्यां नार, तेहनुं घर विणसे संसार ॥ १ ॥ धारानगर जिहां अन्याय त्याज्य, राजा जोज करे त्यां राज्य ॥ तिहां एक सा त जूमि आवास, व्यंतरदेव अधिष्ठें तास ॥ २ ॥ रहे वा आवे मंदिर कोय, व्यंतर देवता पूछे सोय ॥ चार बोलनो करे जबाप, ते इण मंदिर रहेशे आप ॥ ३ ॥ शारद कुटुंब आव्युं तिहां सही, राजाने पूछ्युं गह गही ॥ कहो तो आवियें नगरीमांहिं, दूध कचोलुं पाठव्युं त्यांहिं ॥ ४ ॥ दूध कचोलुं जिम ए जख्युं, तेम नगरी माणस तरवख्युं ॥ नगर कचोलामांहे नहिं ठाम, किहां आवी लेश्यो विशराम ॥५॥ शा रद कुटुंब त्यां बोले इस्युं, जोज सरिखो चूके किस्युं॥ सहु मानव सरिखा नवि होय, अंतर कीधा कर्में जोय ॥ ६ ॥ पथर पथरमांहि अंतर कख्यो, एक र हे केसर पुष्पें जख्यो ॥ एक उपर मूके सहु पाय, वागे ठेश तो चढे कषाय ॥ ७ ॥ करी करी मांहे अंतर कियो, एक गर्दजनी परें लादियो ॥ एकने सो वन घूघरा फूल, करे आरति पूजे फूल ॥८॥ श्वान

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्वान मांही अंतर कियो, नवि जाये पूरवनो दियो ॥ दत्तवती बेसे पालखी, एक तो श्वान होये अति दुःखी ॥ ए ॥ पंखी जातिमांहे अंतर वडो, इंटयें उडाडे जइ कागडो ॥ कोकिल पूजा पामे बहु, वचन तणो ते महिमा सहु ॥ १० ॥ मानव मानवमांहि अंतर कस्यो, रत्न भूषणें दीसे भस्यो ॥ एकने तरुआ तणी मुद्रिका, अलगा हींके नर ते थका ॥ ११ ॥ एक पहेरे रेशमी धोतियुं, एकने नहिं फाटुं पोतियुं ॥ एकने तेडे सभा मझार, एक ठेलाणो जाये बहार ॥ १२ ॥ एक अछते ठामेंज समाय, एक छते ठामें फरी जाय ॥ सकल जीवमांही इम आंतरुं, राजा भोजने कहेजे खरुं ॥ १३ ॥ दूध कचोलुं तें मोकल्युं, ते जाये छे सहि ऊगल्युं ॥ पण खंरु एमां हींज समाय, नवि उंचुं थई दूध न खाय ॥ १४ ॥ इस्युं कहीने पंडित त्यांहिं, मूके पतासां दूधज मांहिं ॥ सोय समाणां दीठां जिस्यें, आण्युं कचोलुं भोज कने तिस्यें ॥ १५ ॥ पूछी भोज दीये आदेश, नगरमांहिं कीधो परवेश ॥ जाणो ठाम तिहां उतरो, मुझ नगरी तुमें रहेवुं करो ॥ १६ ॥ शारद कुटुंब नगरमांहिं जाय, कुमरी एक मली तस गाय ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कहे बेहेनी कोनी दीकरी, ते कन्या बोली त्यां फरी ॥ १७ ॥ श्लोक ॥ " पर्वताग्रे स्थोयाति, न्नूमौ ति ष्ठति सारथिः ॥ चलति वायुगेन, तस्याहं कुलबालि का" ॥१८॥ परजापतिनी ए दीकरी, पण विद्यायें पूरण न्नरी ॥ हरखी पंम्रित आघा जाय, कुमरी एक मेला पक थाय ॥ १ए ॥ " श्लोक ॥ अजीवा यत्र जीवं ति, निःश्वसंति मृताअपि ॥ कुटुंबकलहो यत्र, तस्याहं कुलबालिका ॥ २० ॥ " ए लूहार तणी बालिका, मधुर बोल बोले मुखथका ॥ न्नोज नगर विबुधें परवस्युं, हरखी आगल जावुं कस्युं ॥ २१ ॥ कुमरी एक मिली फूटरी, बोलंती जननां मन हरी॥ श्लोक एक कह्यो तिहां रही, पुरुषें सो सुण्यो गहग ही ॥२२॥ "श्लोक ॥ शिरोहीना नरा यत्र, छिबाहु करवर्जिताः ॥ जीवंतं नरं न्नकंति, तस्याहं कुलबा लिका ॥२३॥ " जाणी दरजीनी दीकरी, आगल पुरु ष गया परवरी ॥ कुमरी एक मली जेटले, बोलावी वेगें तेटले ॥२४॥ " श्लोक ॥ जलमध्ये दीयते दानं, प्रतिग्रही न जीवति ॥ दातारो नरकं यांति,तस्याहं कुलबालिका ॥ २५ ॥ " जाणी माठीनी ते धीय, स मऊी पंम्रित चाल्या तेय ॥ आव्या व्यंतर वाले घेर,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एणें थानकें रहियें शुन्न पेर ॥ २६ ॥ बोल्यो व्यंतर देव सुसार, चार बोलनो कह्हो विचार ॥ त्यार पछें ए थानक रह्हो, कहिंतर मार्गें आघा वह्हो ॥ २७ ॥ व्यंतर देव प्रथम एम कहे, सर्व पुरुष कने ते अछे ॥ पंन्मित अर्थ कहे ते पछें,सुमति कुमति ते सहुको अछे ॥ ॥ २७ ॥ सुमति संपदा केरुं हेत, कुमति आपदा आणी देत ॥ पाणिनीय व्याकरणनुं पद ज्यांहि, इस्यो अर्थ कह्यो छे त्यांहिं ॥ २ए ॥ सुणी अर्थ अति हरख्यो देव, बीजुं पद नांख्युं ततखेव ॥ गोत्र विषे नर एकज नलो, नांख्यो अर्थ एहनो गुणनिलो ॥ ३० ॥ जेह कुटुंबनो निर्वाह करे, तेह पुरुष होये एकज शिरें ॥ घणा पुरुष मलिया दलिदरी, पोतें पेट न शके जे नरी ॥ ३१ ॥ सर्वगाथा ॥ १४६४ ॥

॥ सोरठो ॥

॥ न जोइयें ते लाख, जोइयें ते एकज नाहिं ॥ एकें एकज लाख, लाखे मले एके नाहिं ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हंसा केरे बेसणे, बगला बेठा वीश॥जे[illegible]रता र वडा किया, तेशुं केही रीश ॥ १ ॥ क्युं कीजें अ रहट्टडे, वहे जे बारे मास॥जलधर वरसे एकज घडी,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पूरे जननी आश ॥ २ ॥ कहोलें म चढ एरंम तुं, देखी गिरुआं पन्न ॥ फलह धडक्का जे खमे, ते तो तरुवर अन्न ॥ ३ ॥ सर्वगाथा ॥ १४६८ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ एकलो पेट नरे लख तणां, तेणें पुरुषें शोन्ने आंगणां ॥ इस्यो एक नलो सहु गाय, सुणी वचन हरख्यो जरकराय ॥ १ ॥ त्रीजो बोल कह्यो त्यां सार,वृद्धो जना तुमें कहो विचार॥ नाहाना पुरुषशुं प रिचय थाय, ठांमी वृद्धने नारी जाय ॥ २ ॥ तेणें वृद्धें परणवुं नहिं, सुणी जरक हरख्यो मन तहिं ॥ चोथो बोल कहो जस घरे, नारी प्रवर्त्ते पुरुषनी परें ॥ ३ ॥ शारद कटुंब बोले तस गार, तेहनुं घर विणसे निरधार ॥ गुह्य कहे जो स्त्रीने जई, तेह पु रुष घर विणसे सही ॥ ४ ॥ जिम कुंमल पुर नगर मजार, मंथर कोलिक रहे तेणे गार ॥ ताणा पांज णी ते नर करे, एक दिन ते वनमां संचरे ॥ ५ ॥ इंधण काज शीशम तरु चढे, व्यंतर वारे अति आ रडे ॥ काप म तरुवर आंहिं मुज वास, उत्तर पाठो पूरुं आश ॥ ६ ॥ नवि माने जाडे दिये घाय, कठ ण तिणें सहु लागे पाय ॥ गज सुकमाल हुउं जो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घणुं, मोहोत धटयुं जगमांहिं ते तणुं ॥७॥ १४७५॥

॥ दोहा ॥

॥ अवगुण एक न शीखीयो, गुणग्राही नहिं कोय ॥ घरे बांध्यो कुंजारने, सार न पूछे सोय॥१॥ अवगुण शीख म शीख गुण, शीख्या गुण वीसार॥ जांजी चाक कुंजारनुं, बांधे राज दरबार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ गज पराक्रम देखाडे त्यांहिं, चरे शेलडी राउल मांहीं ॥ नर दुर्दंत जाणी जखराय, कहे सुर तूगो तेणें गाय ॥ १ ॥ माग जख कहे तिहां फरी, आवुं नारीने पूछी करी ॥ घेर आवता मित्र एक मिल्यो, मुझ सुरवर फल्यो ॥ २ ॥ मित्र कहे ज, मंथल कहे स्त्री पूछुं आज ॥ घर ते कथाय, सुर तूगो शुं मागुं जाय ॥३॥ म मागीश राज, आपण चार भुजाशुं नां बे शिर थाये जेम, जखराय कने म ॥ ४ ॥ बमणुं काम आपण घर थशें, लखमी मंदिरमां हशे ॥ स्त्रीनुं वचन हइआमां धरी, जखराज कने आव्यो फरी ॥ ५ ॥ बेना चार करो मुझ हाथ, दोय मस्तक कीजें सुरनाथ ॥ देवें

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मस्तक आप्यां हाथ, थयुं कुरूप नगरीमांहिं जात ॥
॥ ६ ॥ नूत जिस्यो आवतो जाणियो, फस्थां लोक
बूंधे आहण्यो ॥ मास्यो इंटे पाड्यो मही, मंथल ज
मघर पहोतो सही ॥ ७ ॥ शास्त्रमांहे कह्युं बे कथी,
जेहने पोतें बुद्धि नथी ॥ कहेण न माने मित्र
ज तणुं, स्त्रीने गुह्य पूबे आपणुं ॥ ७ ॥ ते खय
पामे वहेलो घरे, मंथल कोलिकनी ते परें ॥ प्रायें
दीसे एहवुं वली, निश्चें नवि नांखे केवली ॥ए॥ उ
त्तम स्त्रीने पूब्या वती, गुण थातो पण दीसे अति ॥
वस्तुपालने गुण हुउ तिस्यें, अनुपम देवी पूबे जिस्यें
॥१०॥ कुलवंतीने व्रत आकरां, बोले वचन सदा ए
खरां ॥ राग होये जिनधर्मने विषे, नरने
करतो रखे ॥ ११ ॥ कुलवंती एहवी
चित् गुह्य कहे तिण ठार ॥ उचित ते
दरे, रोग होय तो औषध करे ॥ १२
आगल रही, तपनुं ऊजमणुं ते सही
पूजा जातरा, उत्साह वधारे ते नर खरा
आले द्रव्य न करे अंतराय, थोडूं पुण्य ते नर
य ॥ करे करावे अनुमोदे ज्यांहिं, वीरें पुण्य कह्युं ब
त्यांहिं ॥ १४ ॥ ऋषभ कहे नर उत्तम जेह, स्त्रीने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुण्य करावे तेह ॥ हितशिक्षा मन धरतो हवे, नारी उचित नर ते साचवे ॥ १५ ॥ सर्वगाथा ॥ १४ए२ ॥

॥ ढाल ॥ ते गिरुआ जाइ ते गिरुआ ॥ ए देशी ॥

॥ उचित पुत्रतणुं साचवतो, ते नर आगल फावे रे ॥ पांच वरस ते लाडे पाले, दश वरसें जणावे रे ॥ ए हितशिक्षा ए हितशिक्षा, सुणतां होय चतुराई रे ॥ न सुणे ईर्ष्या मान धरीने, न गई तस मूर्खाई रे ॥ १ ॥ ए हित० ॥ ए आंकणी ॥ शोल वरसनो ज्यारें थाये, जाणे मित्र समानो रे ॥ श्री गुरुदेवने धर्म पमाडे, सुपुरुष पासें आणो रे ॥२॥ ए हि० ॥ नहानपणाथी जला पुरुषनो, संसर्ग कीधो वारु रे ॥ वलकलची रीने गुण थाये, हुउं ते आतम तारु रे ॥३॥ए हि०॥ धर्मवंत संघातें मलतां, नाठी आपद जाय रे ॥ धर्म पमाडे समकित आपे, अजयकुमार जिम राय रे ॥ ॥ ४ ॥ एहि० ॥ देश अनार्यमांहि हूउं, तेणें जवें सिद्धि लीधी रे ॥ आर्द्रकुमारने अजय कुमारश्युं, प्रीति जलेरी वाधी रे ॥ ५ ॥ एहि० ॥ आदन देश नो आदन राजा, मगधदेश श्रेणिको रे ॥ बिहुमां हे प्रीति हुइ जाजी, मोकले वस्तु अनेको रे ॥ ॥ ६ ॥ एहि० ॥ अजयकुमारें जेट मोकली, हय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गय वस्तु अनेरी रे ॥ एण पेटीमां रुषन्न देवनी, प्रतिमा कंचन केरी रे ॥७॥ एहि० ॥ पूजानां उप गरण मोकल्यां, शीख देइ सेवकनें रे ॥ आर्द्रकुमार ने हाथे देजो, जोवा म देशो कहोने रे ॥ ८ ॥ ॥एहि०॥ सुन्नटें नेट कुमरने आपी, प्रतिमा पेटी मांहे रे ॥ उघाडी जोतां अति हरख्यो, अपूरव दरि सण त्यांहे रे ॥ ए ॥ एहि० ॥ विचारवा लागो नृप त्यारें, कशी वस्तु ए होइ रे ॥ हाथें कोटें प्रति मा बांधी, मस्तकें मूकी जोई रे ॥ १० ॥ एहि० ॥ एको ठामें न प्रतिमा शोजे, आगल मांमी जोई रे॥ पोतें साहामो सुपरी बेठो, इणविधि सखरी होई रे ॥ ११ ॥ एहि० ॥ ऊहापोह करतां तिहां पाम्यो, जाति समरण सारो रे॥ पूरव नवें बे मित्रज हुंता, लीधो संयमन्नारो रे ॥ १२ ॥ एहि० ॥ पूरव पुण्य योगें धरम पाम्यो, तो हवे मुनिवर थाउं रे ॥ देश अनारजमां नहिं दीक्षा, आरय देशमां जाउं रे ॥ १३ ॥ एहि० ॥ वीरहाथें तेणें दीक्षा लीधी, धन्य तुं आर्द्रकुमारो रे ॥ अन्नयकुमारने ते तिहां मलि यो, वाध्यो प्रेम अपारो रे ॥ १४ ॥ एहि० ॥ तप तपतां हुउं केवल नाणी, पंचसया संघातें रे ॥ मुग

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ति नगरीमां ते पहोतो, मलियो सुपुरुष साथें रे ॥ १५ ॥ एहि० ॥ एणें दृष्टांतें पिता पुत्रने, सुपुरुष साथें जोडे रे ॥ रुद्धि रमणी जस कीरति पामे, चढी फरे गज घोडे रे ॥ १६ ॥ एहि० ॥ ए हित शिक्षा ते नर सुणशे, जेहने निद्रा थोडी रे ॥ विक था हास्यथकी जे अलगा, रह्या मान मद मोडी रे ॥ १७ ॥ एहि० ॥ सांगणसुत कवि रुषन्न प्रकासे, ए हित शिक्षारासो रे ॥ जांख्या बोल धरे मनमांहे, पहोंचे तेहनी आशो रे ॥ १८ ॥ एहि० ॥ १५१० ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

पुत्रतणे परणावे सही, सरीखे रूपें कन्या कही ॥ सरखुं वय सरिखुं कुल कर्म, सरिखे सरिखुं सुख दिये पर्म ॥ १ ॥ विडंबना अण मिलते होय, प्रकृति बोल मन न मले दोय ॥ त्यारें नारी करे व्यभिचार, परस्त्रीगमन करे नरतार ॥ २ ॥ धारा नगरी त्यां नोज नरिंद, सकल लोक करे आनंद ॥ तस्कर एक त्यां चोरी करे, रातें खातर देतो फरे ॥ ३ ॥ एक घर खातर पाडी करी, घरमांहि पेठो परवरी ॥ स्त्री नरतार वढे ठे घणुं, वचन न सांखे को केह तणुं ॥ ४ ॥ नर कहे जूंगी घरथी जाय, स्त्री

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कहे नूंनी तारी माय ॥ नर कहे बोले नाकण जिसी,
तुऊ नवि खाधो नाकण कसी ॥५॥ शुं बोले ठे रे शं
खिणी,मुई शंखिणी तुऊनी जणी ॥ सापण केम दिये
सामी गाल, रूडो साप तुऊ जीव्युं बाल ॥६॥ रहे कहे
रांम मारुं मूशलें, स्त्री कहे शिर फोडुं पाटले ॥ इण व
चनें नर चढियो काल, ऊाव्या मस्तकना मोत्र्याल
॥ ७ ॥ पुरुष तणो तव करड्यो हाथ, कूटा कूटी
थइ जिम व्रात ॥ वढतां थाकां दोय जण जिस्यें, पु
रुष नूमि जइ सूतो तिस्यें ॥ ८ ॥ स्त्री महोटा घर
नी दीकरी, रूपहीण करमें तस करी ॥ ते सूती स
खरे ढोलिये, घोरे सोय सुख निद्रा लिये ॥९॥ चोरें
कौतुक दीठुं घणुं, न लेउं ए नर डुःखीया तणुं ॥
बीजे घरें खातर जइ देह, गणिकानुं घर जाएयुं तेह
॥ १० ॥ कोटि पुरुषशुं क्रीडा करे, मधुर वचन मुख
थी उच्चरे ॥ चोर कहे एहनुं कोण लेह, धनका जे
विडंबे देह ॥ ११ ॥ त्रीजे घर खातर दिये ज्यांहिं,
ब्राह्मण सूतो दीठो त्यांहिं ॥ उंदरडो हाथे मूतस्यो,
स्वस्ति शब्द मुखथी उच्चस्यो ॥ १२ ॥ ए लोत्नीनुं
कोण धन लेह, लेतां ना नवि नांखे जेह ॥ ए मर
शे धन लीधा पठी, अठतां गुण बोली लिये लठी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥१३॥ असतीने कहे तुं महासती, निगुणीने जांखे गुणवती ॥ कायरने जांखे वड वीर, तुछ पुरुषने कहे गंजीर ॥ १४ ॥ दासीपुत्रने कहे कुलवंत, जर डाने जांखे जगवंत ॥ सोम पुरुषने जांखे कर्ण, अंध पुरुषने ऊपम तरणि ॥ १५ ॥ रंकतणे जांखे नर राय, मूरखने पंमित करी गाय ॥ कुजर पेट ते एणी पेरें जरे, याचकनुं धन पापी हरे ॥ १६ ॥ तेणें न लेउं ए बांजण तणुं, मुऊ परमेश्वर देशे घणुं ॥ चोथे घर जइ खातर देह, तिहां नर नारी दोय वि लेह ॥ १७ ॥ नर कुरूप महोटानो जण्यो, करपी का मी ने अवगुण्यो ॥ लरकण हीण वढे दिन रात, नवि बाऊे नारी संघात ॥ १८ ॥ नारी न्हानानी दीकरी,रूप अपूरव ते सुंदरी ॥ दुःखिणी सूती जूमि तेह, सूतो ढोलिये नर वली जेह ॥ १९ ॥ चोर कहे जूलो किरतार, सुंदर नारी जूंमो जरतार॥ पहे ले घर नारी वढकणी, रूपवंत सूंहालो धणी ॥ २० ॥ दाहाडी पोता काजें लेउं दाम, आज करुं हुं परनुं काम ॥ आ सुंदरीने मूकुं परें, तिहां कुहाड ते आणुं अरे ॥ २१ ॥ अदला बदली कीधी नार, खातर बूरी आव्यो ठार ॥ सुंदर नारी नर सुकुमाल, जाग्यां

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तव हरख्यां ततकाल ॥ २२ ॥ नर चिंते ए दैवें फरी, रूपवती कीधी सुंदरी॥ लक्खण परगट वचन सुसार, सरव फल्युं तूठो किरतार ॥२३॥ नारीयें नर निरख्यो ते सरूप, किहां गयो ते पापी कुरूप ॥ वचन विनय आ नरमां बहु, दैवें दूषण टाल्युं सहु ॥२४॥ बेहु नर नारीनां मन मिल्यां, पछें बेहु झुंफां सल सल्यां ॥ जाग्यो नरने निरखी नार, तु रंभा केम आणे ठार ॥ २५ ॥ विंगणरंग जिसी उजली, जल कोठी सरखी पातली ॥ नीची ताड जिसी तुं नार, क्याहांथी आवी मुझ घरबार ॥ २६ ॥ न्हानुं पेट जिश्यो वादलो, लमो हीण जिस्यो कांबलो ॥ जीन सुंहाली दातडा जिसी, देखी अधर ऊंट गया खसी ॥ २७ ॥ नेंशनयणी आवी क्यांहथी, पखालजल की जा खप नथी ॥ पग पींजणीने वांका हाथ, बाव लशुं कोण देशे बाथ ॥ २८ ॥ लांबा दांत ने ट्रंकुं नाक॥ त्रूटकनी मुख कडवां वाक्य ॥ ट्रंकी लटीयें घो घर साद, जा नूंमी तुझ किश्यो सवाद ॥२९॥ बोली नूंमी रांभना रहे, अणहूता अवगुण मुझ कहे ॥ ताहारुं रूप तो वानर जिस्युं, तुं कोण छे मुझ कौतुक वस्युं ॥३०॥ वलगां दोय गयां दिवान, नारी कहे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नृप साचुं मान ॥ माहारो ए न होवे भरतार, रूपवंत ते हुंतो सार ॥ ३१ ॥ पुरुष कहे सुण राजा भोज, मुऊ नारीनो करज्यो खोज ॥ ए नारी न होय मुऊ तणी, ए नवि दीठी कानें सुणी ॥ ३२ ॥ राजा भोज विचक्षण घणुं, मूल न जाणे ते न्यायज तणुं ॥ राजा कहे नर बे को गुणी, नरती करे जे ए न्याय तणी ॥३३॥ बेठो चोर ते सभा मऊार, अलंकार पहेर्या सुविचार ॥ बोल्यो न्याय करुं हुं एह, मुऊने एक वर माग्यो देह ॥ ३४ ॥ राय कहे वर दीधो सही, एक बोल करवो गहगही ॥ त्यारें चोरें सभा मऊार, श्लोक एक कह्यो तेणें ठार ॥ ३५ ॥ " श्लोक॥ राजन् मया निशींद्रेण, परद्रव्यापहारिणा ॥ लुप्तं विधिकृतं कर्म, रत्नं रत्नेन योजित्तं ॥ ३६ ॥" दोहा ॥ विधातायें विरखुं कियुं, सरिखा सरिखुं न कीध ॥ जे फल दीधां तूंबडी, तेह अंब नवि दीध ॥३७॥१५४७॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

सरिखे सरिखां मेल्यां दोय, पहेलां अहिआण मिलतुं होय ॥ नर कालो नारी फूटरी, रात दिवस पडतां ते वढी ॥ १ ॥ आ नारी घर सुंदर नाह, न्हानानो सुत ते कहेवाय ॥ नारी महोटानी दीकरी,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वढती नरशुं सामी फरी ॥ २ ॥ सर्वगाथा ॥ १५४॥

॥ दोहा ॥

॥ नर जलेरो शुं करे, जिहां घर नार कुनार ॥ उं शीवे दो अंगुलां, उं फाडे अंगुल चार ॥ १ ॥ मांचे माकण घर अहि, जिण वन विखनी वेलि ॥ रूठो राय कुजारजा, पांचे सूतां मेल ॥ २ ॥ "श्लोक ॥ कुग्रामवासः कुनरेंऽसेवा, कुन्नोजनं क्रोधमुखी च जार्या ॥ कन्याबहुत्वं च दरिऽता च, षड् जीवलोके नरकानि संति ॥ ३ ॥ सर्वगाथा ॥ १५५२ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ टाली नर सरखां कियां दोय, पहेलां अहिं अण मिलतुं होय ॥ नर कालो नारी फूटरी, रात दिवस पडतां ते वढी ॥ १ ॥ आ नारी घर सुंदर नाह, न्हानानो सुत ते कहेवाय ॥ नारी महोटानी दीकरी, वढती नरशुं साहामी फरी ॥२॥ एहने में उपाडी करी, महोटाने घर मूकी फरी ॥ एहनी स्त्री न्हानानी धीय, न्हानाने घेर मूकी तेह ॥ ३ ॥ जो वर माग्यो मुऊने देह, तो एम राखो स्वामी एह ॥ राय कहे तुं सबल सुजाण, तें कीधुं तें मुऊ परिमाण ॥४॥ सरिखे सरिखां निजघर गयां, जली

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नलो बे एकठां रह्यां ॥ इण दृष्टांतें समजो सहु, आणो घर विमासी वहू ॥ ५ ॥ जो अण मिलतां हुंतां दोय, जूजूए मारग चाल्यां सोय ॥ देखी चोरने ईर्ष्या थई, नूपें मिलतुं कीधुं सही ॥ ६ ॥ इस्या नाव सुणे नर तेह, पंमित पासें बेसे जेह ॥ घणुं जमे ने आगो पडे, तेहने बोल ए क्यांथी जडे॥७॥ सांगणसुत कहे हितशिकाय, सुणतां कुमति कदा ग्रह जाय ॥ न सुणे ते नर रहे निटोल, रुषन कहे उपगारी बोल ॥ ८ ॥ सर्वगाथा ॥ १५६० ॥

॥ ढाल ॥ चाली चतुर चंडाननी ॥ ए देशी ॥

॥ राग मल्हार ॥ घर तणो नार सुतने दिये, करी आप परीकाय रे ॥ राज्य श्रेणिकने आपियुं, जिम प्रसेनजित राय रे ॥ घर तणो नार सुतने दिये ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ एकशो पुत्र ठे रायने, घाल्या उंरडा मांहे रे ॥ सुखडी करंकिया जल नरी, मूके राय वली त्यांहिं रे ॥ घर० ॥ २ ॥ म म ठोडो करंमनां ढांकणां, खाज्यो सुखडी वीर रे ॥ कुंन मुखमोर म उघाडशो, पीज्यो शीतल नीर रे ॥ घर० ॥ ३ ॥ १५६३ ॥

॥ दोहा ॥

नित्य नरणुं ने नवो नुख्युं, गाम न मूके ठेठ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मोडुं वहेलुं मागशे, पापी वलगुं पेट ॥ १ ॥ रुधिर मांस बल बुद्धि गई, काया तेहज झान ॥ एक क्षुधा आगें आवतां, गइ लज्या गयुं मान ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ तेहीज ॥

॥ मान मूकी सुत ऊठीया, खाधुं कांइ नवि जाय रे ॥ बुद्धि दिये तब निर्मली, भ्राता श्रेणिकराय रे ॥ घर तणो भार सुतने दीये ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ "श्लोक ॥ यस्य बुद्धिर्बलं तस्य, निर्बुद्धेश्च कुतोबलम्॥ वने सिंहो मदोन्मत्तः, शशकेन निपातितः" ॥ २ ॥ बुद्धि श्रेणिक तिहां आपतो, तले पाथरो चीर रे ॥ सबल खंखेरजो करंमिया, भूको वावरो वीर रे ॥ घ० ॥३॥ मारता पाटु करंमिये, धंधोले बहु धीर रे ॥ पेट भरी खाये सुखडी, पण केम पीये नीर रे ॥ घ० ॥ ४ ॥ शालु तणी जे पछेडियें, वींटे कुंजने त्यांहिं रे ॥ जल भरयां वस्त्र लेइ करी, नीचोइ मुखमांहिं रे ॥ घ० ॥ ॥ ५ ॥ तात उघाडतो उंरडो, पूछे भूखनी वात रे ॥ सुत कहे श्रेणिक भ्रातथी, सुखीया सहु अमें थात रे ॥ घ० ॥ ६ ॥ माण श्रेणिक वखोडियो, खंखेरी कशुं खात रे ॥ तुमो सुत आण न लोपतां, नहिं दुहवतां तात रे ॥घ० ॥ ७ ॥ एक दिन भोजन कार

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णें, बेसाख्या सोइ वीर रे ॥ कनक थालमां पीरशीयां, घृत खांड ने खीर रे ॥ घ० ॥ ८ ॥ श्वान शिकारीने मूकिया, नाठा मूकी ते थाल रे ॥ श्रेणिक बुद्धि विचारतो, देखी कूतरा काल रे ॥ घ० ॥ ए ॥ थाल कर एक कोलियो, मूके आप मुखमांहे रे ॥ पात्र उघाडी नाखतो, श्वान सघलां ठे ज्यांहिं रे ॥ घ० ॥ १० ॥ श्वान वलगे तिण थालियें, श्रेणिक कोलिया लेय रे ॥ थाल बीजो वली नाखतो, श्वान तो त्यां वलगेय रे ॥ घ० ॥ ११ ॥ एकेक कवल एम थालथी, लइ पठे नाखेह रे ॥ प्रसेनजितराय मनें जाणियुं, राज्ययोग्य ठे एह रे ॥ घ० ॥ १२ ॥ राज्य श्रेणिकने आपियुं, बीजाने दिये देश रे ॥ आप संयम लीये तातजी, मूक्या सकल कलेश रे ॥ घ० ॥ १३ ॥ चतुर अंतें सहु ढांकता, जेम कांचली नाग रे ॥ मूरख वलगी रह्या जोगमां, जिम माखी घसती पाग रे ॥ घ० ॥१४॥ अंजलि जल जिस्युं आउखुं, लही गजतणो कान रे ॥ नदीपूर वहे जोबनुं, जीव की जीयें शान रे ॥ घ० ॥ १५ ॥ समय न चेत्या जे वली, साध्यो नहिं परलोक रे ॥ तेणें जव दोय विणासिया, गयुं आउखुं फोक रे ॥ घ० ॥ १६ ॥ इ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्युंश्च जाणी नृप ऊभतो, राज रमणी सुखभोग रे ॥ राज्य श्रेणिकने देइ करी, लीधो संयमयोग रे ॥ घ० ॥ १७ ॥ शास्त्रना भेद ए ते लहे, सेवे पंमित पाय रे ॥ ऋषभ कहे हितशीखडी, सुणतां तो सुख थाय रे ॥ घ० ॥ १८ ॥ सर्वगाथा ॥ १५८३ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ सुख थाये तस अंगें घणुं, उचित साचवे पुत्रज तणुं ॥ भगिनी भोजाई निज वहू, उचित एहनां साचवे सहु ॥ १ ॥ वहूनी परीक्षा करी अपार, सोंपवो निजघरनो जे भार ॥ जेम धन्नावे परीक्षा करी, चार वहू हुंती तस खरी ॥ २ ॥ एक दिन ससरे कह्यो विचार, कोने देशुं घरनो भार ॥ परीक्षा काज तेड्यो परिवार, भक्ति करे त्यां कुटुंबनी सार ॥ ३ ॥ चारे वहु तेडी तेणी वार, पांच पांच कण शालिज सार ॥ एकेक वहूने ससरो देह, मुज आपण राखेजो तेह ॥ ४ ॥ मागुं तव मुज देजो मली, सुणी वचनने चारे वली ॥ वाटें वडीयें कस्यो विचार, गरढां अकल न होय निरधार ॥ ५ ॥ सर्वगाथा ॥ १५८८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दांत बत्रीश खशी गया, नयणें दीधो दाय ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कानें मांझ्यां रूषणां, गयो जब जोबन राय ॥ १ ॥ डुंगर डुंगर हुं भमी, वन वन जोऊं माय ॥ जडी एक न पाइयें, जेणें जोबन स्थिर थाय ॥ २ ॥ आणंद कहे परमाणंद, नर नमिया ते कांय ॥ जेणें वाटें जोबन गयुं, पगलां निहाले त्यांय ॥३॥ आवी सोहागण लक्कडी, हम तुम थयो पीयार ॥ जे कुब था सो चल गया, तुऊ शिर दीना भार॥४॥ आवी सोहागण लक्कडी, तुऊ विण आगल शून्य॥जे दाहाडा तुऊ विण गया, ते वासर मुऊ धन्य ॥ ५ ॥ जरा धूतारी धोबणी, धोया देश विदेश ॥ विण पाणी विण पत्थरें, उज्जल कीधा केश ॥६॥ सर्व गाथा ॥१५९४॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ उज्जलकेश जिवारें थाय, जरा आविनें यौवन जाय ॥ गति मति बल तस उंबुं ज्ञान, जाये शान अने वली वान ॥१॥ घरघरणी बेठी घरघरे, लोक घणां ते हासी करे ॥ प्रायः केण न माने कोय, हाथ पाय शिर धूजे सोय ॥२॥ जरातणां लखण ए जोय, वृद्ध हुउं मुऊ ससरो सोय ॥ दाणा पंच शालिना जेह, लोक देखतां दीधा तेह ॥ ३ ॥ आगल जातां नाखी दीध, वली विचार बीजीयें कीध ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ससरे हित करी आप्या एह, पण साचवतां दोहिला तेह ॥ ४ ॥ फोली खाधा तेणी वार, त्रीजी वहू त्यां करे विचार ॥ पोतानुं शय्या घर जांहि, मूके जइ ते झाबडा मांहि ॥ ५ ॥ चोथीनी बुद्धि अति घणी, दाणा मोकल्यां पीयर जणी ॥ एक अलगो जाइ क्यारो करी, रोपेजो पंच दाणा व्रीहि ॥ ६ ॥ उगे ते अलगा राखजो, आगल फरीने ते वावजो ॥ पहेले वरसें अधवाली थया, बीजे वरसें आठ दश कया ॥ ॥ ७ ॥ त्रीजे वरसें दोय हजार, चोथे वरसें तो वृद्धि अपार ॥ पांचमे वरसें जख्या कोठार, लख्युं बे ननने कही जूहार ॥ ८ ॥ एणें अवसरें ससरे शुभ परें, कुटुंब आपणुं तेडयुं घरें ॥ वहूरो चारने तेडी करी, दाणा पांच माग्या ते फरी ॥९॥ प्रथम वडी पांच दाणा देह, ससरो कहे नवि होये तेह ॥ सम देइने पूछे जिस्ये, ए न होय वहू जांखे तिस्यें ॥१०॥ शुं कीधुं कहे में नाखिया, दुःख लागुं ससरो खीजीया ॥ एहथी वडुं न लेउं नाम, नाखवा तणुं जला व्युं काम ॥ ११ ॥ वेगें तेडी बीजी वहू, माहारी थापण लावो सहु ॥ दाणा पांच आणीनें देह, कहे ससरो जूआ के तेह ॥ १२ ॥ स्वामी ते में खाधा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सही, तव ससरे तस नूंमी कही ॥ पहेलीथी ए रूडी घणुं, काम जलाव्युं खावा तणुं ॥ १३ ॥ त्रीजी वहू कने मागी व्रीहि, ठोडी गांठ दीधी ते सही ॥ रूडी सासरे जांखी तिस्ये, राखवा सरव जलाव्यो इस्यें ॥ १४ ॥ चोथी तव तेडी रोहिणी, माग्या दाणा वहूअर जणी ॥ वहूअर कहे इम नावे सोय, तो आवे गाडां सय दोय ॥ १५ ॥ गाडां मोकल्यां पीयर जणी, आण्या घर जिहां ससरो धणी ॥ सस रे ख्याति करी जलि वहू, वडी करी तस सोंप्यूं सहू ॥ १६ ॥ तुं उंघनिर्युक्तिमां जोय, एह कथा कहि तिहां किणे सोय ॥ जिन शिष्यने जांखे उपदेश, जुउं जावना तिहां मिलेश ॥१७॥ शेठ परें इहां गुरु होय, तिहां कुटुंब इहां संघ जोय ॥ जिम वहुउं तिम शि ष्यनो संच, पंच शालि ते वरतज पंच ॥ १८ ॥ जेणें वधाख्यां व्रत वली जेह, हुआ गीतारथ जगमां तेह ॥ जेणें राख्यां ते सूधा यति, गरढाने वांदो गुणमती ॥ १९ ॥ जेणें खाधां पांचे वरत वली, वेषधारी तस कहे केवली ॥ खावा माटें राख्यो वेश, नवि मान्यो तेणें हित उपदेश ॥ २० ॥ जे व्रत पांचे नाखी गया, तेह पतित नर दुःखीया

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

थया ॥ जिम ते उत्तिया पहेली वहू, नांखे घरनुं एटुं सहु ॥ २१ ॥ खाधावती सोंप्युं रांधणुं, त्रीजी रखियाने राखणुं ॥ चोथी रोहणीने घरनो नार, वधारतां आचारज सार ॥ २२ ॥ ए दृष्टांत सुणी शुन्न शिखी, धर्म वधारे सूधो रुषि ॥ लोढी वहूनी पेरें वली, तेह तणी मन श्रद्धा फली ॥ २३ ॥ करी परीक्षाने सोंप्यो नार, अन्यपुरुषनें एह प्रकार ॥ सांग णसुत हितशिक्षा कहे, सुणे सोय एक ध्यानें रहे॥२४॥

॥ ढाल ॥ गुरु गीतारथ मारग जोती ॥ ए देशी ॥

॥ एम वहू सुतनी परीक्षा करीने, सोंपे घरनो नारो ॥ सुत शिष्यने प्रशंसे मोढे, होये अत्तिमान अपारो हो ॥ नविका, सांनलजो हितशिक्षा ॥१॥ ए आंकणी ॥ श्रीदेवगुरुनी मुखें स्तुति कीजें, मित्र नाईनी पूंठे ॥ सेवकना मुख उपर कीजें, सुतनी न करे जूठे हो ॥ न० ॥ २ ॥ स्त्रीनी स्तुति करवी स्त्री आगें, जेम नर नगति करेय ॥ राउलमांहे जाय पिताजी, पुत्रने पूंठे लेय हो ॥ न० ॥ ३ ॥ देश विदेशनी वात सुणावे, तेणें सुत माह्यो थाय ॥ सकल विद्या सुतने शीखवजे, जेम ठेतख्यो नवि जाय हो ॥ न० ॥ ४ ॥ उचित सगानुं सवि साचवीयें, पगर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ण होय तव तेडे ॥ जूहार व्यवहार सन्मान साच वीयें, तेडे दूरथी नेडें हो ॥ ज० ॥ ५ ॥ आप सुखीने साजन दोहिलो, तो तस सुखीयो कीजें ॥ नहिं कर हीनपणुं आपणने, लाजें नाम ते लीजें हो ॥ ज० ॥ ६ ॥ लोकमांहे निंदा पण लहियें, सुण ध्वजनो दृष्टांतो ॥ देवविमानदंम उपर उंचो, बेसी त्यां नाचंतो हो ॥ ज० ॥ ७ ॥ कहे कविता कुंकी शुं कूदे, वंशे करे गया ॥ अन्य पुरुषने ऋद्धि देखाई, निज कुलना होये जाया हो ॥ ज० ॥ ७ ॥ इण दृष्टांतें समजो पुरुषो, आवो साजन कामें ॥ साजन सोय कह्यो जगमांहिं, आवे एटले गामें हो ॥ ज० ॥ए॥ दौर्जिन्द्य आकरे व्यसनें पडियो, शत्रुने संकटें पासें ॥ राजनुवनें समशाने पासें, साजन त्यां नवि नासे हो ॥ ज० ॥१०॥ इस्या जनने सुखीया कीजें, जाणे आप उद्धारो ॥ अरहट न्याय जिस्युं घन जाणे, खाली थतां नहिं वारो हो ॥ ज० ॥११॥ हुं उद्धार करुं जो एहनो, एहु करे मुऊ कामो ॥ सरखो काल न जाये कहेनो, जुउ पांमव हरि रामो हो ॥ ज० ॥ १२ ॥ कार्य करे पंच साजन पूठी, ऋषन कहे हितशिक्षा ॥ आंगुलीनो दृष्टांत न जाणे,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ते नर मागे जिका हो ॥ ज० ॥ १३ ॥ १६३१ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ शीख एक देऊं सुण वली, एक दिन कहे तर्जनी आंगुली ॥ हुं सघलामांहे हुं वडी, लिखित चित्र कामिक रूयडी ॥ १ ॥ मध्यम कहे हुं महोटी खरी, जे सघला मांहे उंची करी ॥ संकेत चाप टी वाउं तांत, मध्यें बेसुं हुं उंची पांत ॥ २ ॥ अनामिका कहे जूठुं एह, तुं लोको शिर टाकर देह ॥ नंदावर्त्त पूजाने काम, हुं आवुं शुभकारज ठाम ॥ ३ ॥ वास वारि बेहुश्मंतरु, बीजां काम घणां पण करुं ॥ कहे कनिष्ठा बेठी रहे, सर्व काम कांइ तुं नवि लहे ॥ ४ ॥ सूक्ष्म काममां मुऊने मान, करुं जाप खणुं हुं कान ॥ कष्टें लोही आवे काम, अनामिका बेठी रहे ठाम ॥ ५ ॥ तव बोली चारे आंगुली, श्याने वाद करो छो वली ॥ आपण चारे बहेन्यो सार, अंगूठो खीज्यो तेणि वार ॥६॥ जूंनी तमो मुऊ घरनी नार, पुरुष विना शूनो संसार ॥ नारी घणीयें न होये काज, पुरुष तणी सहु माने लाज ॥७॥ हुं अंगूठो नर अवतार, संघपतिने तिलक करनार ॥ तीर्थंकर मुऊ धावे सही, राज्याभिषे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क करुं गहगही ॥ ८ ॥ सन्नामांहे राख्युं में नीर, गौतम तणी वधारी खीर ॥ अंगूठे गुणतां नवकार, तेह मुक्ति पामे निरधार ॥ ए ॥ पशली कोलियो रज मूकवी, मुष्टि वालवी न होय तुम थकी ॥ शस्त्र गांठ कांटो काढवो, सघले कामें वडो हुंहवो ॥ १० ॥ चोशठ सहस जे अंतेउरी, वारांगना त्यां बमणी करी ॥ सघली भरत तणी किंकरी, अनेक नारी एक सरगें हरी ॥ ११ ॥ सहस हाथणीमां एकज करी, जुए पुरुषने सघली खरी ॥ एम दृष्टांत अनेरा जोय, अंगूठोज वडेरो होय ॥ १२ ॥ बोली तव चारे आंगुली, फोकट वाद करो शुं मली ॥ एक ले कोणें कांश्यें न थाय, पांचे पहोंचानी शोभाय ॥ १३ ॥ ते माटें नर जाजा मली, करे काम होय निश्चें वली ॥ सांगणसुत हितशिक्षा कहे, सुणे सोय उंघंतो रहे ॥ १४ ॥ सर्वगाथा ॥ १६४५ ॥

॥ ढाल ॥ एणी परें राज्य करंता रे ॥ ए देशी ॥

॥ राग गोडी ॥ तजी उंघ सुणो संत रे, हित शिक्षा कहुं ॥ उचित साचवो गुरुतणुं ए ॥ १ ॥ वंदन ते त्रण काल रे, भक्ति करे स्तवे ॥ कर्मकथा नित्य सांभले ए ॥ पडिक्कमणुं गुरु संगें रे, शिर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वहे आगना ॥ न करे निश्चें अवगणा ए ॥२॥ गुरुने दिये बहुमान रे, स्तुति परगट कहे ॥ ढांके मातुं बोलतो ए ॥ ३ ॥ मिथ्यात्वी नर कोय रे, करतो अवगणा ॥ वारे सर्व शक्तें करी ए ॥ ४ ॥ कुमारसंभव मांहि रे, त्यां पण एम कह्युं ॥ निंदकने वारे सही ए ॥५॥ एक दिन ईश्वर ध्यानें रे, बेठो वनें जई ॥ नारी कहे वर किहां गयो ए ॥ ६ ॥ वनमां चाली ताम रे, जोती वर तणे ॥ दीठो ध्यानें नर रह्यो ए ॥ ७ ॥ विकूरवियो वसंत रे, शंकर तव जूवे ॥ कुण चलावा आवियो ए ॥ ८ ॥ दीठी नारी ताम रे, राग थयो बहु ॥ पारवती पाठी वली ए ॥ ९ ॥ हृदय विचारे ईश रे, जोउं मुज उपरें ॥ राग किस्यो नारी तणो ए ॥ १० ॥ धर्युं बटुकनुं रूप रे, उमयाघर गयो ॥ बोले भूंडुं ईशनुं ए ॥११॥ सर्वगाथा ॥१६५६॥

॥ छप्पय ॥

॥ ईश न पूजो देव, हुवो भिल्लीनो रागी ॥ जोरु आगें नाचि, हुउ सो बडो अभागी ॥ अफिम उंर बछनाग, भंग बहु खावे भंगी ॥ जोगी कहावे आप, पूजावे लोककुं लिंगी ॥ काम जलाया जग कहे, त्रिया बिना नहिं एकलो, संघवी ऋषभ एम उच्चरे,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ईश देव नांहीं भलो ॥ १ ॥ सर्वगाथा ॥ १६५७ ॥

॥ ढाल ॥ तेहीज ॥

॥ वारे नारी ताम रे, लव नवि कीजीयें ॥ गाल न प्रभुनें दीजीयें ए ॥ १ ॥ वार्यो न रहे तेह रे, उमया उठंती ॥ जश्ने दासी मोकली ए ॥ २ ॥ एहने हांकी काढ रे, करतो अवगना ॥ शंकरनी निंदा करे ए ॥ ३ ॥ निंदकने होय पाप रे, तेहमां शुं कहेवुं ॥ पण सुणतां पातक सही ए ॥ ४ ॥ ए उमयानी वाणी रे, सुणि निवारीयें ॥ गुरुना अव गुण बोलतो ए ॥ ५ ॥ वारी न शके जोय रे, श्रव णे नवि सूणे ॥ छिद्र न जुए गुरुतणां ए ॥ ६ ॥ गुरु सुखें सुख होय रे, दुःखें दुःख लहे ॥ कहे ते करे गुरुनुं कह्युं ए ॥ ७ ॥ एम उचित गुरु सार रे, श्रावक जे करे ॥ सांगणसुत कहे ते तरे ए ॥ ८ ॥१६६५॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ तरे जीव संसारी तेह, शासनविरोधने टाले जेह ॥ साधु वडानुं प्रत्यनीकपणुं, करतो वारे तो पुण्य घणुं ॥ १ ॥ जेम सगरें कीधी बहु सार, पूर्व भवें हुंतो कुंभार ॥ मानव सुंदर शाठ हजार, यात्रा काज चाल्या तेणि वार ॥ २ ॥ चोर लूंटवा उठ्या

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिस्ये, सगर जीव ते धायो तिस्ये ॥ घणा पुरुषने पूठें लेह, तस्करशुं ते जइअ वढेह ॥ ३ ॥ जागा चोर गया उंसरी, सुखें जातरा संघें करी ॥ एम आगम गुरुनो प्रत्यनीक, वारे वेगें न गणे ठींक ॥ ४ ॥ राय जणी जो जावुं थाय, तो दश पुरुष मलीने जाय ॥ अण मिलतो जाये एकलो, तो कूटाये गाढो जलो ॥ ५ ॥ घणां रांक मली करे काम, जय पामे तस वाधे माम ॥ सुण दृष्टांत घणा तणखलां, मली बांधे गजयूथज जलां ॥ ६ ॥ संप विना सिद्धि क्यां नवि थाय, जारंरु पंखी सुणो कथाय ॥ उदर एकनें माथां दोय, युगल जीव तिहां कणे होय ॥ ७ ॥ बेहुने फलनी इछा हती, बेहुए चाले एकें चित्ति ॥ ज्यारें बेहु बेचिंता थाय, ततक्षण दोव मरीनें जा य ॥ ८ ॥ इण दृष्टांतें संपें सुखी, मरम प्रकाशे थाये दुःखी ॥ वाल्मिक उदर सर्पनी परें, मरे मरम प्रगट ते करे ॥ ए ॥ वसंत पुरें एक वाल्मिक राय, ज्यारें जल पीधुं एक दाय ॥ नाहानो अहि उदरें आवियो, मांहिंथकी वाधे ते जीयो ॥ १० ॥ पेट वध्युं तव राजा तणुं, अंगें वेदन वाधी घणुं ॥ जूपें अन्न न खाधुं जाय, दूध शाकरें शाता थाय ॥ ११ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाध्यो साप अने वेदना, नृप मरवा हूआ एक मना॥ नगरबाहेर गया तेणी वार, साथें राणी बहु परि वार ॥१२॥ निशासमय सूतो वनमांहि, निजराणी पासें ठे त्यांहिं ॥ रायवदन जव पहोलुं करे, तव मणिधर बाहिर नीसरे ॥१३॥ न्यग्रोध तले एक बीजो साप, मल्या एकठा बिहुये साप ॥ वाल्मिक उदर स र्पने कहे,कां तुं राय उदरमां रहे ॥१४॥ निकल बाहिर नृप थाये सुखी, पृथवीपतिने म कर दुःखी ॥ सर्प कहे नवि मूकुं ठार, शाकर दूध पामुं नित्य सार ॥ ॥ १५ ॥ त्यारें मर्म प्रकाशे साप, सद्गुरु मल्यो नथी तुऊ आप ॥ विषकोचलां जो तुऊने पाय, तो तुं मांहीथकोही जाय ॥ १६ ॥ उदर साप बोल्यो आरडी, तुऊने न मल्यो को गारुडी ॥ ऊनुं तेल बि लमांहे धरे, मरे तुंहि कढा करी करे ॥ १७ ॥मर्म प्रकाशे मांहो मांह, राणी जागे सुणती त्यांह ॥ वा हाणे उंषड बेहुनां करे, सर्पयुगल सहि क्षणमां मरे ॥ १८ ॥ नाठो राय तणो तिहां रोग, नृपति पूछे औषध योग ॥ राणी कहे मांमीने वात, सर्प दोयनो कर्यो निपात ॥ १९ ॥ राय कहे तुं चूकी आप, कां मार्यो उपगारी साप ॥ पण राणी नहिं ताहा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रो वांक, शास्त्रमांहि अछे इम आंक ॥ २० ॥ मर्म प्रकाशे मांहोमांहिं, तेहने जय नवि होये क्यांहि ॥ नाग तणी परें पामे मरण, राजा द्रव्य करे तस हरण ॥ २१ ॥ संपें वाधे सखरो रंग, आप वरगनो न तजे संग ॥ जो पोतें धन जाजुं होय, निर्धनने नवि ठंरु सोय ॥ २२ ॥ एक दिन चोखे धरी अजिमान, फोतरांने दीधुं अपमान ॥ श्या कामें आवो फोतरां, मुऊने मूकी जाउं परां ॥२३॥ तुम जाते मुऊ वाधे लाज, माथे लेइ चोडे वरराज॥ जिनवर आगल मुऊने धरे, गुरु आगल जइ गहूंली करे ॥ २४ ॥ शकुन जुवे मुऊ हाथें करी, बलि लेइ जाये थाले जरी ॥ सज्जन जमतां मूके थाल, तेणें फोतरां मुऊ संगति टाल ॥ २५ ॥ बोल्यां फोतरां सुण चोखाय, अमो करुं ताहारी रक्षाय ॥ अम थी अलगा थाश्यो जदा, घणां मूशलां खाशो तदा ॥२६॥ घरटीमांहे घालीने दले, चरुआमांहे चूले जइ बले ॥ काचा चावल बोले जलमांहि, अम मूके दुःख तुमने प्राहि ॥ २७ ॥ चोखा कहे शी करो ऊगाट, तुमो जाउं तुमारे वाट ॥ त्यारें फोतर्यां खीज्यां बहु, देइ शरापने चाल्यां सहु ॥ २८ ॥ नसं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तान जाउं तुम तणुं, तुम संतान म होजो जणुं ॥ वचन फोतरांनुं त्यां थाय, वाव्या नवि ऊगे चोखा य ॥ २९ ॥ इण दृष्टातें सुणजो सहु, संपें रहेतां सुख लहे बहु ॥ आप वरगने ठांमे जेह, चोखा परें कूटा ये तेह ॥ ३० ॥ कोइ एक समय जल परबत धरा, फाडे पाखे पत्थर आकरा ॥ को एक समय बहु तर णां मली, बांधे ठे जो जलने वली ॥ ३१ ॥ ए दृष्टांत ते हियडे धरो, श्रावक एकठां रहेवुं करो ॥ वर्गमांहिं वढो म म कोय, सज्जान उचित साचव वुं जोय ॥ ३२ ॥ उचित हवे अन्य दरिसण तणुं, कांइक वित्त आपे आपणुं ॥ भूपति माने वली जेह ने, विशेष थकी आपे तेहने ॥ ३३ ॥ किंचित् दा न तो देवुं खरे, नमस्कार तेहने नवि करे ॥ तेहनो पक्ष करे नहिं कदा, कहेतां अनुमोदन होय सदा ॥ ३४ ॥ गुण नवि बोले तस गहगही, घरे आवे तो आपे सही ॥ मीठुं बोले आसन देह, एम उचि त तेहनुं साचवेह ॥ ३५ ॥ करे चोलणा शिष्य उ च्चरे, सूधो श्रावक ए किम करे ॥ गुरु कहे ए ठे जलो उपाय, जैनधर्मने साहामो थाय ॥ ३६ ॥ एणे दृष्टांतें देवुं सही, वीर वात करीने कही ॥ सम

For Private and Personal Use Only

कितदृष्टिनुं ए लिंग, उचित उपरें राखे रंग ॥ ३७ ॥ चोमासें आलस परिहरे, अष्टप्रकारी पूजा करे ॥ नित्य नैवेद्य करे सुसार, विण नैवेद्य करे नहिं आहार ॥३७॥ चोमासे दीपक दिनशिरें, अष्ट मंगल देहेरामां करे ॥ चाले तो नित्य मुनिने देह, पोतें पण ते आहार करेह ॥ ३ए ॥ नहिं कर पर्वें दीये ते जला, वरषमांहि दिवस केटला ॥ श्री देव गुरुनी जक्तिज करी, पछें आहार लिये परवरी ॥ ४० ॥ चाले तो नित्य करे सनात, नहिं कर मासें वावरे हाथ ॥ एक सनात वरसें पण करे, ध्वजा चढावे ते नर तरे ॥ ४१ ॥ चाले तो नित्य पूजे प्रासाद, चोमासें म करो परमाद ॥ नहिं कर वरसें केटलीक वार, पूजी पामे जवनो पार ॥ ४२ ॥ वालाकूंची वस्तर धरे, चाले तो नित्य दीवो करे ॥ धूपादिक देहरे मूकीयें, धर्मठामें नर नवि चूकीयें ॥ ४३ ॥ नोकरवाली नें चरवला, पोशालें मूको ऊजला ॥ पाट पाटला पोतें करे, धर्मठामें आपंतां तरे ॥ ४४ ॥ प्रजावना संघवात्सल्य करे, केटलो एक काउस्सग्ग नित्य धरे ॥ तप सझाय करे पच्चरकाण, सचित्त तजे ते पंमित जाण ॥ ४५ ॥ धाणा जीरुं अजमो धान, राई

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूआ सचित्तनुं मान ॥ वरियाली खसखस फल पान, खारुं लूण तजे जो शान ॥ ४६ ॥ खारुं रातुं सैंधव जेह, संचलादिक अकीधां जेह ॥ माटी खडी वरणादिक जोय, सचित्त दातण नीलां होय ॥४७॥ गहूंअ पलाव्यो सचित्त संभाल, मग चणादिक केरी दाल ॥ मिष्ट होय ते नहिं आवती, सोइ न व होरे साचो यति ॥ ४८ ॥ लवणादिक पट देई क री, उकालतां अचित्त होय फरी ॥ वेलूयें शेक्यां अचित्तज हुवां, बाकी मिष्ट सहू जाणवां ॥ ४९ ॥ उंला उंबी ने वालोलिया, एह सचित्त म जरो कोलि या ॥ शेकी पापड शेकी फली, लवण विना सचि त्त ए वली ॥ ५० ॥ चिभडा प्रमुख वधार्यां जेह,म रियातां राईतां तेह ॥ मीठुं दीधुं ते पण मिष्ट, जे न लिये ते जननो इष्ट ॥ ५१ ॥ ऋषभ कहे हित शिक्षा सही, श्रावक जनने काजें कही ॥ वली एक कहुं उपदेश, सुखीया जननें इयो उपदेश ॥ ५२ ॥

॥ ढाल ॥ जिम सहकारें कोयल टहूके ॥

॥ ए देशी ॥

॥ नर परदेशें म जाशो कोइ, धर्म काम सीदाये दोइ॥ संदेह अर्थ तणो सही ए ॥ १ ॥ अहिं नवि सूजे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जास उपाय, ते नर जो परदेशें जाय ॥ घणो काल त्यां नवि रहे ए ॥२॥ चोमासें रहे एकज ठामें, श्रावक न जमे गामो गामें ॥ होये जीव विराधना ए ॥ ३ ॥ पोतें पण नर दोहिलो थाय, लागे वृष्टिने सबला वा य ॥ टाढें हाडां खड खडे ए ॥४॥ मारे फूकणी दोहि लो थाय, नदी उतरतो जाय तणाय ॥ चूके धनने ध र्मथी ए ॥५॥ तेणें कारण चालेवुं जेहनें, शेषो काल जलाव्यो तेहने ॥ चंद्र वार जोइ चालजे ॥ ६ ॥ गु रुवारें नर गमन न कीजें, दक्षिण दिशियें पाय न दीजें ॥ दिशाशूल होये तदा ए ॥ ७ ॥ सोम अने वलि शनिश्चर वार, पूरव पासें म करे विहार ॥ बुध मंगल उत्तर नहिं ए ॥८॥ हवे शुक्र ने आदित्य वार, पश्चिम पासें गमन असार ॥ काज न सीजे चिंतव्युं ए ॥ ए ॥ जरुर चालवुं होये जारें, एक उपाय करे नर त्यारें ॥ सुखड टीलुं आदित्यें ए ॥ १० ॥ सोमें दहिनुं तिलक बणावे, मंगलें मांटीनुं मन भावे ॥ बुधें टीलुं घृत तणुं ए ॥ ११ ॥ लोट तणुं टीलुं गुरुवारें, शुक्रें तेल तणुं करी त्यारें ॥ शनिवारें खलनुं करे ए ॥१२॥ चंद्र मंगल साहामो ते चाले, जिमणो मूक्यो बहु सुख आले ॥ भेद कहुं हवे तेहनो ए ॥१३॥ मेष

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिंह धन राशि विचारे, एणि राशि होये चंद्र जिवारें ॥ शशि मंगल पूरव दिशें ए ॥ १४ ॥ वृष राशि क न्या ने मक्कर, त्यारें दक्षिण दिशि ते शुभकर ॥ मंगल त्यांहिं मयंकनुं ए ॥ १५ ॥ मिथुन तुला त्रीजी कुंभ राशें, पश्चिम दिशें रहे चंद्र आवासें ॥ घर साहामुं कह्युं चालवुं ए ॥ १६ ॥ कर्कराशि वृश्चिक ने मीन, इण राशियें होये सुकुलीन ॥ शशिमंगल उत्तर दिशें ए ॥ १७ ॥ भावो तथा पूंठनो चंद्र, प्रवेशनो न करे आनंद ॥ गुण वाधे नर समजतां ए ॥ १८ ॥ शनि शुक्र अने सोम वार, साडा आठ पगलां भरी सार॥ गमन फले तस अति घणुं ए ॥ १९ ॥ आदित्यें प गलां अगीयार, बुधें आठ मंगल नव सार, साडा सात गुरुवासरें ए ॥ २० ॥ चोघडीयानो करे विचार, जो गिनी चक्र जुवे वली सार ॥ भोजन दहिं करी चाल वुं ए ॥ २१ ॥ श्रीदेव गुरु वंदीने चाले, कांइक मा गण जनने आले ॥ दानें दारिद्र कापीयें ए ॥२२॥ भोजन करे जोई शुभ गामो, प्रथम करे वली पुण्य नां कामो ॥ भोजन करे नर देई करी ए ॥ २३ ॥ याचक जन दोहिलांने आपे, भलो आहार शुभ स्थानकें थापे ॥ मुक्तिपंथ नर ते लहे ए ॥ २४ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दीन हीण जोगी संन्यासी, कडी कापडी ने मठवासी॥ अन्नदान तस दीजियें ए ॥२५॥ तेहनुं कुल न वि जुए जाति, तपविद्या धर्म पूछे म ज्ञाति ॥ यथा योग्य तस दीजियें ए ॥ २६ ॥ एणी पेरें पंथें जोजन कीजें, अणसमजे घर नवि सूईजें ॥ वणज करे व्यवहारनो ए ॥ २७ ॥ जला पुरुषने वस्त वहोरावे, धन उपार्जी वहेलो आवे ॥ रुषज कहे हित शीखडी ए ॥ २८ ॥ सर्वगाथा ॥ १७४५ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ नवि दीजें बहु इंद्रिय दुःख, अति लाली नवि कीजें सुख ॥ धर्म अर्थ काम जिहां नहिं, सोय काम म करजो कहीं ॥ १ ॥ विषमुं आसन पुरुषने बार, म कर कुचेष्टा सजा मझार ॥ घणो म लेजे माले जार, सांझें म करीश दहिनो आहार ॥ २ ॥ चंद्र सूर्यनुं ग्रहण म जोय, व्यंतर छल पाडे सहि कोय ॥ म म निरखे गर्जवंती सोय, बालक ग्रहणें घेलो होय ॥ ॥ ३ ॥ म म चांपे तुं पाये पाय, खणे जूमि अपलखण थाय ॥ पगें करी म म सोजो धूल, ए अपलखण महोटुं मूल ॥४॥ मैथुन जणवुं ने निद्राय, म कर सवारें पंकित राय ॥ संध्याकालें छंमे आहार,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चारे बोलनो कहुं विचार ॥ ५ ॥ आहार करंतां होये रोग, कूर गर्ज करंतां जोग ॥ निद्रा करतां ल खमी जाय, मरण दोष आपे सज्झाय ॥ ६ ॥ तेणें कारणें चारे परिहरे, सांऊ समय पडिक्कमणुं करे॥ धूवे पाप दिवसनां सहू, वली पुण्य पोतें होय बहु ॥ ७ ॥ गुरु समीपें आवी पडिक्कमे, घडी दोय शुन्न ध्यानें रमे ॥ मुद्रा त्रणनो जाणे भेद, आलस अंग थी करे निषेध ॥ ८ ॥ वली खमासण दीये पंचां ग, जो पडिक्कमणां साथें रंग ॥ रजोहरणो उज्जल मुहपत्ती, अलगी न करे ते मुहथी ॥ ए ॥ उज्ज्व ल थेपाडुंज अखंम, नहिं संधीयुं नहिं त्यां दंम ॥ करि पडिलेहण पडिक्कमणुं करे, अर्थ सूत्र तणा म न धरे ॥ १० ॥ सुणे स्तवन पोतें पण कहे, लागी लय तो पातक दहे ॥ सुणतां कहेतां होय कषाय, तो पातक बांधी घर जाय ॥ ११ ॥ शांति गुणी क रवो सप्राव, पोरसी सांजलीने घर जाय ॥ ए हितशि क्षा रुषजें कही, सांऊ समय पडिक्कमवुं सही ॥१२॥

॥ ढाल ॥ कुंगरियानी देशी ॥

॥ सांऊ समय रे दीवो करे, मांगलिक होये तस घरे रे ॥ दान स्नान देव पूजवा, नहिं ते निशि न

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रें रे ॥ सांऊ लमय रे दीवो करे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जोजन तेह रातें नहिं, जांगो खाटलो मूके रे ॥ मां कड जूयें मूंऊे जख्यो, रखे सुअतो डुंके रे ॥ सां० ॥ ॥ २ ॥ खाटलो वांशनो वर्जजे, वख्यो ज्यांहिं बहु मेल रे ॥ बख्यो अशख्यो ने काथे जख्यो, सूए ते नर घेल रे ॥ सां० ॥३॥ सबल त्रूख्यो ने ऊोलो थयो, नथि जिहां पांगेत रे ॥ पाथरया विण नवि पोढियें, सुणो पुरुष संकेत रे ॥ सां० ॥ ४ ॥ रूठियो राय कुजार जा, घरे अहि विषवेली रे ॥ जेह मांचे जख्या मांकडा, नर तेहने तुंमेल रे ॥ सां० ॥५॥ कनक चंदन तणो ढो लियो, वली शीशम साग रे ॥ हीरनी पाटें तेह जख्यो, पामे पुरुष महाजाग रे ॥ सां० ॥ ६ ॥ केश रूअ हीरें जरी, इसी गोदडीज्यांहिं रे ॥ अतलश लाल उंशीशडुं, सुवे पुण्यवंत त्यांहीं रे ॥ सां० ॥ ७ ॥ पाय तले रे तकियो धरे, जलां फूल बहु धूप रे ॥ रेशम गालम शूरियां, जूउं पुण्य सरूप रे ॥ सां० ॥ ८ ॥ मोरना पिछना वींजणा, चामर त्यांहिं ढलाय रे ॥ गाहा शलो क कहे सुंदरी, चांपे प्रेमशुं पाय रे ॥ सां० ॥ ए ॥ पोढ्या पुरुष ते मालिये, वाये चिहुंदिशि वाय रे ॥ शालु असारनां पहेरणां, शाकर दूध कढाय रे ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ सां० ॥ १० ॥ चंदन अंगें विलेपना, पासें शीतल नीर रे ॥ ऊष्णकालें सुख जोगवे, नारी पहेरण चीर रे ॥ सां० ॥ ११ ॥ कनक प्याला कूंपा काचना, आरीसा बहु थाल रे ॥ केशरपाक पण वावरे, आव्यो मेघनो काल रे ॥ सां० ॥ १२ ॥ शीदने पाय जोयें धरे, शय्या उपर वास रे ॥ पुण्यवंत खाट पाम्या इसी, पहोंचे आतमआश रे ॥ सां० ॥ १३ ॥ बांधिया रेशमी चंद्रवा, दीवा तस वली दोय रे ॥ देवनां सुख नर ए सही, सरगने कोण जोय रे ॥ सां० ॥ १४ ॥ अगरने तापणे तापता, चूआ तेल धूपेल रे ॥ रेशमी शिरखो उंढता, जूउं पुण्यना खेल रे ॥ सां० ॥ १५ ॥ सर्वगाथा ॥ १७७२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तेल तलाई तापवुं, तप्त आहार तंबोल ॥ तडको तरुणी शीतकाल, सात तत्ते कल्लोल ॥१॥ चंद चीर चंपक चरण, चंदन चतुर दुवार ॥ चतुरा स्त्री ग्रीषम ऋतें, सात चच्चा जग सार ॥ २ ॥ पय पीतां बर पादुका, पत्र पूर्ण घर पुराण ॥ पाक चोमासें पामियें, पुण्य तणुं एंधाण ॥ ३ ॥ सर्वगाथा ॥ १७७५ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ढाल ॥ चेतन चेत रे प्राणीया ॥ तथा ॥
॥ चाल चतुर चंद्राननी ॥ अथवा ॥ वाल ॥
॥ म वहेलेरा आवजो ॥ ए देशी ॥

॥ पांचे अंगुलें पूजीया, गुण जिन तणा गाय रे ॥ दान दीधां जेणें दीपतां, लहे जोग शय्याय रे॥सेजना जाव सहु सांजलो ॥१॥ ए आंकणी॥ जीव जाणी नवि राखीया, करे परनी निंदाय रे ॥ परघरें वाढता झांखरां, अणआणा उजायरे ॥ से० ॥ २ ॥ दत्त विना रे दुःखी या जमे, होंश सांजले थाय रे ॥ हाथनी खाटली दोहेली, इसी क्यांहिं शय्याय रे ॥ से० ॥ ३ ॥ सेज टाले घणा दोषने, कफ पित्त वली वाय रे ॥ अन्न पचे तन निर्मलुं, थाक ऊतरी जाय रे ॥ से० ॥ ४ ॥ घोडले पाय न दीजीयें, न सुश्यें पग हेठ रे ॥ नगन पणे सूए मूरखा, दरिद्री थाये नेठ रे ॥ से० ॥ ५ ॥ पूर्वदिशें शिर कीजियें, वली कीजें दक्षिण शीश रे ॥ विदिशि चारे जोई परिहरो, लहो परम जगीश रे ॥ ॥ से० ॥ ६ ॥ पूरव दिशें जो माथुं करे, विद्या तेह ने होय रे ॥ दक्षिण दिशि धन पामियें, चिंता प श्रिमें जोय रे ॥ से० ॥ ७ ॥ मृत्यु ने हाणि होय उत्तरें, न सुए नर कोय रे ॥ सेजनो जाव सहू

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुणे, सुइ जागतो सोय रे ॥ से० ॥ ८ ॥ पहोर पछें सेजें सूइयें, गणी नित्य नवकार रे ॥ पाप अढार वोसिरावियें, कीजें शरण ते चार रे ॥ से० ॥ ए ॥ चउद नियम संक्षेपियें, करो वली चौविहार रे ॥ पर्व तिथियें व्रत पालजे, मासें दिवस ते बार रे ॥ से० ॥ ॥ १० ॥ सबल कामी खुए देहने, होये पातक पोष रे ॥ जीव बेइंद्री घणा मरे, नव लाखनो दोष रे ॥ से० ॥ ११ ॥ नव लाख पंचेंद्री हणे, मानव ते असं ख्यात रे ॥ सोय संमूर्छिम जिन कह्या, जोगें तेहनो घात रे ॥ से० ॥ १२ ॥ तेणें घणो काम न सेवियें, सेवे ताम नीराग रे ॥ अल्प पातक होये तेहने, नहिं तीव्र राग रे ॥ से० ॥ १३ ॥ जावे अशुचि तिहां जावना, जीव उपनो अहिंय रे ॥ चर्मने हाड मंसें वस्यो, आहार रगतना तहिंय रे ॥ से० ॥१४॥ घोर अंधार वेदन घणी, पड्यो नरगमां जीव रे ॥ एम चिंती जजे जोगने, चूख्यो तेह सदीव रे ॥ से० ॥ १५ ॥ ब्रह्मचारी नर नीपजे, जंबू नेमी कुमार रे ॥ गज सुकुमारने जोगनुं, पाप नहींज लगार रे ॥ से० ॥ १६ ॥ रूषन्न दीये हित शीखडी, सरे पु रुषनुं काम रे ॥ उंघ लेई नर जागतो, जंपे जिनतणुं

For Private and Personal Use Only

नाम रे ॥ से० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा ॥ १७ए२ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ सूतो नर ऊठे वली तदा, ब्राह्म मुहूरत होये जदा ॥ पछे पुरुष पडिक्कमणुं करे, रयणीनुं पातक परिहरे ॥ १ ॥ नहिंतर काउस्सग्ग करजे सार, लोगस्स उज्जोयगरे ते चार ॥ लागुं पाप दुःस्वपनज तणुं, धूए सोय पुरुष आपणुं ॥ २ ॥ सुपन अनुजव्युं लेखे नहिं, सुण्युं सुजावें दीठुं तहिं ॥ रोगें दीठुं चिंत्युं हिए, छए सुपन लेखे नवि कहे ॥ ३ ॥ देव सुपन देखाडे जेह, पुण्यप्रजावें लाधुं तेह ॥ कर्मादिक पापें जे थयुं, ए त्रणेनुं फल पण कह्युं ॥ ४ ॥ सुपन दोष लागो होय जेह, पडिक्कमतां धोवाये तेह ॥ पच्चक्काण करे बहु परें, नोकारसीने मांडी धुरें ॥ ५ ॥ नोकारसीनां बे आगार, पोरसी साढ पोरसी षट सार ॥ पूरिमड्ढे आगार छे सात, गंठसहिए चारे विख्यात ॥ ६ ॥ नीवी करतां नव आगार, एकासणें आठज कहुं सार ॥ बेआसणें पण आगारज आठ, देखाडे शिवमंदिर वाट ॥ ७ ॥ आंबिलमां आठज आगार, पाणस्सना षट जाख्या सार ॥ उपवासें पांचज आगार, देशावगासिउं करता चार

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ८ ॥ तप करतो समजे आगार, ते नर वहेलो पामे पार ॥ जिम जिम वृद्धावस्था थाय, तेम तेम पातक ढांकतो जाय ॥ ए ॥ सर्वगाथा ॥ १७०१ ॥

॥ ढाल ॥ धन्याश्री रागमां ॥ ए देशी ॥

॥ ढंकी काम गुरुसंगें जाये, सुणवा मधुरी वाणी रे ॥ क्रोध मान माया ने लोजज, मूके जविजन प्राणी रे ॥ १ ॥ जीवघात अलि चोरी मूके, मैथुन परिग्रह जेह रे ॥ दिशिनां मान करे वली न जखे, अजदय बावीश तेह रे ॥ २ ॥ अनंतकाय बत्रीश ने मूके, चउद नियम संजारे रे ॥ पन्नरे कर्म्मादान न सेवे, लाधो जव नवि हारे रे ॥ ३ ॥ अनरथ दंम नां पाप निवारे, हास्य कुतूहल जेह रे ॥ शस्त्रादिक नापे नवि जूवे, सतीअ बलंती तेह रे ॥ ४ ॥ सामायि क व्रत सूधुं पाले, नित्य दिशिमान करेह रे ॥ आ ठम पांखी पोषध करवो, बीजे दिन पडिलेह रे ॥५॥ पात्र दान दीये नर नित्यें, ज्ञान लखावी दीजें रे ॥ समकितसार ते शुद्ध राखीजें, नित्य पच्चरकाण करी जें रे ॥ ६ ॥ सात क्षेत्र तणुं पोखेवुं, कीजें दीन उ द्धारो रे ॥ पर उपगारें वचन वदीजें, मुखें म बोल असारो रे ॥ ७ ॥ परनिंदा नर म करीश कहि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यें, राग द्वेष म म राखे रे ॥ आ श्रावकनो जव पाम्यो छो, जमतां जवने लाखें रे ॥ ८ ॥ श्री गुरुवाणी सुणी ए कीजें, खबर साधुनी लीजें रे ॥ औषध वस्तु अनेरी जोइयें, पूछी आणी दीजें रे ॥ ॥ ए ॥ आमंत्र ण कीजें मुनिवरने, आवो स्वामी घेर रे ॥ घृत खंरु पायस अन्नादिक, दीजें ते बहु पेर रे ॥ १० ॥ रुषज कहे हितशिक्षा सहुने, वृद्ध काल जब थाय रें ॥ मन चाले तो स्त्री धन छंमी, लेजे तुं दिरकाय रे ॥ ११ ॥ आराधना साची वली करजे, संलेषण तु लणाय रे ॥ अंतें तुं अणसण आराधे, जो जाणे निज आय रे ॥ १२ ॥ सर्वगाथा ॥ १८१३ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ आऊखुं जोवा खप करे, ते कूंमी लेइ नीरें फरे ॥ तेहमां सूर प्रतिबिंबे जिस्ये, पेखी परीक्षा करतो तिस्ये ॥ १ ॥ दक्षिण पासुं खांमुं जोय, तो षट म हिना आयु होय ॥ पश्चिम पासुं खांमुं तास, तो आऊखुं बे त्रण मास ॥ २ ॥ उत्तर पासुं खांमुं होय, तो आयु तस महिना दोय ॥ पूरव पासुं खांमुं जदा, एक मास आऊखुं तदा ॥३॥ छिद्र मध्य देखे नर को य, दश दाहाडानुं आऊखुं होय ॥ धूम सहित तरणी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दीसतो, एक दिवस आजखुं तस उतो ॥ ४ ॥ सुपनें नि मित्तें आयु विचार, प्रकृति फेर घटे जब अहार ॥ तव श्रावक अणसण आदरे, जनम मरण ते उंगां करे ॥ ५ ॥ उत्कृष्टो मुनिवर होय जास, पंमित मरण कह्युं उे तास ॥ सकाम मरण तेने पण कहे, मुगति पंथ तेणें नवि लहे ॥ ६ ॥ उत्कृष्टा नव सात के आठ, पठी लहे मुगतिनी वाट ॥ पंमित मरण जे को नर करे, जनम मरणनुं उःख नवि धरे ॥ ७ ॥ विरति श्रावक जिननुं शरण, तेहने कह्युं बाल पंमि त मरण ॥ व्रत विना श्रावक होय जेह, मरण बाल करे नर तेह ॥ ८ ॥ बाल मरण सुरने पण जोय, पंमित मरणें मुगतिज होय ॥ तेणें कारण चेतो नर सहु, रुषन कहे हितशिक्षा बहु ॥ ए ॥

॥ ढाल ॥ ऊलालानी देशी ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ कह्यो हित शिक्षानो रास, पहोती मनडा तणी आश ॥ मंदिर कमलानो वास, उत्सव होये बारे मास ॥१॥ सुणतां सुख बहु थाय, माने महोटा ए राय ॥ संप बहु मंदिरमांय, लहे हय गय वृषनो ने गाय ॥ २ ॥ पुत्र विनीत घरे बहु अ, शीलवंती नली वहूअ ॥ शकट घणां घरें न हु

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अ, कीरति करे जग सहुअ ॥ ३ ॥ ए हितशिक्षानो रास, सुणतां सबल उल्लास ॥ कर्यो खंजायतमां तास, जिहां बहु मानव वास ॥ ४ ॥ सर्व० ॥१७२६॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ घणां लोक वसे छे त्यांहिं, रास रच्यो त्रंबाव तीमांहिं ॥ सकल नगरने नगरी जोय, त्रंबावती ते अधिकी होय ॥ १ ॥ सकलदेश तणो शिणगार, गुर्जर देश जिहां पंमित सार ॥ गुर्जर देशमां नगर ज बहु, हारे खंजायत आगलें सहु ॥ २ ॥ जिहां विवेक विचार अपार, वसे लोक जिहां वरण अढार ॥ उलखीयें जिहां वर्णावर्ण, साधु पुरुषनां पूजे चरण ॥ ३ ॥ वसे लोक वारु धनवंत, पहेरे पटोलां नर गुणवंत ॥ कनक तणा कंदोरा जड्या, त्रण आंगुल ते पहोला घड्या ॥ ४ ॥ हीर तणो कंदोरो तले, कनक तणां मादलियां मले ॥ बांधी खल खलती हाथें खरी, सोवन सांकली गले उतरी ॥ ५ ॥ वडा व्यवहारी जिहां दातार, शालु पाघडी बांधे सार ॥ लांबी गज त्रांखुं पांत्रीश, बांधंतां हरखें करी शीश ॥ ६ ॥ जैरवनी एगताइ जांहि, जीणा जंगा पहेरे ते मांहिं ॥ ठठी रेशमी केडें

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जजी, नवगज लांबी सवा ते गजी ॥ ७ ॥ उपरें फा लियुं बांधे कोय, चार रूपैय्यानुं ते होय ॥ कोइ पठे डी कोइ पांजरी, त्रीश रूपैय्यानी ते खरी ॥ ८ ॥ प हेरी रेशमी जेह कजाय, एक शत रूपैय्ये ते थाय ॥ हाथे बहेरखा बहु मुद्रिका, आव्या नर जाणुं सरग थका ॥ ए ॥ पगे वाणहि अति सुकुमाल, श्याम वरण सबली ते जाल ॥ तेल पुष्प सुगंध सनान, अंगें विलेपन तिलक ने पान ॥ १० ॥ एहवा पुरुष वसे जेणें ठाय, स्त्रीनी शोजा कही न जाय ॥ रूपें रंजा बहु शणगार, नित्य उठी वंदे अणगार ॥११॥ इस्युं नगर ते त्रंबावती, सायर लहेर जिहां आवती ॥ वाहाण वखार तणा नहिं पार, हाटें लोक करे व्यापार ॥ १२ ॥ नगर कोटने त्रिपोलियो, माणक चोक बहु माणस मिल्यो ॥ वहोरे कूणी रोमी शेर, आले दोकडा तेहना तेर ॥ १३ ॥ जोगी लोक इस्या ज्यां वसे, दान वरे पाठा नवि खसे ॥ पंचाशी जिन नां प्रासाद, इंद्रपुरीशुं करतां वाद ॥ १४ ॥ पोषध शाला जिहां बहु ताल, करे वखाण त्यां रुषि वाचा ल॥ पुण्यवंत पोषध धरता त्यांहि, साहम्मीवत्सल होये प्राहि ॥ १५ ॥ ए नगरीनी उपमा घणी, जाहांगीर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पादशाह जेहनो धणी ॥ ते त्रंबावतीमांहे रास, जोडंतां मुऊ पहोती आश ॥१६॥ युगलसिद्धि अने ऋतु चंद,जुउं संवत्सर (१६७२) धरी आनंद ॥ माधव मास उज्जल पंचमी, गुरुवारें मति होये समी ॥१७॥ में गायो हितशिक्षा रास, ब्रह्म सुतायें पूरी आश ॥ श्री गुरु नामें अति आनंद, वंदूं विजयसेन सूरींद ॥१८॥

॥ ढाल ॥ आरतीनी देशीमां ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ वंदियें विजयसेनसूरि राय, नाम जपंतां सुख सबल थाय ॥ वंदियें विजयसेन सूरि राय ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ तप गच्छ नायक गुण नहिं पारो, उंसवंशें हुआ पुरुष अपारो ॥ वंदियें० ॥ २ ॥ शाह कमाकुल हंस गयंदो, उद्योतकार जिम दिनचंदो ॥ वंदियें० ॥ ३ ॥ कोडमदे सुत सिंह सरीखो, नविक लोको मुख गुरु तणुं निरखो ॥ वंदियें० ॥ ४ ॥ गुरु नामें मुऊ पहोती आशो, जोड्यो हितशिक्षानो रासो ॥ वंदियें० ॥ ५ ॥ प्रागवंशें संघवी महिराजो, तेह करतो जिनशासन काजो ॥ वंदियें० ॥ ६ ॥ संघपति तिलक धरावतो सार, शत्रुंजय पूजी करे सफल अवतार ॥ वंदियें० ॥ ७ ॥ समकित शुद्ध व्रत बारनो धारी, जिनवर पूज करे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नित्य सारी ॥ वंदियें० ॥ ८ ॥ दान दया धर्म उपर राग, तेह साधे नर मुक्तिनो मार्ग ॥ वंदियें० ॥९॥ महिराज तणो सुत अति अभिराम, संघवी सां गण तेहनुं नाम ॥ वंदियें० ॥ १० ॥ समकित सा र ने व्रत जस बार, पास पूजी करे सफल अवता र ॥ वंदियें० ॥ ११ ॥ संघवी सांगणनो सुत वारु, धर्म आराधतो शक्तिज सारु ॥ वंदियें० ॥ १२ ॥ कृषन कवि तस नाम कहावे, प्रह ऊठी गुण वी रना गावे ॥ वंदियें० ॥ १३ ॥ समज्यो शास्त्र त णाज विचारो, समकितशुं व्रत पालतो बारो ॥ वंदि यें० ॥ १४ ॥ प्रह उठी पडिक्कमणुं करतो, बे आस णुं व्रत ते अंगें धरतो ॥ वंदियें० ॥ १५ ॥ चउदे नियम संभारी संदेपुं, वीरवचन रसें अंग मुझ लेपुं ॥ वंदियें० ॥ १६ ॥ नित्य दश देरां जिनतणां जूहारुं, अक्षत मूकी निज आतम तारुं ॥ वंदियें० ॥ १७ ॥ आठम पाखी पोषधमांहिं, दिवस राति सझाय करुं त्यांहिं ॥ वंदियें० ॥ १८ ॥ वीर वचन सुणी मनमां जेटुं, प्रायें वनस्पति नवि चूटुं ॥ वंदि यें० ॥ १९ ॥ मृषा अदत्त प्राय नहिं पाप, शील पालुं मनवयकाय आप ॥ वंदियें० ॥ २० ॥ पाप परिग्रहें

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न मिलुं मांहि, दिशितणुं मान धरुं मनमांहि ॥ वं दियें० ॥ २१ ॥ अनदय बावीशने कर्मादान, प्रायें न जाये त्यां मुऊ ध्यान ॥ वंदियें० ॥ २२ ॥ अनरथ दंम टालुं हुं आप, शस्त्रादिकनां नहिं मुऊ पाप ॥ ॥ वंदियें० ॥ २३ ॥ सामायिक दिशिमान पण करियें, पौषध अतिथि संविनागव्रत धरीयें ॥ वंदियें० ॥२४॥ सात क्षेत्र पोखी पुण्य लेजं, जीवकाजें धन थोडुंक देजं ॥ वंदियें० ॥ २५ ॥ इम पालुं श्रावक आचारो, कहेतां लघुता होये अपारो ॥ वंदियें० ॥ २६ ॥ पण मुऊ मन तणो एह परिणाम, कोश्क सुणि करे आतम काम ॥ वंदियें० ॥ २७ ॥ पुण्यविनाग होये तिहां महारे, इस्युंअ रुषन कवि आप विचारे ॥ वंदि यें० ॥ २८ ॥ परउपकार काज कहिवात, धर्म करे ते होये सनाथ ॥ वंदियें० ॥ २९ ॥ रुषनदासें ए जोडियो रासो, संघ सकल तणी पहोती आशो ॥ वदियें० ॥ ३० ॥ सर्वगाथा ॥ १०७४ ॥

॥ इतिश्री हितशिक्षानो रास संपूर्ण ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

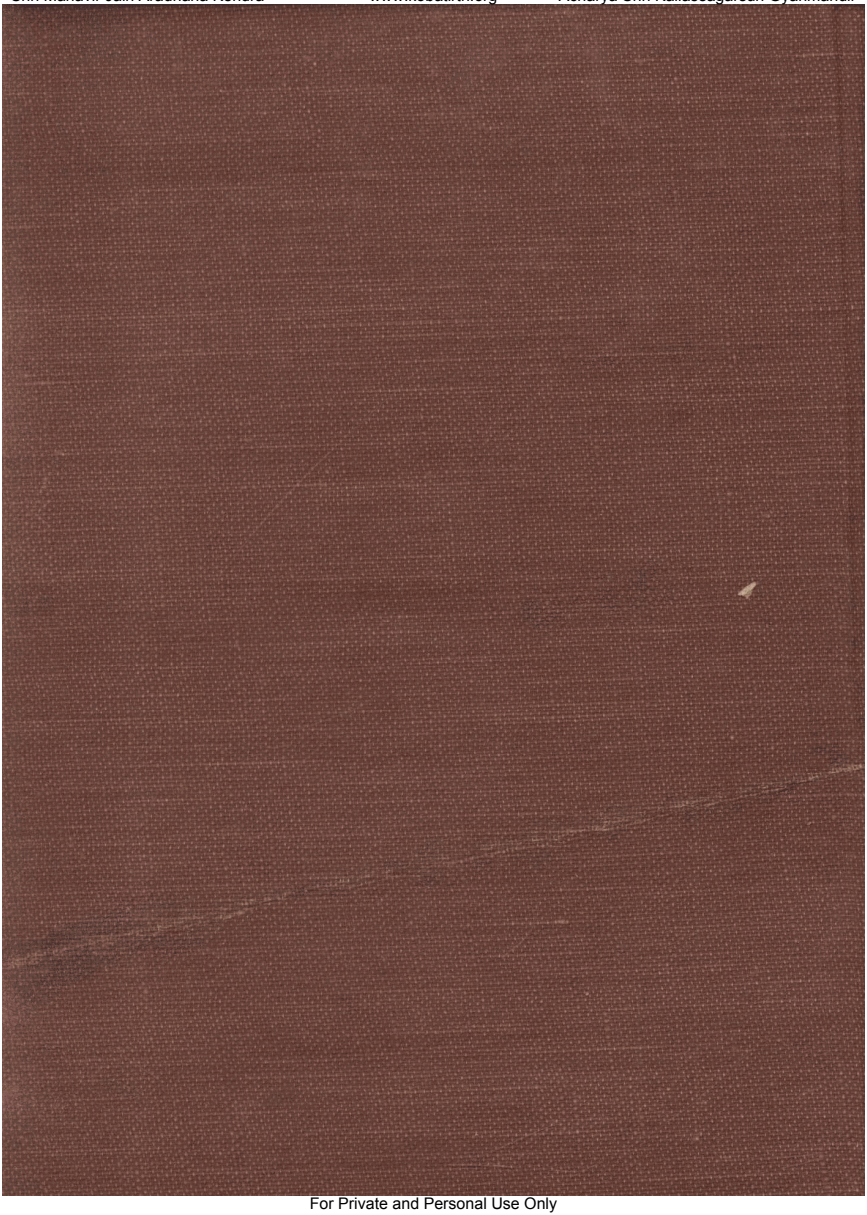

For Private and Personal Use Only